

प्रतापी सिरीज का बिल्कुल नया

नीलमगढ़ी का प्रेत

—एस० एन०

प्रकाशक

न व श क्ति प्र का श न

(शक्ति पाकेट बुक्स)

ए-११४, सुभद्रा कालोनी, सरायरोहोला

दिल्ली-७

मूल्य—३.०० प्रति कापी

मुद्रण—इवेन्ट्स प्रिन्टर्स शिव नगर, न्यू दिल्ली-५

NEELAMGARHI

ते
उसे
केवल
मिलने

श्री ०

इस बा
निकाल को
एम

एस.एन. कंवल

मिमगढ़ी का प्रेत



किस्टा
बता दी
बुलाने का
उपकी परेशा
से उदया था ।

गीली जावू पर आधारित उपन्यास)

नीलम गढ़ी का प्रेत

इस व

—एस० एन० कंवल

निकाल व

म

एक

इम्पाला तेजी से भागती जा रही थी...ड्राईविंग सीट पर परमेन्द्र की निगाहें सड़क पर थीं...। उस वक्त वह अपने रत्नाकर को मिलने जा रहा था...।

नाकर शहर के लखपति सेठ कर्मकर का बेटा था...। ने थोड़ी ही देर पहले परमेन्द्र को फोन किया था कि वह तुरन्त मिले...। परमेन्द्र ने उसे कहा था कि वह आध घंटा भीतर उसके पास पहुँच रहा है।

परमेन्द्र भी लखपति था, उसके पिता का देहान्त पिछले वर्ष हुआ था...माँ-बाप का इकलौता बेटा था...अतः वह उस अक्त स्वयं लाखों का मालिक था...।

घर में केवल माँ थी...सुख सम्पन्नता से जीवन बीत रहा था...। वह पिछले छः मास से बाहर था...लगभग एक सप्ताह पूर्व ही वह घर लौटा था—।

रत्नाकर उसके गहरे दोस्तों में था...और यही कारण था कि रात के लगभग दस बजे अपने मित्र का फोन पाकर अपनी विदेशी कार इम्पाला पर उससे मिलने के लिए चल पड़ा था...।

कार तीव्रगति से भागती चली जा रही थी...। रत्नाकर के माँ-बाप बाहर थे...घर में उसकी बहन लाली थी...किस्टा भी वहीं थी...उसने परमेन्द्र को पिछली सभी बातें बता दी थीं और यही कारण था कि चाहे रत्नाकर ने उसे बुलाने का कोई कारण नहीं बताया था फिर भी वह केवल अपनी परेशानी का आभास पाकर ही अपनी कार पर उसे मिलने से दिया था।

वह ड्राइविंग सीट पर बैठा था... उसकी नज़रें पर थीं, उसके हृदय में तूफान उमड़ रहा था... वह के प्रति चिन्ताग्रस्त था... कार जैसे हवा में उड़ती चला जा रही थी...

सहसा वह बुरी तरह चौंक उठा... उसे ऐसा आभास कि सड़क पर कोई युवती खड़ी है...

उसने तेज़ी से कार को रोका... युवती कार से कुछ दूरी पर सड़क के मध्य में खड़ी थी...

परमेन्द्र कार से नीचे उतरकर उस युवती की तरफ बढ़ा...

पर यह क्या...? वहां कोई नहीं था... सड़क बिल्कुल खाली पड़ी थी... परमेन्द्र को ऐसा महसूस हुआ जैसे वह मिर चकरा गया है।

‘क्या उसे कार चलाते हुए भपकी सी आ गई थी...?’

उसने सोचा पर ऐसी तो कोई बात नहीं थी... तब वह खूबसूरत औरत...? सचमुच ही उसका मस्तिष्क चकरा गया था।

वह ड्राइविंग सीट पर आ बैठा... अब उसके सामने सड़क खाली थी... उसने फिर से कार स्टार्ट की... उसकी विचारधारा परिवर्तित हो गई... वह कार चलाते हुए स्वयं को यह मनाने का प्रयत्न कर रहा था कि उसे नींद की भपकी आ गई थी...

कुछ ही देर में उसकी विचारधारा पुनः संतुलित हो गई और कार को उसने पूर्ववत् गति से चला दिया...

तारकील की सड़क हर इम्पाला हवा से होड़ लगाते हुए भागती चली जा रही थी...

ओह ! — वह बड़बड़ाया और फिर उसने पूरी ताकत से ब्रेक लगा दी... कार दो फुट तक घिसटती हुई जा कर रुक गई—।

उसने एक बार फिर से उसी युवती को सड़क के मध्य में खड़ा देखा था।

इस बार वह नीचे नहीं उतरा बल्कि द्वार से सिर बाहर निकालकर अपना सारा साहस बटोरता हुआ बोला, 'कौन हो तुम...?'

'साकोशा!'—युवती अपने स्थान पर खड़ी-खड़ी बोली... मैं साकोशा हूँ परमेन्द्र ।"

उसे पसीना आ गया...उसको ऐसा आभास हुआ जैसे उसके शरीर में कोई शीत लहर दौड़ गई है। उसके हृदय की धड़कन तेज हो गई...

उसने एक बार फिर से अपना साहस एकत्रित किया, तब बोला, 'तुम रास्ते में क्यों खड़ी हो?'

'कहाँ खड़ी हूँ...क्या तुम मुझे देख रहे हो...?'

'हाँ! —परमेन्द्र इतना ही कह सका।

'सच बताओ! तुम मुझे देख रहे हो क्या?'

परमेन्द्र कोई जवाब देने से पहले बुरी तरह हड़बड़ा गया...साकोशा गायब हो चुकी थी...। उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे उसका मस्तिष्क फट जाएगा—।

"परमेन्द्र!"—उसे बिल्कुल ही अपने निकट आवाज आई दी, 'सच बताओ! तुम मुझे देख रहे हो क्या?'

उसके हृदय की धड़कन चरमसीमा पर पहुँच गई...उसे ऐसा आभास हुआ जैसे कोई प्रेतात्मा उसके पीछे लग गई है...।

उसे अपने निकट साकोशा की आवाज आई थी किन्तु वह उसे दिखाई नहीं दी थी—कुछ ही क्षण पहले वह उसके देखते-देखते सड़क पर से गायब हो गई थी...

उसने आतंकित होकर एकदम एक्सीलेटर दबा दिया... कार भागने लगी—।

उसे अपना होश नहीं था...वह जल्द से जल्द उस सुनसान सड़क से निकल जाना चाहता था...

कार हवा से होड़ लगाती हुई भागती चली जा रही थी पर उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे साकोशा कार की सी गति से उसका पीछा कर रही थी...

लगभग पन्द्रह मिनट के पश्चात जब वह अपनी इम्पाला

पर रत्नाकर के बँगले पर पहुँचा तो उसका दिल बुरी तरह धड़क रहा था—।

रत्नाकर उसका इतजार कर रहा था... वह अपने दोस्त के पास पहुँचा तो उसके चेहरे पर हवाईयां उड़ रही थीं...

उसे अभी तक पूर्णतया विश्वास नहीं था कि उसने जीती जागती साकोशा को देखा है अथवा उसे भ्रम हुआ है।

निःसंदेह वह साकोशा के रहस्य को पूरी तरह समझ नहीं पाया था और वह उससे काफी भयभीत हो गया था किन्तु अब वह सुरक्षित स्थान पर पहुँच कर कुछ सोचने के योग्य हो गया था और उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसे भ्रम हुआ था...

पर भ्रम भी कैसे...?

उसने तो साकोश की आवाज़ सुनी थी... फिर भ्रम कि प्रकार...? सचमुच ही वह बहुत दुविधा में था।

रत्नाकर ने उसकी दशा देखी किन्तु गहराई तक नहीं पहुँच सका... और ऐसा होना सम्भव भी नहीं था... वह स्वयं अत्यंत ही दुविधाजनक स्थिति में था—।

परमेन्द्र ने स्वयं को सम्भाल लिया था... उसके बिना बदल ही क्या था...? उसे मालूम था कि कोई भी व्यक्ति उसकी बात पर विश्वास नहीं करेगा—।

दोनों दोस्त एक दूसरे के सामने बैठे थे... कुछ देर खामोशी रही, फिर परमेन्द्र बोला, 'क्या बात है रत्नाकर ! इतनी रात तुमने मुझे क्यों बुलवा भेजा है—।'।

जिस समय परमेन्द्र वहाँ पहुँचा था, उस समय यदि रत्नाकर स्वयं चिन्ताग्रस्त न होता तो निश्चित ही अपने दोस्त के परेशान चेहरे को देखकर उसके हृदय की भावनाओं को समझ जाता किन्तु उस समय तो वह स्वयं अपनी चिन्ताओं से घिरा था।

अपने मित्र के शब्द सुन कर वह बोला, 'मैं एक उलझन में फँस गया हूँ परमेन्द्र ! मैंने कोशिश की कि उस उलझाव को स्वयं सम्भाल लूँ पर मैं ऐसा नहीं कर सका और विवश होकर तुम्हें बुलवाना पड़ा।

परमेन्द्र को समझते देर नहीं लगी कि रत्नाकर के सामने कोई विकट संकट खड़ा है—।

उसने एक बार फिर से स्वयं को सम्भाला, तब पूछा, 'मुझे पूर्ण बात सुनाओ रत्नाकर ! मैं तुम्हारे लिए जो कुछ भी कर सकता हूँ उसके विषय में मुझे दुहराने की आवश्यकता नहीं है।

'मैं जानता हूँ परमेन्द्र और यही कारण है कि मैंने तुम्हें ही बुलवा भेजा है —।

रत्नाकर का उस पर विश्वास कर लेना ठीक ही था—। वह दोनों काफी समय तक इकट्ठे रहे थे...यहां तक कि जहां उनमें परिपक्व मैत्री थी, वहां वह कई बार बुराईयों के भी साथी रहे थे—।

'तुम अपनी उलझन की बात कहो रत्नाकर ! तुम्हें मुझ पर जो विश्वास है, उसे ठेस नहीं लगेगी —।'

रत्नाकर ने सिग्रेट केस उठाकर परमेन्द्र की ओर बढ़ाया फिर स्वयं भी एक सिग्रेट सुलगाया...

वह कुछ देर तक विचार मग्न स्थिति में रहा..., उसके पश्चात बोला—'मैं तुम्हें पिछली सारी घटनाएं बता चुका हूँ परमेन्द्र ! इस वक्त तक वही स्थिति है...। मैं और क्रिस्टा आपस में प्यार करते हैं। इस बात को लाली भी जानती है और वह हम दोनों की राह में कभी रुकावट नहीं बनी।'

परमेन्द्र को वह पहले ही सब कुछ बता चुका था...। रत्नाकर की छोटी बहन लाली ने क्रिस्टा के साथ क्लबों में जाना शुरू कर दिया है, इसकी जानकारी पाकर परमेन्द्र का हृदय मचला अवश्य था किन्तु उसने स्वयं पर नियंत्रण कर लिया था और अब वह फिर से लाली की बात चला रहा था ।

उसने कोई उत्तर नहीं दिया, रत्नाकर कहता चला गया, "कल मूर्फा वापस आ रही है ...।" वह अकेली आती, तब भी कोई विशेष बात नहीं थी। उसने अपने मेसेज में यह कहलवा भेजा है कि उसका भाई भी साथ आ रहा है ।"

रत्नाकर की पत्नी मूर्धा विदेशी थी और वह अपने मायके से वापस आ रही थी ।... इसमें ऐसी कोई बात नहीं थी जिससे रत्नाकर घबरा उठता, चाहे उसका भाई भी आ रहा था—L

उसे क्रिस्टा की मुहब्बत में बाधा का आभास हो, ऐसी बात भी परमेन्द्र की समझ नहीं आई...। रत्नाकर के ऐसे साधन थे जिससे वह क्रिस्टा को अलग किसी सुरक्षित स्थान पर रखवा सकता था और मूर्धा से चोरी छिपे वह क्रिस्टा के साथ मुलाकातें जारी रख सकता था ।

‘मूर्धा ने एक दिन तो वापस आना था रत्नाकर ! फिर इसमें कौन सी उलझन की बात है । मान लिया मूर्धा का भाई भी उसके साथ आ रहा है, तब भी ऐसी क्या बात है —।’

‘तुम उस उलझन को पूरी तरह समझ नहीं रहे परमेन्द्र ! तुम मेरी चिन्ता को पूरी तरह इस पत्र को पढ़ कर समझ सकोगे —।’

यह कहते हुए उसने एक पत्र और एक छोटा सा लिफाफा परमेन्द्र की ओर बढ़ा दिया ...।

परमेन्द्र ने सबसे पहले पत्र पढ़ना आरम्भ किया...।

पत्र मूर्धा का था...। उसने लिखा था कि उसका भाई नवलंग उसके साथ ही हिन्दुस्तान में एक विशेष कार्य के लिए आ रहा है —।

उसने वह विशेष कार्य भी लिख दिया था जिसके अनुसार नवलंग की पत्नी का देहान्त पिछले वर्ष हो गया...। वह रो धो कर चुप हो गया था परन्तु अब उसे ज्ञात हुआ कि उसकी पत्नी से बिल्कुल मिलती जुलती शक्ल की युवती हिन्दुस्तान में देखी गई है—।

‘यह कैसे हो सकता है...?’ इतना ही पढ़ कर परमेन्द्र की जबान से अनायास निकल गया—।

रत्नाकर ने कोई उत्तर नहीं दिया, परमेन्द्र ने आगे पत्र पढ़ने का क्रम बनाया...।

मूर्धा ने लिखा था कि उसका भाई नवलंग इस रहस्य को

जानने के लिए हिन्दुस्तान आ रहा है...।

इसके साथ ही मूर्था ने अपने पति को लिखा कि वह नवलंग की मृत पत्नी का फोटो उसे भेज रही है, अगर उनके पहुँचने से पहले उसका कुछ पता चल सके तो ठीक रहेगा।

परमेन्द्र ने उत्सुकता से छोटा लिफाफा खोल कर फोटो निकाला और उस पर निगाह पड़ते ही उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे पृथ्वी चक्कर लगा गई है...। उसका सारा शरीर पसीने से तर हो गया और उसके हृदय की धड़कन चरम सीमा पर पहुँच गई...।

‘साकोशा’— अपने मन ही मन में कहा...।

हां ! परमेन्द्र के हाथ का चित्र शतप्रतिशत उस युवती से मिलता था जिसे वह वहां पहुँचने से पहले रहस्यमय ढंग से नज़र आ कर गायब हो गई थी—।

वह कुछ देर तक बुत्त सा बना उस फोटो को देखता रहा...तभी उसे रत्नाकर की आवाज़ सुनाई दी..., ‘तुम किस सोच में पड़ गए हो परमेन्द्र !’

उसे अब भी यही विश्वास था कि रत्नाकर उसकी बात पर भरोसा नहीं करेगा—। फिर वह अपनी ज़बान से रहस्यमय घटना की चर्चा करके कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहता था।

‘कुछ नहीं रत्नाकर!’—उसने स्वयं पर नियंत्रण करते हुए कहा, ‘सवाल यह है कि इसके लिए तुम इतने परेशान क्यों हो। नवलंग अपनी बीवी की शकल से मिलती जुलती औरत को ढूँढना चाहता है तो तुम्हें क्या चिन्ता है।’

रत्नाकर ने दूसरी सिग्रेट सुलगाई, कुछ देर तक सोचना रहा, फिर बोला, “पहली बात तो यह है कि मूर्था का कोई भाई नहीं है और मैं तुम्हें बता चुका हूँ कि मूर्था के क्रेक्टर के बारे में मैंने कुछ गलत बातें सुनी है—। नवलंग कौन है, मैं नहीं जानता...।”

‘इस परेशानी का हल तो जल्द निकल आएगा रत्नाकर ! मूर्था और नवलंग को आने दो...जो कुछ भी होगा, सम्भाल

लिया जाएगा । तुम तो वैसे भी उसे तलाक देने के चक्कर में हो ।’

‘असल उलझन तो इस से कहीं ज्यादा बढ़ कर है,’ वह चिन्तित स्वर में बोला—“कल रात के लगभग दस बजे मेरे कमरे की घंटी टनटना उठी....”

वह कुछ देर तक खामोश रहा...परमेन्द्र ध्यान से सुनता रहा..., रत्नाकर कहता गया—‘मैं बाहर निकला, तो बिल्कुल इसी शकल की एक नौजवान औरत खड़ी थी....’

परमेन्द्र का मन धड़कने लगा—। रत्नाकर का उस ओर ध्यान नहीं था..., वह अपने प्रवाह में बहता चला गया—‘मैंने उसके आगमन का कारण पूछा—।’

‘तब क्या हुआ...??’

“उसने कहा कि वह क्रिस्टा से मिलना चाहती है....”

“तब तुमने उसे मिलवा दिया ।”

“नहीं । मैंने उसे कहा कि वह सो रही है । तब उसने मिलने का हठ किया, मैं भी अड़ गया.... फिर...? फिर...”

“फिर क्या रत्नाकर !”

“फिर वह मेरे देखते देखते गायब हो गई ?”

“नहीं—S!”—परमेन्द्र उछल पड़ा ।

“मैं ठीक कह रहा हूँ परमेन्द्र ! मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ... अगर मैं उसे केवल देखता तो सम्भूता कि शायद भ्रम हुआ है पर मैंने तो उसकी आवाज सुनी थी, उससे बात चीत की थी...तब भ्रम का कोई सवाल नहीं था ।

‘तुमने यह बात मुझे दिन को क्यों नहीं बताई...? हम शाम को दो घंटे इकट्ठे रहे हैं—’

“तब तुम क्या विश्वास कर लेते ?”

रत्नाकर ठीक कह रहा था.... वास्तविकता तो यह थी कि अगर उसे रास्ते में इसी शकल की युवती से रहस्यमय साक्षात्कार न होता तो सम्भवतः वह उस समय भी ऐसी विचित्र घटना पर विश्वास न होता ।

तभी उसे एक अन्य ध्यान आया, उसने कहा, ‘क्या तुमने

उस औरत से नाम भी पूछा था—।”

“हां। उसने अपना नाम साकोशा बताया था—।”

“साकोशा?—उसके कण्ठ से मद्धिमसी चीख निकल गई—।

भले ही वह फिर से आंतकित हो गया था किन्तु फिर भी उसे एक सहारा सा महसूस होने लगा—। आखिर साकोशा का टकराव उसके दोस्त से भी हुआ था। वे दोनों मिल कर बड़ी से बड़ी बला का सामना भी कर सकते थे।

ऐसा आश्रय मिलने के बावजूद वह अपने आप पर पूरी तरह संयम रखने में समर्थ नहीं हो सका।

‘तुम क्यों परेशान हो गए परमेन्द्र।’

उसने सिग्रेट निकाला... फिर बोला, ‘मैं तुम्हारी बात पर शायद यकीन न करता रत्नाकर! पर मैं जब तुम्हारे पास आ रहा था... तब रास्ते में मुझ से भी साकोशा का रहस्यमय व्यक्तित्व टकराया था—।

“क्या कह रह रहे हो तुम—!”

परमेन्द्र ने सिग्रेट सुलगाया... फिर अपने आपको नियंत्रित करके गम्भीर स्वर में रहस्यमय घटना सुनाने लगा—।

ठीक उस वक्त...

स्लापिंग रूम में क्रिस्टा और लाली बातें कर रही थीं... विषय चल रहा था मूर्धा और नवलंग के आगमन का...

रत्नाकर को मूर्धा का पत्र रात के लगभग नौ बजे मिला था, जब वह दिन भर बाहर रहने के पश्चात घर लौटा था किन्तु लाली ने वह पत्र पहले ही पढ़ लिया था और उसमें पड़ी हुई नवलंग की मृत पत्नी का फोटो भी देख लिया था... इतना ही नहीं बल्कि क्रिस्टा को भी दिखा दिया था।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह लिफाफा रत्नाकर के नाम का था पर लाली उसे खोलने का लोभ सवरण न रख सकी और परिणाम स्वरूप उसे एक ऐसा रहस्य पता चल गया था जिसकी जानकारी से उन दोनों का चिंतित हो जाना स्वाभाविक था।

क्रिस्टा कह रही थी, ‘निश्चित ही मूर्धा को रत्नाकर और

मेरे सम्बन्ध का पता चल गया होगा और वह नवलंग को साथ लेकर हम से इन्तकाम लेने के लिए आ रही होगी ।”

“मान लिया जाए पर सवाल यह है कि नवलंग की मृत पत्नी की क्या कहानी है—। मूर्था ने लिखा है कि मरने के बाद वह हिन्दुस्तान में देखी गई है ।’

“यह सब बकवास है लाली ! वह किसी बहाने से आएगा जिससे काफी दिनों तक यहीं रह रहे—।”

“तुम देख लेना कि इस मामले में रत्नाकर भैया भी कम नहीं हैं । अब तो उसका पक्का दोस्त परमेन्द्र आ गया है—। दोनों मिल कर तो मौत के साथ भी टकरा सकते हैं ।’

“तुम्हारा मतलब है कि परमेन्द्र काफी बहादुर जवान है—।”

लाली की आंखों की चमक में तेजी आ गई, बोली, ‘मतलब तो यही है, वैसे तुम उसे देखोगी तो देखती रह जाओगी—।’

क्रिस्टा ने ध्यान से लाली को देखा...उसके शब्दों से हार्दिक भावनाओं का पता चलाना कठिन नहीं था । उसने परमेन्द्र को पहले देखा हुआ था । एक बार किसी क्लब में रत्नाकर ने उसका परिचय अपने दोस्त से करवाया था ।

‘गई काम से ।’ क्रिस्टा के अधरों पर मुस्कराहट बिखर गई ।

लाली भी मुस्कराई...दोनों की आंखें चार हुईं और उसने आंख दबाकर शरारत कर दी...

क्रिस्टा उसे देखती रह गई...। कई दिन पहले रत्नाकर के प्रस्ताव से क्रिस्टा उसकी बहन के पास आकर रहने लगी थी ।

रत्नाकर के पिता सेठ कर्माकर के कार्यालय में क्रिस्टा उनकी प्राईवेट सेक्रेट्री थी...

पति पत्नी विदेश गए तो रत्नाकर और उसकी बहन लाली ही घर में रह गए...

रत्नाकर ने क्रिस्टा के सामने प्रस्ताव रखा कि वह उसके माता पिता की अनुपस्थिति में उन्हीं के घर पर आकर रहे

जिससे लाली अकेलापन महसूस न करे ।

क्रिस्टा अपने बाँस के बेटे के हृदय की भावनाओं को जानती थी कि वह उस पर आसक्त है किन्तु इसके बावजूद उसे विश्वास था कि अपने पापा के भय से उससे जबरदस्ती नहीं कर सकता ।

उसने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया तो एक ही रात में वह और लाली आपस में बहुत हद तक खुल गईं ।

लाली उसे रंगीनियों का साथी बनाना चाहती थी, क्रिस्टा को इसमें आपत्ति नहीं हुई और वह क्लबों में जाने लगी... परिणाम स्वरूप वह आपस में बहुत ही ज्यादा खुल खेली थीं...

ऐसी स्थिति में यदि क्रिस्टा को अपनी निकटतम सखी के नये रहस्य का पता चला तो उनमें अपने सारे दुःख भूल कर चंचलता आ जाना स्वाभाविक ही था ।

लाली ने शरारत की थी और क्रिस्टा भी कम नहीं थी... वह उसी प्रकार से चंचलता का प्रदर्शन करना चाहती थी कि तभी लाली एकदम उठ खड़ी हुई ।

“क्या है...?”

“परमेन्द्र बाहर जा रहा है...,” वह खिड़की के एक खुले पट में से देखते हुए बोली, ‘तुम रत्नाकर को सम्भालना क्रिस्टा !’

क्रिस्टा मुस्करा पड़ी...लाली ने कुछ ही देर पहले खिड़की का वह पट खोला था । उसे अब मालूम हुआ कि लाली के परमेन्द्र से पहले से सम्बन्ध चले आ रहे हैं ।

लाली बाहर जाने लगी तो क्रिस्टा बोल पड़ी, ‘अरी सुनो तो ! परमेन्द्र के साथ रत्नाकर भी है...’

‘वह उसे मेनगेट पर छोड़ देगा—। मैं उसे रास्ते में मिलूंगी ।’

लाली का अनुमान सही था...रत्नाकर ने उसे कार तक ही पहुँचाया ।

लाली दूसरे द्वार से निकल कर तनिक दूरी पर राह में खड़ी उसका इन्तजार करने लगी ।

दोनों दोस्त लगभग दस मिनट तक कार के पास खड़े ही बातचीत करते रहे...। दोनों पर भय का साया तो था किन्तु फिर भी एक दूसरे के आश्रय के विश्वास से वे दोनों आश्वस्त भी थे ।

“अच्छा रत्नाकर !” —परमेन्द्र अपनी कार की ड्राई-विंग सीट पर बैठा था, रत्नाकर बाहर खड़ा था, वह उसके हाथ को अपने हाथ से तनिक दबाता हुआ बोला, ‘मैं चलता हूँ...। घबराना नहीं, हम दोनों मिल कर रहे तो मौत भी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती ।’

“तुम ठीक कह रहे हो परमेन्द्र !”

उसने एक्सीलेटर दबा दिया...रत्नाकर पीछे हट गया । परमेन्द्र ने कार स्टार्ट तो कर दी किन्तु वह अपना साहस बनाए नहीं रख सका ।

उसके सामने सुनसान सड़क थी और उसे साकोशा की याद आ गई थी...उसे हृदय की धड़कन तेज़ हो गई थी—।

उसने दो चार गज की दूरी पर कार रोक ली और स्वयं को सम्भालने का प्रयास करने लगा...।

कायर ! —उसने अपने आपको गाली दी...।

उसने अपना साहस बटोर कर पुनः कार स्टार्ट कर दी...। कुछ ही दूर में कार तीव्रगति पर भागने लगी...।

“ओह !” —वह बुरी तरह घबरा गया...उसने देखा कि सड़क के किनारे पर खड़ी एक युवती उसे रुकने का संकेत कर रही है—।

वह सचमुच ही बुरी तरह हड़बड़ा गया...उसे ऐसा लगा कि एक बार फिर से साकोशा ने उसका रास्ता रोक लिया है ।

उसने परिणाम की चिन्ता किए बिना पूरी ताकत से एक्सीलेटर दबा दिया...कार हवा की भांति उड़ चली...।

“परमेन्द्र !” उसके इन्तजार में खड़ी लाली चिल्ला उठी किन्तु उसकी आवाज कार की घरघराहट में ही खोकर रह गई ।

‘ओह गाड !’ लाली निराशा से भागती हुई कार को

देखती हुई बड़बड़ाई ।

वह क्या जानती थी कि परमेन्द्र किस चक्कर में है ।

सचमुच ही तो परमेन्द्र बुरी तरह आतंकित हो चुका था अन्यथा वह लाली को ही साकोशा समझ कर अपनी कार को अतितीव्र गति से उसके पास ही से क्यों उड़ा कर ले जाता ।

लाली कुछ देर तक दूर होती हुई कार को भागती हुई देखती रही, फिर अपनी भावनाओं से दबी निराश कदमों से लौट पड़ी...

इधर नई घटना घटी...

परमेन्द्र की कार स्टार्ट हुई तो रत्नाकर को आतंक ने घेर लिया । उसका हृदय बुरी तरह धड़कने लगा ।

वह इस तरह द्रुतगति से अपने कमरे की तरफ भागा जैसे कोई बला उसके पीछे भागी आ रही है ।

वह तेजी से कमरे में दाखिल हुआ और फिर वह बुरी तरह चौंक उठा...

“साकोशा !” वह बड़बड़ा कर पीछे हटा... उसने अपने कमरे में एक महिला को पीठ किए खड़ा देखा था ।

वह हड़बड़ा कर पीछे हटा तो द्वार के साथ टकरा गया... एक जोरदार आवाज़ पैदा हुई... फिर भी उसने कमरे की ओर नहीं देखा और बाहर की तरफ भागा...

“रत्नाकर !” उसे कमरे में से आवाज़ आई ।

“ओह !”—वह आवाज़ पहचान गया... उसे क्रिस्टा पुकार रही थी... उसने पलट कर देखा...

“ओह !” उसे अपनी गलती का एहसास हुआ ।

निःसन्देह उसे भ्रम हुआ था... जब वह कमरे में दाखिल हुआ तो क्रिस्टा पीठ किए कद आदम शीशे के सामने खड़ी थी किन्तु उसने आतंकित होकर भ्रम में क्रिस्टा को ही साकोशा समझा था ।”

“रत्नाकर !”—क्रिस्टा उसके निकट आ गई..., “बात क्या है ? तुम परेशान क्यों हो गए ।

रत्नाकर ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया बल्कि निमिष

दृष्टि से देखने लगा ।

“तुम बोलते क्यों नहीं रत्नाकर !” उसने बात बनाई, “लाली सो गई थी...मैंने सोचा कि तुम्हारे साथ कुछ देर तक बातचीत कर लूँ ।”

“क्रिस्टा...!” उसने अपने बाजू फैलाए और फिर दूसरे क्षण ही उसका भरपूर शरीर रत्नाकर के आलिगन में था ।

क्रिस्टा के कल्पना पट पर लाली और परमेन्द्र के युवा शरीर उभरे हुए थे ।

लाली उसे कह गई थी कि वह परमेन्द्र को मिलने जा रही है, अतः वह रत्नाकर को सम्भाले ।

रत्नाकर को सम्भालने का अभिप्राय क्या था...? वह भली प्रकार समझ रही थी...

लाली बाहर चली गई तो क्रिस्टा रत्नाकर के कमरे में आ गई...और परिणामस्वरूप अब उसका भरपूर शरीर अपने महबूब के आलिगन में था ।

जिन दिनों रत्नाकर के प्रस्ताव पर वह लाली के साथ रहने के लिए आई थी तब वह उसे बिल्कुल प्यार नहीं करती थी...बाद में लाली से खुल खेली तो उसे पता चला कि रत्नाकर आवारा औरतों से मिलने के लिए रात को बाहर जाया करता है ।

तब लाली ने उसे अपनी मुश्किल का वास्ता देकर कहा कि वह उसके भाई के भविष्य को बचाने के लिए प्यार का नाटक रचाए ताकि वह अपने बंगले की चारदीवारी तक सीमित रह सके ।

काम काफी मुश्किल था...उसने उत्तरदायित्व लेने में आनाकानी की पर अन्त में उसे मानना ही पड़ा...वैसे भी काले जादू के प्रभाव में आने की विवशता ने उसे अभिनय कला में निपुण बना दिया था ।

वह कई दिन तक रत्नाकर के साथ प्यार का नाट्य रचाती रही और अन्त में एक समय वह भी आया जब वह स्वयं उसकी ओर आकृष्ट हो गई...कृत्रिमता ने वास्तविकता का बाना पहन

लिया ।

उसके प्यार में तपण आई तो रत्नाकर अधिक उत्तेजित हो गया और एक रात दोनों आलिंगन में क्या बंधे कि नियंत्रण के सभी बांध टूट गए... क्रिस्टा अपने यौवन पर संयम नहीं रख सकी और कामुकता अपना सफल वार कर गई ।

लाली इस वास्तविकता से परिचित थी ।

उसके पश्चात परिस्थितियों में परिवर्तन आया... किन्तु क्रिस्टा का विश्वास नहीं टला ।

रत्नाकर ने उसे वचन दिया था कि वह अपनी पत्नी मूर्था को तलाक देकर उसके साथ विवाह कर लेगा और वह इसी विश्वास के आधार पर अवसर मिलने पर रत्नाकर को अपना शरीर सौंप देती ।

आज भी उसे ऐसा ही अवसर मिला था—लाली परमेन्द्र को मिलने चली गई थी ।

स्पष्ट था कि लाली और परमेन्द्र के सम्बन्ध पहले से ही थे और फिर वह क्रिस्टा को कह गई थी कि रत्नाकर को सम्भाले ।

इससे साफ प्रकट होता था कि लाली काफी देर के पश्चात लौटेगी और जब तक न लौटे, तब तक क्रिस्टा रत्नाकर को अपने जाल में जकड़े रखे ।

क्रिस्टा का यौवन भटक गया था—उसे लाली से कोई संकोच नहीं था—उसके अतिरिक्त रत्नाकर घर में अकेला था, उसने स्वर्णविसर को गंवाना उचित नहीं समझा और रत्नाकर के कमरे में चली आई ।

जिस वक्त रत्नाकर परमेन्द्र को विदा करके अपने कमरे में आया तो उसके मस्तिष्क पर साकोशा का रहस्यमय रूप अंकित था—उसने अपने कमरे में किसी युवती को पीठ किए खड़ा देखा तो भ्रम में डर कर बाहर की ओर भागा—वह द्वार के साथ टकराया । क्रिस्टा ने पलट कर उसे पुकारा और तब दोनों आलिंगित हो गए—क्रिस्टा को यह पूछने का ध्यान भी नहीं रहा कि वह भयभीत होकर क्यों भागा था !

वह जानबूझ कर कद आदम दर्पण के सामने खड़ी थी, तब प्रवेश द्वार की ओर उसकी पीठ थी।

उसकी इच्छा थी कि रत्नाकर कमरे में प्रविष्ट होकर उसे पीछे से अपने आलिंगन में ले ले और तब वह पलट पड़े—दो जवान वक्ष एक दूसरे में समा जाएं।

उसने दर्पण में रत्नाकर को प्रविष्ट होते देखा... उसके शरीर की आग भड़क उठी, किन्तु उसी वक्त उसने रत्नाकर को भयभीत होकर बाहर की ओर जाते हुए देखा तो उसने पलटकर बुकारा...

...फिर दोनों प्रगाढ़ आलिंगन में बंध गए...। रत्नाकर का शरीर तब भी भय से कांप रहा था... अतः उसे द्वार बन्द करने का होश भी नहीं रहा...

क्रिस्टा को इस वास्तविकता का परिचय नहीं था—। वह भी जानती थी कि द्वार खुला था—किन्तु उसके विश्वास के अनुसार घर में कोई नहीं था... लाली तो परमेन्द्र से मिलने गई थी, अतः उसने आलिंगन का जाल नहीं तोड़ा...

'क्रिस्टा ! मेरी जिन्दगी—!!' रत्नाकर बड़बड़ाया, तुम्हें मुझसे कोई नहीं छीन सकता... कोई भी नहीं—।

रत्नाकर !' मेरे महबूब !!—उसका भावुक स्वर उभरा...

और तभी...

क्रिस्टा दर्दनाक आवाज़ में चीख पड़ी... रत्नाकर के सारे शरीर में शीत लहर दौड़ गई...

दोनों आतंकित होकर अलग हो गए...

क्या है क्रिस्टा ?—रत्नाकर की जवान से अत्यन्त ही कठिनाई से स्वर निकला।

'रत्नाकर !'—क्रिस्टा का चेहरा सफेद हो गया था, 'मैंने कमरे में एक औरत को दाखिल होते देखा था... रह बिल्कुल नंगी थी...'।

'नहीं क्रिस्टा ! नहीं !!'

तभी लाली कमरे में दाखिल हुई—वह निराश होकर

स्लीपिंग रूम में बैठी थी कि उसे क्रिस्टा की चीख सुनाई दी...और वह तेजी से वहाँ पहुँच गई—।

क्रिस्टा ने लाली की ओर ध्यान नहीं दिया—, उसके चेहरे का रंग उड़ चुका था—उसका सारा शरीर कांप रहा था—।

“क्रिस्टा होश में आओ !” रत्नाकर का मन भी बुरी तरह धड़क रहा था किन्तु उसने अपने आपको सम्भाल रखा था—।

तभी लाली उनके निकट आ गई—, रत्नाकर उसे देखते हुए बोला—‘क्रिस्टा को समझाओ लाली ! वह कहीं डर गई है—।’

“नहीं ! नहीं !! मुझे कुछ मत कहो !!” तभी क्रिस्टा पीछे हटती हुई बहकी, उसकी नज़रें द्वार की ओर थी...।

क्रिस्टा ! —लाली बोली, “क्या हो गया है तुम्हें !”

‘होश में आओ क्रिस्टा ! —’ रत्नाकर ने उसे आश्वासन दिया, ‘यहाँ तो कोई नहीं है ।’

सहसा क्रिस्टा ने आतंकमय स्वर में चीख मारी, उसका शरीर बुरी तरह कांपा और फिर वह धड़ाम की आवाज से फर्श पर गिर कर बेहोश हो गई...। रत्नाकर और लाली तेजी से उस पर झुक गए...वातावरण में आतंक की परतों का साम्राज्य स्थापित हो गया ।

दो

“नाचो....” बालयोगी रंजन ने चिल्लाकर कहा और फिर पूरी ताकत से अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

उसके हाथ से शोले निकले और वह पुनः चिल्ला पड़ा—
“नाचो !”

आग के शोले कमरे के व्योम में ही नृत्य करने लगे....।

युवा रंजन का चेहरा अत्याधिक उत्तेजित हो उठा था... उसका मुख लाल हो गया था... उसकी आँखें भी रक्तम हो चुकी थी—उसकी भृकुटियां तन गई थीं....।

‘नाचो....। :—एक बार फिर वह उत्तेजित स्वर में चिल्लाया..., पूरा शरीर धारण करलो और नाचते चले जाओ —।”

तभी हवा में उड़ने वाले शोलो ने मानवीय आकर धारण कर लिया और फिर उन्हें आग के मानवीय आकारों के पायल बज उठे....।

कमरे का दृश्य अत्यन्त ही भयंकर हो गया था—। ऐसा दिखाई दे रहा था जैसे कई व्यक्ति आग के शोलों में बिल्कुल छिपे हुए नृत्य कर रहे हैं....।

उसी वक्त रंजन ने तेजी से हाथ हिलाने शुरू कर दिए... उसके हाथों की गति के साथ साथ नृत्य करते हुए ज्वाला-मय आकार भी अधिक तेजी से नाचने लगे... रंजन को जैसा अपना होश भी नहीं था।

वह बावरा सा हो गया था... वह द्रुत गति से कभी दायें हाथ हिलाता... कभी बाएं... कभी ऊपर और कभी नीचे....।

दो

“नाचो...” बालयोगी रंजन ने चिल्लाकर कहा और फिर पूरी ताकत से अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

उसके हाथ से शोले निकले और वह पुनः चिल्ला पड़ा—
“नाचो !”

आग के शोले कमरे के व्योम में ही नृत्य करने लगे...

युवा रंजन का चेहरा अत्याधिक उत्तेजित हो उठा था... उसका मुख लाल हो गया था... उसकी आँखें भी रक्तम हो चुकी थी—उसकी भृकुटियाँ तन गई थीं...

‘नाचो...’ :—एक बार फिर वह उत्तेजित स्वर में चिल्लाया..., पूरा शरीर धारण करलो और नाचते चले जाओ —।”

तभी हवा में उड़ने वाले शोलों ने मानवीय आकर धारण कर लिया और फिर उन्होंने आग के मानवीय आकारों के पायल बज उठे...

कमरे का दृश्य अत्यन्त ही भयंकर हो गया था—। ऐसा दिखाई दे रहा था जैसे कई व्यक्ति आग के शोलों में बिल्कुल छिपे हुए नृत्य कर रहे हैं...

उसी वक्त रंजन ने तेजी से हाथ हिलाने शुरू कर दिए... उसके हाथों की गति के साथ साथ नृत्य करते हुए ज्वाला-मय आकार भी अधिक तेजी से नाचने लगे... रंजन को जैसा अपना होश भी नहीं था।

वह बावरा सा हो गया था... वह द्रुत गति से कभी दायें हाथ हिलाता... कभी बाएं... कभी ऊपर और कभी नीचे...

उसके हाथों की गति में ज्यों ज्यों तीव्रता आती, त्यों त्यों शोलों के मानवीय आकारों में छिपी हुए पायल अधिक तेज हो जाती—।

“भागो ।” —वह एक दम रुक कर चिल्लाया—शोलामन सभी को भगा दो...।

उसी वक्त मानवीय आकार के शोले फिर से लघु रूप धारण कर के हवा में उड़ने लगे और फिर धीरे धीरे गायब हो गए...केवल एक शोला हवा में उड़ता रहा...।

रँजन का चेहरा उस समय भी काफी उत्तेजित था... उसकी आंखें बराबर लाल थीं...।

“मेरे सामने आओ शोलामन ।”

उसकी ज़बान से शब्द निकलते ही हवा में उड़ने वाले शोले ने पुनः मानवीय आकार धारण कर लिया और धीरे-धीरे आग लुप्त होने लगी...कुछ ही देर में वहां एक भयानक व्यक्तित्व नज़र आ रहा था...।

वह शोलामन था...भूत शोलामन जिसकी शक्ल इतनी डरावनी थी कि साधारण व्यक्ति उस पर नज़रें टिकाने का भी साहस नहीं कर सकता था ।

उसका शरीर एकदम लाल था...सिन्दूर के लेप सा लाल किन्तु उसका चेहरा बिल्कुल काला था...।

उसके सफेद दांत काले कलूटे चेहरे पर अत्यन्त ही भयानक लग रहे थे—दोनों किनारों के दो दो दांत बाहर निकले हुए थे ।

“मैं हाजिर हूँ अजीम जादूगर—!” शोलामन का डरावना स्वर गुंजा, मैं तुम्हारा नाचीज़ गुलाम हूँ ।

‘नोशामी कहाँ है ?’

वह खत्म कर दी गई है मेरे मालिक !

‘क्या कहा...? क्या कहा तुमने शोलामन !’—वह इस तरह चीखा जैसे उसका दिमाग फट गया हो ।

‘मैं ठीक कह रहा हूँ सिरताज !’ भूतप्रेत शोलामन का भारी भयावह स्वर उभरा, सोमेसंस ने उसे सोबालू के हवाले

कर दिया था...और हब्शी सोबालू ने उसकी हड्डियां तोड़ दीं ।”

रंजन का चेहरा और भी भयानक हो गया—उसने दांत किचकिचाए—फिर चिल्ला पड़ा, “वह कमीनी सोमे संस कहां है ?

‘शैतान जादूगर लागूना के साथ नीलम गढ़ी में मौजूद है—।’

‘नीलम गढ़ी—? नीलम गढ़ी—? मैं उसकी ईंट से ईंट बजा दूंगा । मैं उसे आग लगा दूंगा ।’

शोलामन कुछ नहीं बोला, अपनी लाल आंखों से उसे देखता रहा ।

“मुझे सोमेसंस चाहिए शोलामन ! मैं उसकी लाश को ठोकरें मारना चाहता हूँ ।

तब भी भयावह भूत ने कोई जवाब नहीं दिया—।

रंजन ने कुछ देर तक इन्तजार किया—फिर उत्तेजित होकर चिल्ला पड़ा—‘तुम खामोश हो शोलामन ! तुम चुप क्यों हो—मैं कह रहा हूँ कि मुझे सोमेसंस चाहिए ।’

‘मैं माफी चाहता हूँ मेरे मालिक ! सोमेसंस आपके पास नहीं लाई जा सकेगी ।’

‘क्यों—? क्या तुम उस शैतान से डर गए हो जिसे लागूना के बदनाम से पुकारा जाता है—।’

‘नहीं अजीम जादूगर ! जब तक प्रेतराज गोनामा पीर लागूना के बस में है, तब तक मैं और मेरा कोई साथी वहां तक नहीं पहुंच सकता ।’

‘मैं गोनामा को भी आग लगा दूंगा ।’

‘महामानव रंजन ! क्षमा कीजिए...प्रेतराज गोनामा की शान में गुस्ताखी न करें...।’

रंजन एकदम चौंक उठा...फिर उसने सिर को झटका दिया और चिल्ला पड़ा, जाओ ।

शोलामन ने सिर झुकाया और फिर आग के मानवीय आकार में बदल गया...तब वह लघु आकार धारण करके हवा में नाचने लगा और कुछ ही देर में वह शोला भी लुप्त हो गया ।

रंजन की निगाहें उसी की ओर टिकी थीं...शोलामन के लुप्त होने के कुछ देर तक वह उसी तरफ देखता और फिर वह तेजी से पलट पड़ा...उसका चेहरा तब भी उत्तेजना से लाल था...उसके हृदय में तूफान मचा हुआ था।

उस वक्त वह हिमालय की एक गुफा में रह रहा था, वही उसका स्थायी अधिवास था...

गुफा में पत्थरों को काट कर तीन चार कमरे बने हुए थे और वह उन्हीं कमरों में रहा करता था...

वह भारतीय जादूगर था...आज तक कोई भी युवती उसका दिल नहीं जीत सकी थी।

वह काफी खूबसूरत नौजवान था और जादू में दिलचस्पी रखने वाली कितनी ही आकर्षक युवतियों के उसने दिल जीत लिए थे...

यह सही था कि आज तक किसी युवती ने उसके हृदय पर विजय प्राप्त नहीं की थी किन्तु यह भी सत्य था कि उसने कई युवतियों से प्यार का अभिनय करके अपनी जादुई कला के विषय में बहुत कुछ सीखा था...

नोशामी हिप्नाटिज्म की विशेषज्ञा थी...रंजन ने उस पर डोरे डाले और वह फंस गई...परिणामस्वरूप रंजन ने भी हिप्नाटिज्म पर कमाल हासिल कर लिया।

फिर उसने सोमेसंस पर इस ढंग से जाल फैलाया जिससे रंजन की बेवफाई की भनक भी नोशामी नहीं पा सकी और वह यह समझती रही कि सोमेसंस ने अपने जादू के बल पर उसका महबूब छीन लिया है। वह सोमेसंस से इन्तकाम लेने के लिए पागल हो गई और परिणामस्वरूप १ कुछ दिन पहले दोनों टकरा गईं।

सोमेसंस ने उसे समाप्त करवा दिया और रंजन से प्रतिशोध चुकाने के लिए तड़पती चली गई।

वास्तव में रंजन ने उसके साथ प्यार का अभिनय कर उसके जीवन को बरबाद कर दिया।

(१—शैतान की दुल्हन (एस० एन० कंवल)

जिन दिनों रंजन से सोमेसंस की मुलाकात हुई, उन दिनों वह जादूगर लागूना की खास कोसम्बियों में थी....।

लागूना के जादू की बुनियाद निर्लज विलासिता थी ।

उसके शिष्यों के दरबार लगाए जाते और वहां पर खुले दरबार में जो औरत जन्मजात नग्न होकर पूरी निर्लजता और संकोचहीनता से अपना यौवन कितने ही व्यक्तियों के सामने किसी पुरुष के हवाले कर देती, उसे कोसम्बी की पदवी दे दी जाती थी....।

संसार के कितने ही ऐसे जादुई ठिकानों में बनने वाली कोसम्बियों में से खास खास कोसम्बियों को लागूना के पास भेज दिया जाता और फिर वह अपने ढंग से उनकी जांच करता ।

उनमें से मुश्किल से ही कोई कोसम्बी लागूना की शर्तों को पूरा कर सकती और जो चुन ली जाती, उसे लागूना काम वासना पर आधारित जादू का प्रशिक्षण देता ।

जब वह लागूना की विशेष शिक्षा प्राप्त करके पूरी तरह जादूगरनी बन जाती तो उसे 'शैतान की दुल्हन' के नाम से पुकारा जाने लगता —।

जिन दिनों रंजन की मुलाकात सोमेसंस से हुई, उन दिनों वह पूरी तरह निर्लज होकर शैतान की दुल्हन बनने का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही थी ।

उन्हीं दिनों वह डगलस की महबूबा भी थी—डगलस लागूना के निकट साथियों में से एक था ।

रंजन के प्यार में फस कर उसने डगलस से बेवफाई की—बस ! यही बेवफाई सोमेसंस के बिनाश का कारण बन गई ।

डगलस ने उसे एक ऐसी दवाई खिला दी जिससे सोमेसंस किसी को भी अपना शरीर समर्पित करती, उसे कोढ़ फूट पड़ता—।

शैतान की दुल्हन बनने के लिए काम-विहार अनिवार्य था और सोमेसंस इसके अयोग्य हो चुकी थी—अतः उसका जादुई प्रशिक्षण अधूरा रह गया ।

उन्हीं दिनों लागूना ने उसे विशेष मकसद के लिए भारत की सरजमीन पर भेज दिया और वह अपने शिकार डगलस को लेकर यहाँ चली आई—जहाँ वह हर रोज डगलस पर हंटरी के वार करती पर उसे कामयाबी नसीब नहीं हुई—डगलस ने उसे अपनी दवाई का तोड़ नहीं बताया ।

उसने यहाँ प्रतापी से पराजय प्राप्त की और फिर डगलस को लेकर लागूना के पास भाग गई—। रंजन यह सारी कहानी जानता था ।

वह नोशामी से काम लेना चाहता था पर थोड़ी देर पहले शोलामन ने उसे बताया था कि वह मारी गई है, उसका अंग-अंग सोमेसंस से इन्तकाम लेने के लिए तड़प उठा ।

वह दूसरे कमरे में एक खोपड़ी के सामने खड़ा उसे घूर रहा था—किन्तु उसके मस्तिष्क में तूफान मचा हुआ था—सोमेसंस से इन्तकाम लेने के लिए उसका अंग-अंग तब भी जल रहा था ।

— — (२) — —

सीक्रेट सर्विस के इन्स्पेक्टर प्रतापी का चेहरा बहुत ज्यादा उत्तेजित था, उसने गृह मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी डाक्टर मलिक की ओर देखा, फिर गम्भीर स्वर में बोला, “ऐसा नहीं होगा डाक्टर साहब ! प्रतापी की मौजूदगी में ऐसा नहीं होगा, अगर आप इसी पर अटल रहे तो निश्चित ही मुझे त्यागपत्र देना पड़ेगा ।”

प्रतापी सीक्रेट सर्विस विभाग का केवल इन्स्पेक्टर ही नहीं था अपितु अज्ञात चीफ ब्लेक क्रॉस भी था ।

वह अपने स्टाफ के सामने नहीं आया करता था किन्तु जब ट्रांसमीटर पर उसकी भरभराई आवाज गूँजती तो स्टाफ के प्रत्येक सदस्य का दिल दहल जाता ।

सम्भवतः डाक्टर मलिक ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें प्रतापी की द्विभूमिका की जानकारी थी, उन्होंने ही उसे इस महान पदवी पर आरूढ़ किया था ।

प्रतापी चीफ ब्लेक क्रॉस के रूप में डाक्टर मलिक का ही

जवाबदेह था किन्तु जब वह कानून की व्यवस्था को भंग होते देखता तो वह उत्तेजित हो उठता—उस समय वह किसी की भी चिन्ता नहीं करता ।

डाक्टर मलिक प्रतापी के साहस और शौर्य की गाथा को जानते थे । वह उसकी राष्ट्रीयता से परिचित थे—और यही कारण था कि उन्होंने कभी भी उसकी कार्यप्रणाली पर नियंत्रण नहीं लगाया ।

पर—पर—आज प्रतापी जिस समस्या को लेकर उनके पास आया था, उसका समाधान उनके पास भी नहीं था—।

“आप खामोश हो गए डाक्टर साहब !” प्रतापी का पुनः उत्तेजित स्वर तड़पा—“मैं पूछता हूँ कि आखिर राय राघवेन्द्र को जमानत पर रिहा करने का हुक्म क्यों दिया गया—?”

‘कुंवर प्रताप !’ डाक्टर मलिक उसे इसी नाम से पुकारा करते थे—, मैं तुम्हें बता चुका हूँ कि इस मामले में बेबस हूँ । राय राघवेन्द्र की जमानत न्यायालय द्वारा स्वीकृत हुई है—। तुम ही बताओ कि गृहमंत्रालय क्या कर सकता है ।

“डाक्टर साहब !”—प्रतापी का स्वर पूर्ववत् उत्तेजित था, आप अच्छी तरह जानते हैं कि शैतान लागूना की शिष्या सोमसंघ की शतरंज का मुहरा बन कर राय राघवेन्द्र ने पोर ताशी का ढोंग रचाया तथा बीसियों लड़कियों की असमत से खिलवाड़ किया और देशद्रोहिता करता रहा लेकिन इसके बावजूद उसे जमानत पर रिहा कर दिया गया ताकि वह अपने विरुद्ध चलने वाले केस को बिगाड़ सके । नहीं डाक्टर साहब ! ऐसा कभी नहीं हो सकता ।

‘सवाल यह है कि किया भी क्या जाए—’, डाक्टर मलिक बोले, ‘कानून के सामने तो हम सभी लोग बेबस हैं ।’

“कानून न्याय का प्रतीक है डाक्टर साहब !—प्रतापी बोला—, मैंने सुना है कि किसी वरिष्ठ नेता के दबाव से यह फैसला करवाया गया है ।”

‘तुम कहना चाहते हो कि न्याय बिक गया...?’

न्याय नहीं डाक्टर साहब ! न्याय का एक रक्षक बिक

गया है। जैसा भी है, मैं किसी भी कीमत पर मानव द्रोही राय राघवेन्द्र को आजादी से दनदनाने की अनुमति नहीं दे सकता। उसे कानून का सम्मान करना ही होगा, चाहे उसके कितने ही लम्बे हाथ क्यों न हों ?'

“मैंने तुम्हें कब रोका है कुंवर प्रताप ! पर मैं इतना अवश्य कहूंगा कि सोच समझ कर कदम उठाना।”

“परिणाम की मुझे चिन्ता नहीं डाक्टर साहब ! आपका सहयोग बना रहे, मैं अंजाम भुगत लूंगा।”

अब उसका स्वर नम्र था... डाक्टर मलिक इसी समय की प्रतीक्षा कर रहे थे—। वास्तव में प्रतापी को उन्होंने बुलवाया था। सम्भवतः राय राघवेन्द्र की जमानत पर रिहा होने का समाचार प्रतापी को उसी वक्त ज्ञात हुआ था, वह डाक्टर साहब के सामने होते ही उत्तेजित हो उठा।

उसे सन्देह था कि कहीं राय राघवेन्द्र का पक्ष लेकर डाक्टर मलिक उससे तर्क वितर्क न करें। ऐसा हुआ नहीं, तब उसका नम्र हो जाना स्वाभाविक ही था।

प्रतापी का अब भी दृढ़ संकल्प था कि वह राय राघवेन्द्र से टकराएगा—हालाँकि उसे पूर्ण विश्वास था कि अब राय ने अपने जाल को अधिक मजबूत कर लिया होगा।

‘कुंवर प्रताप !’—डाक्टर मलिक बोले ‘तुम्हें भूला नहीं होगा कि मैंने तुम्हें बुलवाया था।’

‘मैं हाजिर हूँ डाक्टर साहब !’

‘मेरे साथ आओ !’

वे दोनों उठ खड़े हुए—डाक्टर मलिक उसे स्टडी रूम में ले गए।

दोनों आमने सामने बैठ गए, डाक्टर ने एक मेज के गुप्त ड्रायर से एक फाईल निकाली, उसमें एक रिपोर्ट थी।

“कुंवर प्रताप !—वह बोले, “यह एक खुफिया रिपोर्ट है जो हमें सीमान्त क्षेत्र से भेजी गई है।”

प्रतापी सतर्क होकर सुनता रहा—डाक्टर कहते गए, “वह क्षेत्र पर्वतीय है, हर कहीं पहाड़ियों का जाल बिछा है, उसकी

गुफाओं में दिन को भी किसी व्यक्ति के जाने का साहस नहीं होता, रात को जाने का तो सवाल ही क्या है।

वह थोड़ी देर रुकने के पश्चात् बोले, 'इस क्षेत्र को नीलम गढ़ी के नाम से पुकारा जाता है—गुफाओं के बाहर पहाड़ियों पर इधर उधर शामी कबीले के लोग रहा करते हैं।'

'शामी कबीला !' प्रतापी ने दोहराया।

'हां ! इस कबीले के लोग प्रायः जादू टोने में विश्वास रखते हैं—इनकी कई ऐसी विचित्र प्रथाएं हैं जिन्हें सुनकर नगरों की सभ्यता में पलने वाले व्यक्ति आश्चर्यचकित रह जाते हैं। उदाहरणस्वरूप इस कबीले की मलिका कोलम्पा प्रायः रात को नंगा घूमा करती है और अपने आपको शैतान की दुल्हन कहलाती है।'

'डाक्टर साहब।—' प्रतापी इस प्रकार चौंक उठा जैसे उसने कोई भयानक ख़ाब देख लिया हो।

इस प्रकार चौंक उठना स्वाभाविक भी था...। प्रतापी ने साधारण शब्द नहीं सुने थे।

सोमसंस काण्ड में उसे ज्ञात हुआ था कि खतरनाक जादूगर लागूना विशेष महिलाओं को जादूगरी की ट्रेनिंग देता है और जो औरत पूर्णरूप से प्रशिक्षित होकर जादूगरनी बन जाती है उसे शैतान की दुल्हन के नाम से पुकारा जाता है।

डाक्टर मलिक कह रहे थे कि शामी कबीले की मलिका स्वयं को शैतान की दुल्हन कहलाती है और रात को जन्मजात नग्न घूमा करती है।

स्पष्ट था कि हिन्दुस्तान की सीमाओं पर शैतान जादूगर ने अपने पांव फैलाने शुरू कर दिए हैं।

बात मामूली नहीं थी।

जादूगर लागूना उस जादू परम्परा में विश्वास रखता था जिसका वास्तविक आधार कामवासना हुआ करता था।

पिछले दिनों प्रतापी को मेडम सोमसंस से टकराना पड़ा था जो शैतान लागूना की दुल्हन नहीं बनी थी बल्कि उसे अधूरा प्रशिक्षण देकर ही हिन्दुस्तान में भेज दिया गया था ताकि वह

नई पीढ़ी को बिलासिता के गर्त में धकेल कर भारतीय संस्कृति को नष्ट भ्रष्ट करने का प्रयास कर सके—। सोमसंस के इस प्रयास के पीछे एक देश का हाथ था जिससे भारत कभी भी मैत्री की आशा नहीं रख सकता ।

सोमसंस को देश के कानून से पराजित होने के पश्चात विवश होकर भागना पड़ा था किन्तु प्रतापी का अनुमान था कि जादूगर लागूना अपनी शिष्या की पराजय सहन नहीं करेगा और एक दिन वह नया काण्ड रचाने का प्रयास करेगा और अब डाक्टर मलिक के शब्द सुन कर उसे विश्वास हो गया कि उसका अनुमान गलत नहीं था ।

परन्तु...? सहसा उसके मस्तिष्क में एक सवाल उभरा ।

उसने पूछा, 'क्या जादू की मलिका कोलम्पा शुरू से वहीं रहती है ?'

'हमें मिलने वाली रिपोर्ट के अनुसार कोलम्पा को मलिका की गद्दी सम्भाले लगभग पच्चीस दिन हो गए हैं । इससे पहले जो मलिका थी उसका कोई पता नहीं चल रहा—। कहा जाता है कि एक रात वह जादू का कोई अमल करने के लिए किसी गुफा में गई थी तब से उसका कोई पता नहीं ।

'मेरा सवाल दूसरा है डाक्टर साहब ! मैंने पूछा है कि क्या कोलम्पा शामी कबीले की ही औरत है '

'इसके बारे में रिपोर्ट में कुछ नहीं कहा गया—।'

प्रतापी का अनुमान था कि कोलम्पा शामी कबीले की सदस्या नहीं होगी बल्कि किसी ढंग से बाहर से लाई गई होगी...

उसका यह भी स्पष्ट अनुमान था कि उस कबीले के कुछ व्यक्ति लामूना के प्रभाव में आ गये होंगे और इस प्रकार पहली मलिका को गायब करवा कर लागूना ने अपनी कोई सविशेष शिष्या को वहां मलिका की गद्दी पर आरूढ़ करवा दिया होगा ।

सहसा उसे कुछ याद आ गया, उसने पूछा, 'सवाल यह है डाक्टर साहब ! इस रिपोर्ट का सीक्रेट सर्विस के लिए क्या

महत्व है ?'

डाक्टर मलिक ने संतोषजनक दृष्टि से अपने सामने बैठे युवक को देखा, फिर पूर्ववत् गम्भीर स्वर में बोले, 'नीलम गढ़ी की गुफाओं में किसी बाह्य व्यक्ति का प्रवेश करना आसान नहीं है, यह मैं तुम्हें बता चुका हूँ—।

प्रतापी का पूरा ध्यान डाक्टर मलिक की ओर था, वह कह रहे थे—'रक्षा मंत्रालय के सीमा प्रहरियों ने उन गुफाओं के प्रवेश द्वार पर गुप्त रूप से ट्रांसमीटर की तारें बिछा दी थीं ताकि किसी वक्त भी वह गुफाएँ, देश की सुरक्षा के लिए खतरा न बन सकें अथवा सीमा पार के सैनिक उन गुफाओं में किसी ढंग से पहुँच कर हमारे देश के विरुद्ध षड्यंत्र रचाने का केन्द्र न बना सकें ।'

प्रतापी सुनता रहा, उन्होंने अपना क्रम बराबर बनाए रखा, वह कहते चले गए—'उन गुफाओं के बाह्य क्षेत्र से कभी कभार कुछ आवाजे फूटती जो सीमान्त कैम्प में टेप रेकार्ड हो जाती— वह आवाजें प्रायः नीलम गढ़ी के लोगों की होती थीं—।

प्रतापी समझ रहा था कि जब से नीलम गढ़ी में मलिका कोलम्पा का आगमन हुआ होगा, तब से स्थिति में खतरनाक हद तक परिवर्तन हो गया होगा ।

उसका अनुमान ठीक निकला, डाक्टर मलिक कह रहे थे—'पिछले दस पन्द्रह दिन से कुछ ऐसी आवाजें रेकार्ड हुई हैं जिनसे ऐसी आशंका जाग उठी है कि वहाँ कुछ लोग षड्यंत्र रचाने के लिए गुफाओं में प्रवेश करते हैं ।'

'गुफाओं के भीतर की आवाजें टेप रेकार्ड नहीं होती क्या ?'

'वैसे तो प्रवेश द्वार पर हैवी ट्रांसमीटर कैबिल बिछाई गई थीं किन्तु गुफाओं की भीतरी आवाजें स्पष्ट नहीं सुनाई देती ।'

'प्रवेश द्वार से आने वाली आवाजों में कोई खास बात—?'

'नीलम गढ़ी का प्रेत—!'

'क्या मतलब है आपका—?'

'कुछ नहीं कहा जा सकता...। टेप होने वाली आवाजों से यही कुछ पता चलता है कि वहाँ कोई प्रेत मौजूद है—। अनुमान

लगाया जाता है कि इस प्रेत का ठिकाना उन गुफाओं में कहीं है ।

प्रतापी का मस्तिष्क तेजी से काम कर रहा था—उसे आशंका थी कि लागूना अपने जादू के बल पर सोमेसंस की पराजय का इन्तकाम चुकाने आया है पर फिर भी उसने बात बनाई ।

उसने कहा, 'आप स्वयं ही कहते हैं कि नीलम गढ़ी में शामी कबीले के लोग जादू में विश्वास रखते हैं—साफ जाहिर है कि मलिका कोलम्पा भी जादूगरनी होगी । तब क्या यह सम्भव नहीं कि मलिका कोलम्पा ने कोई प्रेत अपने बस में कर लिया हो ।'

'ऐसा होना असम्भव नहीं है पर इस रिपोर्ट के अनुसार शामी कबीले के लोग भी उस प्रेत से आतंकित हैं । वैसे तो उस कबीले वाले पहले ही पिछड़ी सभ्यता को मानते थे किन्तु अब तो वहां विलासिता की भी तीव्र गंध भाने लगी है और वहां ऐसे ऐसे निर्लज दृश्य देखने को मिलते हैं जिन्हें कोई सभ्य व्यक्ति ब्यान नहीं कर सकता—।'

'वही रूप—!' प्रतापी ने दिल ही दिल में कहा ।

तभी उसे डाक्टर साहब की आवाज सुनाई दी—, 'जो भी है कुंवर प्रताप !—सुरक्षा मंत्रालय ने गृह मंत्रालय से अनुरोध किया है कि नीलम गढ़ी में अपना कोई डिटैकिटव भेजा जाए ।'

प्रतापी का हृदय भावोत्तेजित हो उठा—किन्तु उसने स्वयं पर नियंत्रण करके कहा, 'क्या रक्षा मंत्रालय का गुप्त विभाग यह काम नहीं कर सकता था ।'

रक्षा मंत्रालय के अनुरोध में आशंका प्रकट की गई है कि नीलम गढ़ी का प्रेत शहरों में अपना कुप्रभाव भी जमाना चाहता है—। जैसा भी है कुंवर प्रताप ? तुम्हें वहां जाना ही होगा—'ऐसा लगता है कि सोमेसंस पूरी तैयारी से फिर हिन्दुस्तान में आई है ।'

प्रतापी ने प्रतिबाद नहीं किया हालांकि उसे विश्वास था कि अब लागूना स्वयं आया होगा—। जो कुछ भी था, प्रतापी को

एक बार फिर से मौत से टक्कर लेनी थी ।

तभी मलिक फिर बोले, 'तुम यह फाईल और नक्शा ले जाओ—आवाजों की टेप रीलें भी दो तीन दिन तक आ जाएंगी तुम स्वयं ही कार्यक्रम बना लो । मुझे तुम पर पूरा विश्वास है ।'

'धन्यवाद डाक्टर साहब ! आप भरोसा रखिए कि आप के विश्वास को ठेस नहीं लगेगी ।'

वह उठ खड़ा हुआ... उसके मस्तिष्क में तूफान मचा हुआ था—उसका अंग-अंग उत्तेजित हो उठा था और उसने स्वयं को मौत से भी टकराने का दृढ़ संकल्प कर लिया था ।

— (२) —

'ठायं !' साऊण्ड प्रूफ कमरे में गोली का धमाका हुआ और सामने का आदमकद दर्पण चूर-चूर हो गया ।

राय राघवेन्द्र के हृदय की आग तब भी नहीं बुझी—कानून के रक्षकों के विरुद्ध ज्वाला भड़कती ही चली जा रही थी ।

उसने अपनी ज्वाला से प्रभावित होकर सामने आदमकद दर्पण को प्रतापी के शरीर की कल्पना कर गोली चलाई और इस प्रकार अपनी ज्वाला को बुझाने का असफल प्रयास किया ।

उसका दिल अवश्य चाहता था कि अगर उसके बस में हो तो वह प्रतापी को समाप्त कर अपने प्रतिशोध की ज्वाला शांत कर ले किन्तु उसे परिणाम का भी पता था ।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि वह किसी बड़े नेता की सिफारिश पर ही जमानत पर रिहा हुआ था—लेकिन वह प्रतापी से हर हालत में इन्तकाम चुकाएगा—चाहे उसे कुछ भी क्यों न करना पड़े किन्तु उसने इन्तकाम में पूरे होश नहीं खोए थे जिससे उसे परिणाम का ध्यान न रहता ।

वह इन्तकाम चाहता था और उसके लिए हजारों रुपए खर्च करने के लिए तैयार था ।

इस आशय के लिए उसने बाबुल को बुलवा भेजा था ।

बाबुल काफी खतरनाक व्यक्ति था—किसी की हत्या कर

देना उसके लिए साधारण सी बात थी। कहा जाता था कि वह रुपए लेकर हत्याएं करता है किन्तु उसका काम इस सफाई से होता था कि कानून के हाथ उस तक पहुँच ही नहीं सकते थे।

ऐसा कहा अवश्य जाता था किन्तु इसका प्रमाण किसी के पास नहीं था। कोई नहीं जानता था कि उसने कानून से बचकर कितनी हत्याएं की हैं—। किसी के पास भी बाबुल द्वारा होने वाली एक हत्या का भी प्रमाण नहीं था।

वैसे यह बात तो सर्वमान्य थी कि शहर के गुण्डे उसका नाम सुनकर ही कपकपा जाते थे।

ऋष्ट पुष्ट—विशालकाय बाबुल जहां से भी निकलता तो रास्ते में खड़ा हुआ गुण्डा पीछे हट जाता।

उसी खतरनाक व्यक्ति बाबुल को राय राघवेन्द्र ने बुलवा भेजा था।

उसका शरीर जल रहा था—। वह विलासी व्यक्ति था— नीचता की हद तक कामुकता से परिपूर्ण—। कभी वह मेडम सोमसंस की गुलामी में रह कर पीर ताशी के रूप में अपनी काम वासना की पूर्ति कर लेता था—प्रतापी ने उसके सभी जाल तोड़ दिए थे और उसके पश्चात वह कई दिन जेल में बन्द रहा था, उसकी जमानत नहीं हो रही थी।

आखिर वह जमानत पर रिहा हुआ। उसमें मानवता जागृत होती तो वह इतना अपमान सहन करने के पश्चात भटकी हुई राह को छोड़ने का प्रयास करता पर ऐसा करने की बजाए उसने पतन के गर्त में गिरने का संकल्प कर लिया। वह अपना प्रतिशोध चुकाने के लिए नीति की आड़ में खतरनाक से खतरनाक काम करने के लिए तैयार हो चुका था।

उसने अपनी पत्नी जमना को भी सबक सिखाने का फैसला कर लिया था....।

वही राय के पोल खोल देने का माध्यम बनी थी....।

सोमसंस काण्ड में वह अपने पति की सेक्रेट्री रमोला के साथ 'पीर ताशी' के पास चोरी छिपे गई थी....।

भले ही राय राघवेन्द्र ही पीर ताशी के मेकअप में अपनी

कामवासना की पूर्ति करता था ।

जमना निःसन्तान थी और वह रमोला के बहकावे में आकर उसके साथ पीर ताशी के पास आधी रात को जा पहुँची और वहाँ उसे पीर ताशी ने अपनी वासनापूर्ति का साधन बनाना चाहा...

वह वहाँ से भाग आई... और घर में आकर पागल होने का ढोंग रचाने लगी ताकि जब तक पीर ताशी गिरफ्तार नहीं हो जाता, तब तक अपनी असमत् को बचाए रखे—पर उसके नसीब ! उसके स्वप्न में भी आशा नहीं थी कि पीर ताशी वास्तव में उसका पति है ।

यदि उसे इस तथ्य की जानकारी होती तो सम्भवतः वह कभी भी प्रतापी को पीर ताशी के ढोंग का रहस्य न बता पाती ।

जो भी था, जमना अपने पति की अनुमति के बिना संतान की खातिर 'पीर ताशी' के पास गई थी और इसके लिए राय राघवेन्द्र अपनी पत्नी को सबक सिखाना चाहता था, वैसे तो रमोला भी उसकी नजरों में थी ।

वह उसकी परसनल सेक्रेटरी थी और उसी ने किसी के बहकावे में आकर जमना की मदद की थी...

वह रमोला की इस हरकत को जानता था और इसी आड़ में उसने रमोला को अपनी वासना पूर्ति का साधन बनाना चाहा था... गिरफ्तारी के भय से रमोला उसके इशारों पर चलने के लिए विवश हो गई थी किन्तु ठीक वक्त पर वहाँ प्रतापी पहुँच गया था और राय गिरफ्तार कर लिया गया था ।

राय को सन्देह था कि रमोला ने, अपने आगमन से पहले प्रतापी को सूचना दे दी होगी ।

रमोला का पति स्वामीनाथ भी उसकी लिस्ट पर था किन्तु वह सभी को एकएक कर बरबाद करना चाहता था... सब से पहला नम्बर प्रतापी का था...

उधर दूसरे कमरे में जमना चिन्तित सी कमरे में चक्कर लगा रही थी...

जब से उसका पति जेल से जमानत पर मुक्त होकर आया था, उसने सीधे मुँह उससे बात तक नहीं की थी...

उसे जेल से आए हुए केवल एक ही रात निकली थी... वह पिछले दिन मुक्त होकर आया था... रात काफी देर तक उसके चाटुकार उसे बचाई देने के लिए आते रहे... और शराब का दौर चलता रहा। जमना अपने कमरे में पति का इन्तजार करती रही... उसे नींद नहीं आई।

निःसन्देह सोमसेंस काण्ड में उसने पागलपन का ढोंग रचा कर अपने पति पर अपनी शराफत का प्रमाण दे दिया था किन्तु फिर भी वह महसूस कर रही थी कि अनजाने में ही सही अपने पति की गिरफ्तारी और बेइज्जती में उसका सब से ज्यादा हाथ है। वह निर्दोष होते हुए भी स्वयं को दोषी मान रही थी पर किया भी क्या जाए... जो होना था, वह हो चुका...

प्रतापी चतुर प्रमाणित हुआ था... उसने राय राघवेन्द्र की गिरफ्तारी से पूर्व ही पीर ताशी के बिषय में जमना से ब्यान लेकर टेप रेकार्ड कर लिया था... और उसी के आधार पर 'पीर ताशी' के विरुद्ध मुकद्दमा रजिस्टर्ड करना था।

अब न्यायालय में प्रतापी को यह प्रमाणित करना था कि राय राघवेन्द्र ही पीर ताशी के मेकअप में संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं को फुसला कर उनकी असमति से खिलवाड़ करता था... उसे कोर्ट में यह भी प्रमाणित करना था कि राय राघवेन्द्र मेडम सोमसेंस के संकेतों पर देश से गद्दारी के कुकृत्य किया करता था...

जमना समझ नहीं पा रही थी कि वह अपने पति के सामने किस प्रकार सिर उठाएगी।

इसमें सन्देह नहीं कि यदि वह स्वयं इस मामले में फंसी न होती और उसे अपने पति के बारे में चरित्रहीनता की बात पता चलती तो वह सम्भवतः उसके साथ बात तक करना भी पसन्द नहीं करती—।

पर...पर...वह अब क्या करे...?

आज दिन को राय राघवेन्द्र सुबह ही घर से निकल गया

था और लगभग आध घंटा ही पहले आया था—तब से वह अपने कमरे में ही था—। जमना के लिए यह स्थिति असह्य होती जा रही थी पर उसका साहस भी न हो रहा था कि वह अपने पति के कमरे में जाए। बस! वह अशान्त होकर अपने मस्तिष्क पर जोर दिए जा रही थी—उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह करे तो क्या करे—?

उसकी आशंका गलत भी नहीं थी—राय राघवेन्द्र अपनी पत्नी से सख्त नाराज था—। यही कारण था कि लगभग तीस घंटे बीत जाने पर भी उसने अपनी पत्नी से सीधे मुंह बात तक नहीं की थी...उसने अपने बंगले में कदम रखते ही फैसला कर लिया था कि वह जमना से बात तक नहीं करेगा—उसने तीस घंटे तक स्वप्न पर नियंत्रण बनाए रखा किन्तु अब उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि उसके संयम के बांध टूटने वाले हैं—

वह कामुक व्यक्ति था—विलासिता ने उसे अंधा बना कर मेडम सोमसेंस का गुलाम बना दिया था—किन्तु अब उसके पास अपनी वासना पूर्ति का कोई साधन नहीं रह गया था—। वह जितने दिन भी जेल में रहा, वासना की भीषण ज्वाला में जलता रहा—बंगले में आया तो उसने अपनी पत्नी से बात तक न करने का फैसला कर लिया था—तीस घंटे तक उसने अपने फैसले पर अमल भी किया किन्तु अब—?

अब वह अपनी ज्वाला से विकट रूप से उत्पीड़ित हो उठा पर अभी तो उसे बाबुल का इन्तजार था...

वह अपने आप को जलाता रहा और फिर...?

सहसा कमरे की घंटी टनटना उठी...। उसने दरवाजा खोला तो चौंक पड़ा...बाहर एक हसीन युवती खड़ी थी...

उसकी वासना की अग्नि अधिक भड़क उठी...उसकी आंखों के सामने अज्ञान का पर्दा गिर गया।

उसने अपने आप को सम्भाल कर कहा, 'आईए...'।

'पीर ताशी...'।—बुवती की रहस्यमयी फुसफुसाहट थी—
'नीलम गढ़ी में पहुँचो...'।

'नीलम गढ़ी...?' राय राघवेन्द्र ने आश्चर्य से पूछा।

‘कौन सी नीलम गढ़ी...?’

‘जहां काले जादू का अजीम मालिक तुम्हारा इन्तजार कर रहा है—।’

युवती की आवाज इतनी रहस्यमय थी कि उसके शरीर में शीत लहर दौड़ गई...।

‘आओगे ना...?’ वह पुनः फुसफुसाई और फिर दो कदम पीछे हट गई...?

‘‘तुम कौन हो...?’’

‘मैं साकोशा हूं पीर ताशी—। तुम वहां जरूर आना... अजीम जादूगर लागूना तुम्हारा इन्तजार कर रहा है...।’

राय राघवेन्द्र के दिमाग पर जैसे हथोड़े बजने लगे... उसने सोमसंस से जादूगर लागूना का नाम सुना हुआ था...।

तभी उसका सारा शरीर पसीने से तर हो गया...उसके देखते देखते साकोशा गायब हो गई...।

बस, एक बार फिर कहीं से उसकी आवाज सुनाई दी—, ‘मैं जा रही हूँ पीर ताशी...।’

उसके पश्चात उसे केवल पदचाप ही सुनाई दी जो क्षण प्रति क्षण दूर होती चली जा रही थी...।

उसने द्वार का सहारा ले लिया वरना उसे आशंका थी कि वह गिर जाएगा —।

उसका शरीर कपकपा रहा था...जिस्म पसीने से तर हो गया था और मन की धड़कन में जबरदस्त वृद्धि हो गई थी ।

तीन

लाली भरपूर जवान थी...उसके अंग अंग में जवानी की मद-
होशी छाई हुई थी...

वास्तविकता यह थी कि उससे अपनी जवानी सम्भाले नहीं
रही थी...

उसमें कोई सन्देह नहीं कि वह बहुत ज्यादा फारवर्ड थी...।
क्रिस्टा की मुलाकात से पहले उसका मदमाता जीवन उसे चैन
से नहीं बैठने देता था किन्तु तब उसके नियंत्रण का बांध नहीं
टूटा था—।

उसका भाई रत्नाकर अपने माता पिता के विदेश चले
जाने पर अपने डैडी की सेक्रेट्री क्रिस्टा को घर ले आया था ।

उस वक्त क्रिस्टा को तो मालूम ही था कि रत्नाकर उस
पर आसक्त है किन्तु उसे कुछ कहने का साहस नहीं कर
सकता ।

क्रिस्टा लाली के पास जा कर रहने लगी तो पहली रात
ही दोनों खुल खेलीं । लाली ने उसे अपने मन की भावना बता
दी कि वह रंगीन दुनिया में विहार करना चाहती है—।

क्रिस्टा ने स्वीकार कर लिया और परिणाम स्वरूप दोनों
कलबों में जाने लगीं और काफी देर तक वहीं रहतीं—।

रत्नाकर से यह आशंका भूली जहीं थी कि उसकी बहन
भटक भी सकती है किन्तु फिर भी इसके बावजूद उसने लाली
को क्रिस्टा के साथ बाहर जाने से कभी नहीं रोका—।

वह विलासिता में अन्धा हो कर क्रिस्टा की जवानी पर

बुरी तरह मर मिटा था... उसे यकीन था कि क्रिस्टा बलबों के रंगीन वातावरण में बिहार करती रही तो एक दिन अपने यौवन का भार न सह कर उसकी बाहों में समा जाएगी। आखिर ऐसा ही हुआ... क्रिस्टा की जवानी रत्नाकर की वासना पूर्ति का साधन बन गई—।

रत्नाकर अपने उद्देश्य में सफल हो गया... वह इस बात से खुश था कि बलबों की रंगीनियों ने क्रिस्टा की वासनाओं को भड़का दिया है किन्तु वह विलासिता के प्रवाह में यह भूल गया था कि ऐसा ही कामुक प्रभाव उसकी बहन पर भी तो पड़ा होगा।

वह भले ही उस तथ्य को भूल गया था किन्तु ऐसा तो होना ही था।

फिर लाली ने उसे संकोचहीन होकर सब कुछ बता दिया था, वह अपने भाई के पर-स्त्री गमन स्वभाव को पहले से ही जानती थी और जब क्रिस्टा ने उसे रत्नाकर को अपने यौवन के समर्पण की कहानी सुनाई तो उसकी जवानी को भी आग लग गई—।

वह अवसर की खोज करने लगी... उन दिनों रत्नाकर का दोस्त परमेन्द्र बाहर था... वह उसके साथ इस हद तक खुला हुआ था कि उसे विश्वास था कि वह उससे दिल ही दिल में मुहब्बत करता है किन्तु संकोचवश अपने मन की बात नहीं कहता।

उसने फैसला कर लिया था कि परमेन्द्र को इस प्रकार लिफ्ट देगी कि संकोच की सारी कड़ियां टूट जाएगी—। बस ! उसे परमेन्द्र के लौटने का इन्तजार था—।

परमेन्द्र बाहर गया हुआ था, वापस आया तो रत्नाकर के साथ लाली को भी मिला... दोनों की चोंचलेभरी बातें भी हुई और फिर एक रात रत्नाकर के बुलाने पर रात को परमेन्द्र उनके यहां गया तो उसके वापस जाने पर वह उसके लिए रास्ते में जा खड़ी हुई किन्तु वह अपनी इम्पाला कार को भगाता हुआ निकल गया—।

उसी रात क्रिस्टा को कुछ हो गया...वह कहती थी कि उसे कोई औरत नज़र आती है...और दूसरे ही दिन लाली की भाभी मूर्धा पहुँच गई...उसके साथ नवलंग था...

पाँच सात दिन तो चुप्पी सी रही—एक बार दिन को ही परमेन्द्र आया—क्रिस्टा के विषय में मूर्धा को बताया गया कि लाली ने ममी की अनुपस्थिति में अपने डैडी की सेक्रेट्री को अपने साथ रखा हुआ है ताकि अकेलापन न खले—।

नवलंग दो दिन घर पर रहा, फिर उसने मुगल लॉज में फ्लेट ले लिया। कभी वह मूर्धा को मिलने चला आता और कभी मूर्धा उसे मिलने चली जाया करती थी।

अब तक स्थिति शान्त चलती रही थी...क्रिस्टा और लाली एक कमरे में रहती थी...मूर्धा उधर कभी गई ही नहीं थी—।

रत्नाकर का अपनी पत्नी के साथ कोई झगड़ा नहीं हुआ था। नवलंग की खास चर्चा भी नहीं सुनी गई थी...वातावरण सामान्य बना रहा था किन्तु लाली को चैन नहीं था...उसकी जवानी की आग दिन प्रति दिन भड़कती चली जा रही थी—।

वह अपनी ज्वाला शान्त करना चाहती थी किन्तु अपने स्तर को गिराना भी नहीं चाहती थी...। वह परमेन्द्र को अपना शरीर समर्पण करने के लिए तैयार थी...अगर उसे अवसर मिल गया तो वह अति हीन भाव से भी उसे आकृष्ट करने का फैसला कर चुकी थी किन्तु वह इतनी 'नीच' नहीं होना चाहती थी कि वासना की अंधी होकर किसी भी पुरुष को अपना साथी बना लेती—।

रात के आठ बजे थे...लगभग एक घंटा पहले डाक्टर क्रिस्टा को टाका लगा गया था...अब वह आराम से सो रही थी...। डाक्टर ने बताया था कि वह सुबह चार बजे तक इन्जेक्शन के प्रभाव से सोई रहेगी—।

रत्नाकर और मूर्धा एक पार्टी पर गए थे...वे कह गए थे कि शायद रात भर घर पर नहीं आएंगे...अगर आ भी गए तो बारह बजे से पहले आने का तो सवाल ही नहीं था—।

लाली घर में बिल्कुल अकेली थी...उसे परमेन्द्र की याद बुरी तरह सता रही थी...। उसकी इच्छा थी...कि अगर परमेन्द्र वहां पहुँच जाए तो उसकी युग युग की प्यास बुझ जाए—।

पर उसकी इच्छा से क्या बनता था...वह अकेली ही रही...वक्त गुजरता गया...।

तभी उसका तुफान अधिक तेज हो गया, उसने फोन का रिसीवर उठाया और नम्बर डायल किए।

उसका अनुमान था कि परमेन्द्र घर पर नहीं होगा, फिर भी उसने फोन कर दिया था किन्तु उसके अनुमान के विपरित परमेन्द्र ने ही रिसीवर उठा कर अपना परिचय दिया।

“मैं लाली हूँ परमेन्द्र ? —” उसने अपने मन के चोर पर काबू पाने का प्रयास करते हुए कहा, “सुनाओ ! कैसे हो ?”

“ठीक हूँ लाली ! कहो...रत्नाकर घर पर है क्या—?”

“नहीं तो! —वह भाभी के साथ किसी पार्टी पर गया है। रात के बारह बजे से पहले नहीं आएगा।”

“क्रिस्टा तो घर पर ही होगी।”

‘उसकी तबीयत फिर खराब हो गई थी, बहकने लगी तो तुरन्त डाक्टर को बुलवा भेजा। वह उसे नींद का टीका लगा कर गया है। वह सुबह चार बजे से पहले नहीं उठेगी।’

‘तब तुम घर में अकेली हो क्या ?’

‘तभी तो फोन किया है। तुम्हारे पास वक्त हो तो आ जाओ।’

दूसरी तरफ परमेन्द्र ने शब्द सुने तो वह कुछ सोचने लगा...।

‘तुम खामोश हो गए परमेन्द्र ? —लाली बोली, मेरा साथ अच्छा नहीं लगता क्या—?’

‘यह तुम्हें किसने कहा—?’

‘तब आ रहे हो क्या—?’

‘आ रहा हूँ—। आध घन्टा में तुम्हारे पास पहुँच जाऊंगा।’

फोन डिसकनेक्ट हो गया...लाली ने रिसीवर रखा और उसकी निगाहें दीवार की ओर टिक गईं...। वह तेजी से आगामी कार्यक्रम पर विचार कर रही थी...

परमेन्द्र को आने में तीस मिनट थे...वह उस समय में कुछ करना चाहती थी...

उसने कुछ सोचा...फिर रत्नाकर और मूर्धा के स्लीपिंग रूम में जाकर पलंग पर बिछे कीमती बिस्तरों को संवारा और उन पर इत्तर छिड़क दिया...

उसकी वासना की आग के परिणाम का ध्यान तक नहीं था—।

वह बाहर निकली और फिर अपनी शृंगार मेज के सामने जा खड़ी हुई। उसने मेकअप के 'नेचुरल कलर्ज' से अपने आपको सजाया और तब कपड़े बदलने लगी...

जिस समय बाहर परमेन्द्र का कार का हार्न बजा...उस समय तक वह अत्यन्त ही शानदार नेचरल मेकअप में स्वयं को तैयार कर चुकी थी...और उसे विश्वास था कि परमेन्द्र उसके यौवन की अवज्ञा नहीं कर सकेगा।

परमेन्द्र भीतर आया तो उसे अपनी आशंका निर्मूल नजर नहीं आई...उसके सामने खड़ी लाली ने शृंगार ही ऐसा कर रखा था...

'मैं आ गया हूँ लाली !'—परमेन्द्र आगे बढ़ते हुए बोला, 'रत्नाकर किस पार्टी में गया है...?'

दोनों आमने सामने बैठ गए—लाली बोली, 'मूर्धा भाभी के किसी दोस्त के यहां कोई फंक्शन था। कह गए थे कि बारह बजे से पहले नहीं आएंगे—, यह भी हो सकता है कि रात भर नहीं आए—। उधर क्रिस्टा दवाई के प्रभाव से नींद में बेसुख पड़ी है।'

'अकेलेपन से घबरा गई क्या—?'

'अस्वाभाविक है क्या—? इतना बड़ा बंगला और अकेली जवानी—। घबरा जाना बड़ी बात ही क्या ?'

परमेन्द्र को जब फोन पर लाली ने बात की थी, तब से

उसकी यही आशंका थी कि वह भटक गई है।

इसमें सन्देह नहीं कि रत्नाकर उस का दोस्त था, वे एक दूसरे के दुःख सुख में भी काम आते थे किन्तु यह भी सच्च था कि उनकी दोस्ती में आदर्श नहीं था—।

दोनों दोस्त परस्पर काफी खुले हुए थे और अगर यह कहा जाए कि उनकी दोस्ती की बुनियादों में कुकृत्यों का आघार अधिक था तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। पूंजी की अधिकता से दोनों भटके हुए राही कहे जा सकते थे...

ऐसी स्थिति में यदि लाली के मदभरे यौवन का आकर्षण तथा एकांत वातावरण पाकर परमेन्द्र की नीयत भी खराब हो जाती तो कोई बड़ी बात नहीं थी—।

उसने बात बनाई, 'एक बात बताओ लाली ! रत्नाकर और मूर्था तो काफी खुश हैं, तब क्रिस्टा का क्या बनेगा ?'

लाली का दिल बलियों उछलने लगा—“वह बच्ची तो नहीं थी कि वह यह भी अनुमान नहीं लगा सकती थी कि परमेन्द्र उसके भाई रत्नाकर एवं क्रिस्टा के कामुक सम्बन्ध की चर्चा करके वैसा ही वातावरण बनाना चाहता है—।

उसने संतोष का सांस लिया, वैसे वह निश्चय कर चुकी थी कि अगर उस अपने यौवन का खुला निमंत्रण भी देना पड़े तो वह संकोच नहीं करेगी परन्तु परमेन्द्र के शब्द सुन कर उसे विश्वास हो गया कि उसे अपनी निलर्जता के प्रदर्शन में पहल नहीं करनी पड़ेगी।

उसके मस्तिष्क का तूफान अधिक उमड़ पड़ा—वह बुरन्त उत्तर नहीं दे सकी बल्कि कल्पनाओं में बिहार करने लगी—।

कुछ देर तक इन्तज़ार करने के पश्चात परमेन्द्र फिर बोला, “तुम खामोश क्यों हो गई लाली ! यह तो तुम जानती ही होगी कि रत्नाकर और क्रिस्टा के सम्बन्ध काफी निकट हो चुके हैं... तुम मेरा मतलब तो समझ गई होगी।”

लाली किसी अवसर को गंवाना नहीं चाहती थी... उसने परमेन्द्र की ज़बान को और भी ज्यादा खुलवाने के हेतु कहा, “यहां पर हम दोनों के अलावा कोई नहीं है। तब तुम खुल कर

बात क्यों नहीं करते—?

निःसन्देह परमेन्द्र भी लाली के रंग में रंग जाना चाहता था—किन्तु उसे इतना एहसास अवश्य था कि उसके सामने बैठी अर्धनग्न युवती उस रत्नाकर की बहन है जो उसका दोस्त भी है।

भले ही उनकी दोस्ती ने कुकृत्यों का रूप अधिक देखा था किन्तु फिर भी वह दोनों एक दूसरे के दुख सुख के साथी थे। यही कारण था कि वह एकदम लाली को खुल कर वह बात कहने का साहस नहीं कर सका था जिसे उसके अनुमान के अनुसार लाली स्वयं सुनना चाहती थी—।

वह बोला, कहते हैं कि दीवारों के भी कान होते हैं... खुल कर बातचीत की और किसी ने सुन ली तब क्या होगा ? इस बंगले की दीवारें बहरी हैं परमेन्द्र !

दरवाजा खुला है...आवाज बाहर भी जा सकती है।

यह शब्द परमेन्द्र ने अपना सारा साहस बटोर कर कहे, अब अपने साहस का प्रदर्शन करने की बारी लाली की थी—।

वह उठी और उसने द्वार बन्द करके भीतर से चिटकनी लगा दी।

उसका साहस साथ छोड़ने लगा किन्तु उसने स्वयं को शीघ्र ही सम्भाल लिया—। वह उसके पास आ कर खड़ी हो गई...भावोत्तेजना से उसे चलना भी कठिन हो गया था।

परमेन्द्र का अंग अंग भी जल उठा...उसने लाली का हाथ पकड़ा और खींच कर उसे अपनी गोद में गिरा लिया...

दोनों आलिङ्गित हो गए...फिर लाली के नियंत्रण के जैसे सारे बांध खुल गए...परमेन्द्र को अपने भाई के स्लीपिंग रूम में ले गई जहां थोड़ी देर पहले वह इत्र छिड़क चुकी थी—।

परमेन्द्र ने उसे पलंग पर गिरा दिया और स्वयं उस पर झुकने लगा कि उसके शरीर में शीत लहर दौड़ गई...उसे ऐसा लगा कि किसी ने उसे हवा में उड़ा दिया है...उसने क्रहकहे की आवाज सुनी थी...नारी कण्ठ का अट्टहास—।

वह विद्युत् गति से सम्भल कर खड़ा हो गया—लाली भी

बुरी तरह चौंक कर उठ बैठी—उसने भी किसी स्त्री के व्यंग्यात्मक अट्टहास को सुना था—।

‘कौन—?’ अनायास ही उसके मुँह से निकल गया ।

परमेन्द्र की ज़बान से कोई शब्द नहीं निकला था किन्तु उसका शरीर थरथर काँप रहा था—। वह आवाज़ पहचान चुका था, निश्चित ही यह साकोशा की आवाज़ थी जिसे वह एक बार उस रात रहस्यमय वातावरण में देख चुका था जब वह रत्नाकर को बुलाने पर उसके पास आ रहा था ।

उसकी निगाहें सामने दीवार पर टिकी थीं और विचित्र बात यह थी कि उसे दीवार पर साकोशा खड़ी दिखाई दे रही थी—।

हा ! हा ! हा ! —एक बार साकोशा के होंठ हिले और कमरे में व्यंग्यात्मक अट्टहास गूँज उठा—।

‘परमेन्द्र !’—लाली कुसमुखा कर बोली—‘यह किसकी आवाज़ है—।’

परमेन्द्र नहीं चाहता कि वह लाली को भयभीत करे—। यह सही था कि दोनों पर कामुकता का नशा हिरण हो गया था—।

‘यह क्या था—यह आवाज़ कैसी थी—?’—वह घुटे स्वर में बोली—।

‘कौन सी आवाज़...?’—परमेन्द्र ने बात बनाई ?’ तुम किस आवाज़ की बात कर रही हो लाली !’

‘तुमने कोई आवाज़ नहीं सुनी परमेन्द्र !—लाली को जैसे विश्वास नहीं आया ।

परमेन्द्र ने स्वयं पर काबू किया और फिर नकारात्मक सिर हिला दिया ।

वह उसे वास्तविकता नहीं बताना चाहता था । वह नहीं चाहता था कि लाली को किसी प्रेतात्मा का परिचय देकर उसकी अवस्था भी क्रिस्टा की भाँति हो जाए और उन दोनों का कामुक रहस्य खुलने की आशंका जाग उठे—।

लाली ने कोई उत्तर नहीं दिया था...परमेन्द्र फिर बोला,

तुम्हें भ्रम हो गया होगा लाली ? निश्चित ही इस कमरे में कोई आवाज नहीं गुंजी....।’

‘तब...तब परमेन्द्र !’—वह हकला कर बोली, ‘तब तुम डर कर एकदम सम्भल कर क्यों खड़े हो गए थे—?’

परमेन्द्र चकरा गया...तभी वह सोच कर बोला, ‘मैंने तुम्हारे चेहरे से एक दम रंग उड़ता देखा था..., मैं भयभीत हो गया था कि तुम्हें क्या हो गया है।

कामुक वातावरण तो रहा नहीं था...परमेन्द्र चाहे लाली को तसल्ली दे रहा था किन्तु उसका मन बुरी तरह घड़क रहा था...। वह उस कमरे से जल्द से जल्द निकल जाना चाहता था....।

ठीक उस वक्त दूसरी तरफ...

रत्नाकर और मूर्धा एक नृत्य कक्ष में बैठे थे...सामने मंच पर अत्यन्त ही खूबसूरत रेणुमी पर्दा लहरा रहा था।

उस कक्ष में दर्शकों के रूप में पाँच जोड़े मौजूद थे...। लगभग आठ बजे रत्नाकर और उसकी पत्नी एक ऐसे बंगले में गए थे जहाँ उनका डिनर था—।

निमंत्रण देने वाली दम्पति ने उनका भरपूर स्वागत किया...। वह दम्पति दोनों को एक विशेष कक्ष में ले गए... जहाँ उन्हें ह्विस्की पेश की गई।

निमंत्रण देने वालों में पति का नाम रिचर्ड लास्टर और पत्नी का नाम कौसरा था—।

रिचर्ड यूरोपियन था जब कि कौसरा मध्य पूर्व की रहने वाली थी—।

रत्नाकर की उनसे पहली मुलाकात थी—मूर्धा ने अपने पति को बताया था कि कौसरा उसकी पुरानी परिचित है और वह अपने पति के साथ हिन्दुस्तान की सैर करने आई है।

निःसन्देह कौसरा अत्यन्त ही आकर्षक व्यक्तित्व की युवती थी...रत्नाकर तो कुछ क्षण उसके चेहरे से अपनी नजरें भी नहीं हटा सका था—।

रिचर्ड भी खूबसूरत जवान था—भले ही दोनों अलग-

अलग देश के थे किन्तु यौवन और आकर्षण में दोनों कम नहीं थे—।

उन्हें कमरे में बिठा कर रिचर्ड तो चला गया किन्तु कोसरा ने उसके साथ बैठ कर ह्विस्की पी—, रत्नाकर की नज़रें बार-बार उसके चेहरे पर टकरातीं और उसके हृदय की ज्वाला में वृद्धि हो जाती—।

वह यह जानता था कि उसकी पत्नी भी इस आकर्षण को भांप गई है किन्तु उसके बावजूद वह संकोच नहीं कर सका ।

उसे मिलने वाली सूचनाओं के आधार पर मूर्था चरित्रवान नहीं थी और फिर जिस नवलंग को वह भाई बना कर लाई थी, उस सम्बन्ध पर भी उसे सन्देह था—।

वह यह तो जानता था कि उसकी पत्नी मूर्था का कोई सगा भाई नहीं है, अतः अपनी बीवी का पत्र पाकर वह उद्वेलित हो उठा था किन्तु जब वह नवलंग के साथ आई तो उसने बताया कि वह युवक उसका मौसेरा भाई है और अपनी मृत पत्नी की रूह की खोज के लिए आया है ।

उसने नवलंग से इस विषय पर कभी कोई बात नहीं की थी... उसने इतना भी नहीं बताया था कि वह उसकी पत्नी से मिलती जुलती शक्ल की रहस्यमयी स्त्री को देख चुका है ।

भले ही नवलंग मुगल लाँज में रहने लगा था किन्तु उसे अपनी पत्नी और उसके मौसेरे भाई के सम्बन्ध पर सन्देह था...।

यह दूसरी बात थी कि उसने अभी तक मूर्था से उसके चरित्र के विषय में कोई बातचीत नहीं की थी, वह ठोस प्रमाण के बिना कोई चर्चा करना भी नहीं चाहता था ।

वह स्वयं विलासी युवक था...वासना का अन्धा बन कर वह हर अंजाम को भुला दिया करता था...किन्तु वह अपनी पत्नी का चरित्रहीन होना पसन्द नहीं करता था ।

अपनी कामुकता को भूल जाया करता था किन्तु जब उसे मूर्था के विषय में मिलने वाली सूचनाओं की याद आती थी तो अशान्त हो जाता ।

फिर भी ठोस प्रमाण के बिना मूर्या के सामने उसके चरित्र के विषय में कोई मामला नहीं रखना चाहता था—।

पर...पर आज कौसरा से मिल कर उसे एक नई बात का पता चला...कि वह अपनी पत्नी के माध्यम से नई रंगीन दुनिया में विहार कर सकता है...।

शराब का दौर चलता रहा और वह तीनों जाम पर जाम उड़ाते चले गए...कभी कभी कौसरा और रत्नाकर की आंखें उलझ जातीं...।

मूर्या भांप गई थी, इस तथ्य को वह भली प्रकार जानता था किन्तु उसने संकोच नहीं किया...।

तभी कौसरा उठ खड़ी हुई—बोली—‘मैं अभी आई—।’

वह बाहर निकल गई...पति पत्नी ने एक दूसरे को देखा ।

रत्नाकर झेंप सा गया...मूर्या मुस्करा कर धीरे से बोली, ‘कौसरा पसन्द है क्या ?’

वह दोनों काफी फावड थे किन्तु उन्होंने कभी किसी दूसरे स्त्री पुरुष के विषय में ऐसी बातचीत नहीं की थी—।

‘क्या मतलब है तुम्हारा—।’

मूर्या फिर मुस्करा पड़ी, बोली—‘इशारों में तो बात नहीं कर रही...।कौसरा पसन्द हो तो मैं तुम दोनों को एकांत का अवसर दे सकती हूँ—।’

रत्नाकर पर भी शराब का हल्का सा नशा था, बोला, ‘खूबसूरत चीज किसे पसन्द नहीं होती—?’

तभी कौसरा वापस आ गई, शराब का दौर फिर से चलने लगा...।

अब रत्नाकर संकोचहीन होकर अपनी आंखों की प्यास बुझाने लगा...दोनों की कई बार नज़रें मिलीं ।

सहसा मूर्या उठ खड़ी हुई...बोली—‘मैं बाँयछम में जाऊँगी ।’

‘बाहर निकल कर दाईं तरफ मुड़ जाना ?’ कौसरा ने कहा ।

वह चली गई, दोनों ने एक दूसरे को देखा, कौसरा बोली, 'आप जानते हैं कि मूर्था जानबूझ कर चली गई है।'

रत्नाकर इस वास्तविकता से परिचित था, फिर भी उसने बात बनाई 'क्यों...?'

'एक बार उसने मुझे कहा था कि रत्नाकर को देख कर मैं अपने मन पर काबू नहीं पा सकूँगी और वह ताड़ गई है कि उसकी बात सच निकली।'

'तब तो उसे नाराज हो जाना चाहिए था—।'

'अगर केवल मैं बेकाबू हो जाती तो शायद ऐसा ही होता पर वह तुम्हारी नजरों को भी भांप गई थी—। उसने मुझे बीसियों बार कहा है कि वह अपने शौहर की खुशी के लिए बड़ी कुर्बानी कर सकती है—।'

कौसरा का हाथ मेज पर पड़ा था...उसने हाथ पर अपना हाथ रख दिया।

वह अपना हाथ खींचती हुई बोली, 'जितना प्यार तुम से मूर्था करती है, रिचर्ड मुझसे वैसा प्यार नहीं करता जनाब ! वह मेरी हर खाहिश को पूरा नहीं करना चाहता—।'

रत्नाकर उसका भाव समझ गया, 'तभी वह फिर बोली, अभी कुछ दूसरे मेहमान आने वाले हैं...। डिनर के बाद डांस होगा...जब नग्न जवानियां के पायल थिरक रहे होंगे, उस वक्त रिचर्ड व्यस्त होगा, तब मैं तुम्हें बुलवा भेजूँगी।'

इतना खुला कामुक निमंत्रण पाकर रत्नाकर की आग भड़क उठी...वह कुछ कहने लगा तो बाहर से पदचाप सुनाई दी...। स्पष्ट था कि मूर्था वापस आ रही थी—। वे खामोश हो गए...।

लगभग आध घंटा के बाद रिचर्ड से उन तीनों को बुलवा भेजा—डाईनिंग हाल में अन्य चार दम्पतियाँ मौजूद थी—काक टेल डिनर शुरू हुआ—और काफी देर वातावरण रंगीन बना रहा—।

रत्नाकर अन्य जवानियों में स्वयं को मौजूद पाकर मूर्था को काम की औरत समझने लगा था पर उसके कानों में कौसरा

के शब्द गूँज रहे थे और उसे नृत्य का इन्तजार था... आखिर वह वक्त आन पहुँचा...

उस वक्त रत्नाकर अन्य कुछ लोगों के साथ नृत्य कक्ष में मौजूद था... उसके सामने मंच पर खूबसूरत पर्दा फहरा रहा था...

उस कक्ष में पाँच दम्पतियाँ थीं... और सभी के सामने मेजे रखी थीं... जिन पर शराब का सामान पड़ा था।

सहसा कहीं से घंटों की आवाज़ सुनाई दी... कमरे का प्रकाश लाल सी मद्धिम रोशनी में बदल गया और फिर धीरे-धीरे पर्दा उठा... सामने पाँच अर्धनग्न जवानियों के पायल बज उठे...

नृत्य काफी उत्तेजक था... पाँच दस मिनटों में ही कामुक वातावरण में जबरदस्त उत्तेजना आ गई... शराब का नशा... कामुक वातावरण और भड़काता हुआ नृत्य... दर्शकों को तो क्या, नर्तकियों को भी अपना होश नहीं रहा... ऐसा प्रतीत होता था जैसे नृत्य करने वाली युवतियाँ भी शराब के नशे में मदहोश हैं।

ऐसे विलासी वातावरण में उन दर्शकों की क्या स्थिति हो सकती है जो पिछले कई घंटों से सुरा और सुन्दरी के संग खेल रहे थे...

वातावरण में शराब और वासना की गंध बढ़ती जा रही थी... कामुकता अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी... कक्ष में बैठे पुरुष स्त्रियाँ आलिंगन में बंध गए थे—।

निःसन्देह रत्नाकर और मूर्धा एक दूसरे से लिपटे हुए थे किन्तु रत्नाकर के मस्तिष्क में अब भी कौसरा के शब्द अंकित थे कि वह उसे नृत्यकाल में बुलवाएगी... वह उसी बुलावे का इन्तजार कर रहा था।

उसे बहुत ज्यादा देर तक इन्तजार नहीं करना पड़ा... उसके पास एक महिला आई।

वह उस पर झुक कर बोली—‘मेडम कौसरा याद फर्मा रही हैं।’

‘बेस्ट विंशज !’—मूर्था बहकती हुई बोली, ‘कोसरा और तुम्हारी रंगीन रात—’

रत्नाकर ने उसका पूरा वाक्य भी नहीं सुना कि उठ खड़ा हुआ ।

मूर्था ने उसका हाथ दबाकर उसे अलविदा दिया और फिर नृत्य देखने लगी—। वह संतुष्ट थी—, सारा काम योजना के अनुसार हुआ था ।

लगभग पांच मिनट के पश्चात ही वह भी उठी और जिधर उसका पति गया था—उसकी विपरित दिशा की ओर निकल गई ।

कमरे से बाहर निकलते ही उससे नवलंग टकरा गया—। वह उसी इन्तजार में खड़ा था ।

‘क्या बना...?’ मूर्था ने पूछा ।

‘रत्नाकर कोसरा के पास पहुँच गया है—’ नवलंग ने उसे बताया, ‘अब वह कल सुबह ही आएगा—। उसे किसी भी कीमत पर पता नहीं लगना चाहिए कि मैं भी इस पार्टी में मौजूद था ।’

‘ऐसा ही होगा ।’

‘पाँचवें कमरे में चली जाओ—’ नवलंग जैसे उसे आदेश दे रहा था, ‘वहाँ एक करोड़पति का बेटा तुम्हारी जबानी का इन्तजार कर रहा है । तुम किसी भी कीमत पर उसे अपना पता नहीं बताओगी—।’

मूर्था ने मौन नेत्रों से उसे देखा—‘हिन्दुस्तान में कोसम्बी के रूप में तुम्हारा काम करने का पहला अवसर है, चाहे तुम यूरोप में ऐसे कितने ही अवसरों पर कामयाबी से काम कर चुकी हो लेकिन यहां नाकाम हो गई तो उसके अंजाम से मैं तुम्हें बचा नहीं पाऊंगा । अजीम जादूगर लागूना की प्रेतात्मा से कोई बात छिपी नहीं रहती ।’

मूर्था का सारा जिस्म थर्रा गया...। उसने अपने आप को सम्भाल कर कहा, ‘क्रिस्टा का क्या बना...।’

वह अभी तक बेसुध पड़ी है...। लाली ने परमेन्द्र को

बुलावा भेजा था, उसके बाद जो कुछ होना चाहिए था, वही हुआ। तुम्हें उन दोनों पर भी काम करना है। अब तुम पांचवे कमरे में जाओ—।”

वह जाने लगी तो नवलंग ने उसे एक दम आलिंगन में ले लिया...। कुछ ही देर में मूर्था पांचवे कमरे की तरफ बढ़ी जा रही थी...।

दूसरी ओर रत्नाकर कौसरा के पास पहुंचा तो वह एक सोफे पर बैठी थी...। उसने रत्नाकर को अपने सामने सोफा चेयर पर बैठने का इशारा किया।

वास्तविकता यह थी कि रत्नाकर उसका साक्षात्कार पाकर निराश सा हुआ। वह कामुकता की आग में जलता हुआ वहां पहुंचा था किन्तु कौसरा को देख कर उसका दिल डूबने लगा।

उसका अनुमान था कि कौसरा उसके इन्तजार में नग्न प्रायः सी खड़ी होगी किन्तु उस वक्त कौसरा ने लम्बा सा काला चौगा पहना हुआ था...उसके गले में मोटे मोटे लाल पत्थरों की माला थी...बाल खुले थे...मस्तक पर रुमाल बंधा हुआ था...।

उसने मेकअप नहीं किया हुआ था किन्तु फिर भी वह काफी खूबसूरत दिखाई दे रही थी...तब यह अनुमान भी लगाना कोई कठिन नहीं था कि उस वक्त कौसरा कामुक वातावरण में विहार करने के मूड में नहीं है।

वह कौसरा के सामने बैठा विचारों में तल्लीन था...उसका हृदय निराशा से भर चुका था। वह सचमुच समझ नहीं पा रहा था कि कौसरा की दशा में इस हद तक परिवर्तन कैसे हो गया...।

कुछ घंटे पहले तो वह उसके साथ बैठी शराब पी रही रही थी—उसकी नजरों के साथ नजरें मिला रही थी और अपनी वासनामय स्वीकृति देकर उसने रंगीनियों के लिए बुलवाया था किन्तु अब ग्रीवा के ऊपरी भाग के अतिरिक्त उसका कोई भाग नंगा नहीं था...।

रत्नाकर !—सहसा कौसरा ने मौन भंग किया, ‘आज मैं

तुम्हारा साथ नहीं निभा सकूँगी—। आज रात तुम्हें मैं नई जवानी पेश कर रही हूँ—।’

‘नहीं कौसरा !’—रत्नाकर ने बात बनाई मैं चरित्रहीन नहीं हूँ कि मुझे पर-स्त्री का समागम अवश्य करना है ।’

‘मैं भी पर-स्त्री हूँ रत्नाकर !’

‘दिल की ही तो बात है कौसरा ! तुम मुझे पसन्द आई थी और सबसे बड़ी बात, यह थी कि मैं रिचर्ड से दोस्ती बढ़ाना चाहता हूँ—अगर तुम मेरे साथ रहा तो मैं अपने मकसद में कामयाब रहूँगा ।’

कौसरा जानती थी कि वह व्यर्थ की बात बना रहा है वरना उससे अपने सामने बैठे युवक की विलासिता छिपी नहीं थी—।

‘तुम अपने आप को न छिपाओ रत्नाकर ! मैं तुम्हें अच्छी तरह जानती हूँ । परमेन्द्र के साथ तुम्हारे कई काम ऐसे ही हैं जैसे तुम करने जा रहे हो—। तुम दूसरे कमरे में चले जाओ—’ उसने संकेत से कमरा बताते हुए कहा, ‘उसी कमरे की बाईं ओर एक अन्य कमरा है । एक मदहोश जवानी तुम्हारा इन्तजार कर रही है ।’

रत्नाकर का मन चाह रहा था कि वह तेजी से दूसरे कमरे में चला जाए किन्तु वह इस प्रकार उत्सुकता का प्रदर्शन नहीं करना चाहता था ।

‘रत्नाकर !’—कौसरा बोली, ‘अब तुम यहां से चले जाओ—मेरे हुक्म की तामील करो—वरना सब कुछ बरबाद हो जाएगा ।’

रत्नाकर आश्चर्य चकित होकर उसे देख रहा था—। कौसरा की आवाज परिवर्तित हो गई थी—। उसका चेहरा एक दम लाल हो गया था और उसका सिर मद्धिम सी गति में झूलने लगा था—।

‘जाओ—! नौजवान ! यहां से चले जाओ वरना सर्वनाश हो जाएगा—।’

कौसरा की आंखें बन्द हो चुकी थी और वह सिर झुकाए

परिवर्तित स्वर में बोल रही थी ।

रत्नाकर के मुख पर घबराहट की रेखाएं बिखर गईं—
और वह तेजी से उठ कर दूसरे कमरे की तरफ चल पड़ा ।

वह अभी द्वार तक भी नहीं पहुँचा था कि उसे महसूस हुआ कि कहीं से तेज हवा के झोंके आने शुरू हो गए हैं ।

वह डर गया—उसने तेजी से कदम बढ़ाए कि वह बुरी तरह चौंक उठा—उसके सामने का द्वार एक दम खुल गया और उसके साथ हवा का तेज झोंका टकराया ।

वह सम्भल नहीं सका और उसने दरवाजे का सहारा लेने का प्रयास किया—पर यह क्या...?

वह बुरी तरह घबरा गया—दरवाजे के दोनों पट जोर-जोर से आगे पीछे होने लगे—।

एक पट पीछे हटता तो दूसरा आगे और इसी प्रकार दोनों पट द्रुतगति से हिल रहे थे—।

उसने घबरा कर ग्रीवा घुमाई और यह देख कर आश्चर्य चकित रह गया कि कौसरा का सिर बुरी तरह झूल रहा है—उसके बाल इस प्रतिक्रिया से इधर से उधर उड़ते दिखाई दे रहे हैं और उसे अपना भी होश नहीं है ।

उसकी आंखें बन्द थीं—उसका सिर झुका हुआ था—किन्तु उसे फिर भी पता चल गया कि रत्नाकर अभी तक दूसरे कमरे में नहीं गया—।

‘रत्नाकर !’—उसकी उखड़ी-उखड़ी आवाज सुनाई दी, ‘यहां से चले जाओ...वर्ना प्रेतराज गोमाना तुम्हारा सर्वनाश कर देगा ।’

‘प्रेतराज—! —उसे ऐसा आभास हुआ जैसे उसे उठाकर किसी ने उस हवा में उछाल दिया है ।

उसे कौसरा की काली वेशभूषा की पहली बार वास्तविकता का अनुमान हुआ—।

जादूगरनी...! ...ओह !!—उसे एकदम मेडम सोमेसंस का ख्याल आ गया—, फिर साकोशा की ओर ध्यान पलट गया—।

प्रेतात्मा—! नहीं!!—उसका दिल बुरी तरह धड़कने लगा—।

१. निकोला के संग में उसे मेडम सोमैंसस की जादूगरी का पता चला था और तब उसे ज्ञात हुआ था कि कानून के चंगुल से सोमैंसस भाग निकली है किन्तु उसके ठिकाने पर पुलिस का कब्जा हो गया है।

उसे ऐसा लगा जैसे भारत की सरजमीन पर फिर से कुछ बाह्य जादुई ताकतों ने आगमन किया है और वह उसी जाल में जकड़ा गया है।

वह कौसरा के शब्दों के पश्चात् वहाँ नहीं रुका और तेजी से द्वार की ओर जाने लगा कि हिलते हुए पटों के साथ टकरा गया...।

उसके सिर पर चोट आई और वह लड़खड़ा कर गिर पड़ा...कुछ हा देर में वह अचेत हो गया था।

रत्नाकर की चेतना लौटी तो वह विस्मित सा उस सुसज्जित कमरे को देखने लगा जिसके एक किनारे पर पड़े हुए पलंग पर वह लेटा हुआ था।

वह सचमुच ही आश्चर्य चकित था...। वह लखपति बाप का बेटा था...उसके घर में कीमती साज सामान था किन्तु इतना शानदार और साज सज्जा से परिपूर्ण कक्ष तो उसने आज तक नहीं देखा था।

वह गद्देदार रेशमी बिस्तर पर उठ कर बैठ गया..., वह कुछ भी तो समझ नहीं पा रहा था।

उसे पिछली बात याद आ रही थी...कौसरा पर जादुई प्रभाव और फिर प्रेतराज गोनामा की चर्चा...।

उसकी स्मृति से उसका हृदय धड़क जाता पर उस समय वह जिस प्रकार के सुसज्जित कक्ष में मौजूद था...उसकी भविष्यत् रंगीनियों की कल्पना करके वह बहारों में विहार करने लगा...।

१. पढ़िए—शेतान की दुल्हन (एस० एन० कवल)

कौसरा ने बताया था कि एक मदहोश जवानी उसका इन्तजार कर रही होगी...और वह अपने बिलासी स्वाभाव के कारण उसी यौवना की प्रतीक्षा में था...

तभी वह चौंक पड़ा..., द्वार खुला और एक अत्यन्त ही आकर्षक महिला भीतर प्रविष्ट हुई—।

वह कौसरा पर आसक्त हो गया था किन्तु उस समय जो युवती उसके सामने खड़ी थी, उसकी में तुलना कौसरा का यौवन नगण्य था ।

वास्तव में ही वह उस आगंतुका के चेहरे से अपनी नज़रें नहीं हटा सका था...

“रत्नाकर !” वह उसके निकट आ कर बोली, मुझे तुम्हारी खिदमत के लिए भेजा गया है...क्या मैं तुम्हारे लिए शराब लाऊं—।

शराब और शबाब...?

दोनों की कल्पना करके ही रत्नाकर का शरीर तप उठा... और कुछ ही देर में वह शराब का पैग हाथ में लिए मदहोश यौवना के शरीर से खिलवाड़ कर रहा था ।

वह इतना उत्तेजित हो उठा था कि उसे अपनी बाहों के जाल में जकड़ी हुई युवा महिला का नाम पूछना भी ध्यान में नहीं रहा था...वह उसके जिस्म को नोच लेना चाहता था...

वह वासना में बिल्कुल अन्धा हो चुका था...युवती उसके कामुक प्रतिक्रियाओं में पूर्ण सहयोग दे रही थी...पर तभी...

उसे जैसे बिजली का करण्ट लगा हो...वह उचक कर पीछे हट गया...उसके हृदय की घड़कन चरम सीमा पर पहुँच गई और आतंक से उसका अंग अंग कपकपाने लगा...

वह फटी फटी नज़रों से उस युवा स्त्री को देख रहा था जिसे थोड़ी ही देर पहले वह अपनी वासना पूर्ति का माध्यम समझ कर उसके जवान जिस्म से खिलवाड़ कर रहा था ।

उस युवती की शक्ल बदल गई थी और रूप का यही परिवर्तन उसके सारे शरीर को कपकपाने का साधन बना

था....।

उसके सामने साकोशा मौजूद थी...प्रेतात्मा साकोशा... जिसकी कल्पना से ही वह थर्रा उठता था ।

तब क्या वह अब तक एक प्रेतात्मा को प्यार करता रहा है...उसके आलिंगन में बंधा रहा था....।

“नहीं ! नहीं ! ।...उसके दिल की धड़कन कम नहीं हुई थी....।

वह भयभीत हो कर पीछे हट गया...साकोशा उठ कर हवा में खड़ी हो गई थी....।

“मेरे सहबूब बन चुके हो रत्नाकर ! साकोशा की आवाज सुनाई दी, ‘मेरे साथ चलोगे ना....?’

“नहीं...मैं कहीं नहीं जाऊँगा ।” उसका जिस्म तूफान में कदली की तरह हिल रहा था—।

हाः हाः हाः...सोकाशा ने भरपूर कहकहा लगाया और फिर रत्नाकर को ऐसा महसूस हुआ कि किसी ने उसे बुरी तरह झंझोड़ दिया है....।

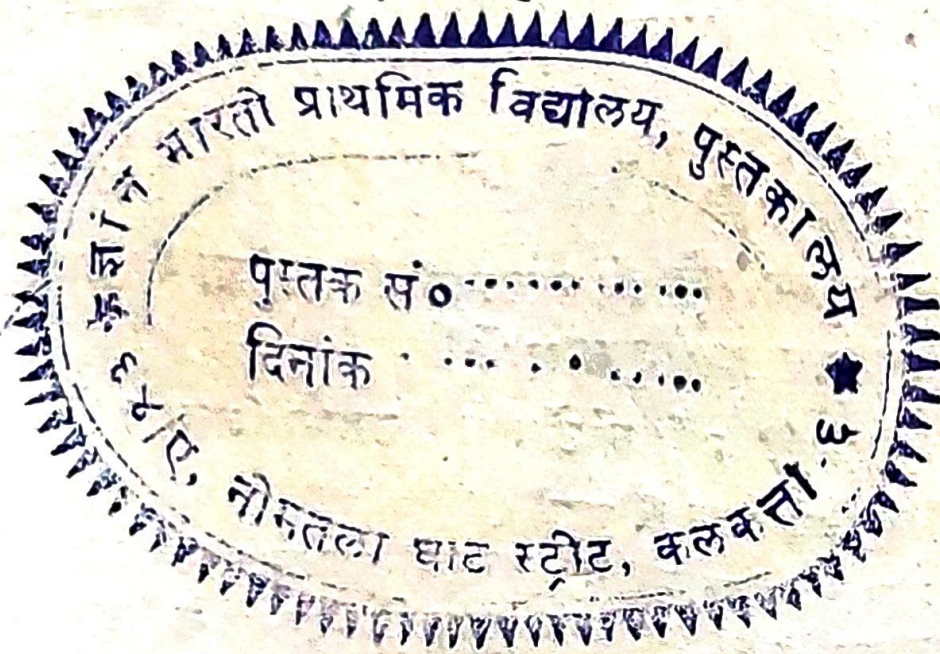
साकोशा का सारा शरीर पुनः परिवर्तित हो गया था....। रत्नाकर उसे पहले भी रहस्यमयी स्थिति में देख चुका था । तब वह काफी खूबसूरत दिखाई दे रही थी...थोड़ी देर पहले भी उसका भरपूर और जवान रूप था किन्तु अब उसका शरीर बिल्कुल काला पड़ चुका था...उस काली कलूटी साकोशा के दो दांत बाहर निकले हुए थे....।

एक दम काले चेहरे पर सफेद दांत और आंखों में लाली— रत्नाकर को ऐसा महसूस हुआ जैसे अगर वह भयानक शक्ल की प्रेतात्मा उसके सामने कुछ देर तक खड़ी रही तो उसके हृदय की गति रुक जाएगी—।

“मेरे नजदीक आओ रत्नाकर ! मेरे सहबूब !! —” काली कलूटी प्रेतात्मा अपने बाजू फैला कर उसकी तरफ कदम बढ़ाती हुई बोली, ‘आओ मुझे गले लगा लो—।’

नहीं ! नहीं !! नहीं !!! —रत्नाकर आंतकित स्वर में चिल्लाया और फिर उसके कण्ठ से डरावनी चीख उभरी ।

हा: हा: हा:—खोफनाक शक्ल की रहस्यमयी चुड़ेल भयानक अट्टहास कर उठी किन्तु रत्नाकर ने उसे नहीं सुना—। वह सुनता भी कैसे—? वह फर्श पर लड़खड़ाती टांगों से गिर कर बेहोश हो चुका था—। साकोशा का अट्टहास वातावरण को बराबर भयानक बनाए जा रहे थे—।



चार

नीलम गढ़ी का पर्वतीय क्षेत्र...

जादूगर लागूना की विशेष कोसम्बी कोलम्पा एक छोटे से खूबसूरत तख्त पर बैठी थी...उसके सामने दीवार के साथ लाल खोपड़ी लगी थी...

उस वक्त कोलम्पा ने अति खूबसूरत शृंगार किया हुआ था...। वह लाल खोपड़ी को निनिभेष दृष्टि से देख रही थी...उसका चेहरा उत्तेजित हो उठा था...

कुछ देर वह उसी स्थिति में बैठी रही...फिर उसने अपने दोनों हाथ आलिंगित किए और जोर से ऊपर नीचे हिलाने लगी...

‘लागूना अजीम ।’—वह बोलती चली गई—, ‘आप ने मुझे याद फर्माया था...। मैं हाज़िर हूँ ।’

सहसा उसके हाथ रुक गए...फिर उसका सारा शरीर कपकपा गया...उसका सिर धीरे २ हिलने लगा...खोपड़ी की आंखों में से शोले निकलने लगे...

अजीम जादूगर ।—कोलम्पा उखड़े स्वर में बोली, 'मैं तुम्हारे कदमों की लौण्डी हूँ हज़ूर...' । मेरे लिए हुक्म बता-इए ।'

'बाल योगी रंजन हिन्दुस्तान में आ गया है कोलम्पा ।'—कमरे में कहीं से भारी आवाज़ सुनाई दी ।

'मैं सुन चुकी हूँ मेरे सरताज !'

'तब भी वह हिमालय की गुफाओं में अपनी साधना कर रहा है...' । तुम भूली नहीं होगी कि तुम्हें शैतान की दुल्हन की पदवी मिल चुकी है ।'

'मैं आप के हुक्म पर अपने सारे जादू का कमाल दिखा सकती हूँ मेरी सरकार ।'

'वह सामेसंस से इन्तकाम चाहता है...' उसके अधिकार में शोलामन प्रेत है—क्या तुम उसे अपने अधिकार में नहीं कर सकती ।'

'मैं उसे उंगुलियों पर नचा सकती हूँ अजीम जादूगर ।'

'तुम कल रात से अपना काम शुरू करोगी कोलम्पा ।'

'आप की आज्ञा होगी तो अभी से शोलामन को बस में करने का काम शुरू कर दूंगी ।''

आज रात—आज रात तुम मेरे पास आओगी कोलम्पा — । आज रात हम अपनी दुल्हन को अपने काम महल में रखेंगे— ।

कोलम्पा का सारा शरीर थर्रा गया, किन्तु वह सम्भल कर बोली, "मैं आप की दासी हूँ" अजीम लागूना—।"

हा : हा : हा ! तैयार रहो—हा : हा : हा ! — भयानक अट्टहास उभरा और फिर खामोशी छा गई— ।

खोपड़ी से शोले निकलने बन्द हो गए—कोलम्पा बुत्त सी बनी उस खोपड़ी को देखने लगी— ।

उसका हृदय बुरी तरह धड़कने लगा था—उस पर आतंक की रेखाएँ सी छा गई थीं— ।

इसमें कोई सन्देह नहीं था कि जादूगर लागूना ने उसे शैतान की दुल्हन की पदवी दी हुई थी और वह यह भी

जानती थी कि हजारों कोसम्बियों में से किसी युवती को ही ऐसा सौभाग्य प्राप्त होता है किन्तु इस पदवी तक पहुँचने के लिए उसे कितनी यातनाएँ सहन करनी पड़ी थीं—यह वह ही जानती थी—।

जादूगर लागूना ने पश्चिम की जिस जादुई परम्परा को अपनाया हुआ था— उसकी बुनियाद ही काम वासना थी—।

उसे शैतान की दुल्हन बनने के लिए इतना निर्लज्ज होना पड़ा था कि पशुता भी उस निर्लज्जता के सामने लज्जित हो जाती थी—।

इसमें सन्देह नहीं कि कामुकता की सभी मोड़ें पार करने के पश्चात भी उसे जादुई साधना का नाम दिया जाता था और उसे इस साधना को पूरा करने के लिए निर्लज्ज होने के साथ कितनी ही यातनाओं को सहन करना पड़ा था किन्तु फिर भी वह इस उद्देश्य से सह गई कि शैतान की दुल्हन बनने के पश्चात वह लागूना से दूर चली जाएगी—तब कामुक यातनाओं से उसका पिण्ड छूट जाएगा।

ऐसा ही हुआ, ... भारत की सीमाओं से हजारों मील दूर अपने जादुई महल में रहने वाले लागूना ने उसे अपना पूरा प्रशिक्षण देने के पश्चात नीलम गढ़ी में भेज दिया और ऐसा प्रबन्ध कर दिया कि वहाँ के अधिवासी उसके जादू की धाक को स्वीकार कर लें...।

जादूगरनी कोलम्पा सन्तुष्ट थी... सारा काम पूर्वयोजित प्लान के अनुसार ठीक हो गया... पर तभी उसे पता चला कि नीलम गढ़ी के क्षेत्र में स्थित पर्वतीय गुफाओं में अजीम लागूना स्वयं आने वाले हैं...। क्यों...? उस समय कोलम्पा को इसका कारण पता नहीं चला पर जब प्रेतराज गोनामा भी वहाँ पहुँच गया तो उसे मालूम हुआ कि किस लक्ष्य से लागूना वहाँ आया है।

उसे लागूना के आदेशों का पालन करने में कोई इन्कार नहीं था किन्तु वह जानती थी कि उसे वहाँ लागूना की वासना पूर्ति का भी साधन बनना होगा और यह तथ्य उसके लिए

अत्यन्त ही कष्टदायक था परन्तु वह कर भी क्या सकती थी— ।

आज फिर लागूना ने उसे अपने काम महल में बुलवाने का प्रोग्राम बनाया था और वह उसी ख्याल से परेशान हो गई थी— ।

सहसा वह सम्भल कर उठ खड़ी हुई—उसे लागूना के आदेश का ध्यान आ गया—उसे तैयार होना था— । निश्चित ही उस आदेश की अवज्ञा कर के अपनी मौत का खतरा मोल नहीं लेना चाहती थी— ।

वह दूसरे कमरे में चली गई—तब तक वह स्वयं को लागूना की रहस्यमयी कामुकता की पूर्ति के लिए स्वयं को तैयार कर चुकी थी—अब उसे मेकअप करना था— ।

वह दूसरे कमरे में लगभग आध घन्टा रही और जब वह पुनः पहले कमरे में आई तो उसका रूप भी अत्यन्त रहस्यमयी हो चुका था ।

वह जन्मजात नग्न थी किन्तु उसके शरीर पर कितने ही स्यानों पर चन्दन का हल्का सा लेप किया हुआ था— ।

उसके बाल बिल्कुल बिखरे हुए थे—उसके गोरे चेहरे पर कई जगहों पर काले टीके लगे हुए थे—और फिर उसकी सफेद छाती पर लाल रंग से मौत का निशान बना हुआ था...वह अत्यन्त ही विचित्र लग रही थी— ।

वह पहले कमरे में फिर से लाल खोपड़ी के सामने आई और अपने हाथों को आलिंगित कर के जोर २ से ऊपर नीचे हिलाने लगी ।

‘अजीम जादूगर—।’ वह बोली ।

‘मैं तुम्हारी सेज को सजाने के लिए तैयार हूँ— ।’

तभी खोपड़ी की आंखों से शोले निकलने लगे...उसका सिर झूलने लगा...उसके बिखरे बाल इधर उधर हिलने लगे— ।

कमरे में भारी आवाज गूंजी—,

‘काम महल का हर जर्न तुम्हारा स्वागत करेगा । हम

तुम्हें मिलने के लिए बेताब है—।’

‘मैं आपके कदमों की खाक हूँ मेरे सरताज— ।’

‘चली आओ !’—भारी आवाज़ फुसफुसाहट में परिवर्तित हो गई—, हमारे पास चली आओ । हम तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं—।’

उसका सिर झूलता हुआ रुक गया—खोपड़ी की आंखों से निकलने वाले शोले लुप्त हो चुके थे—वह टकटिकी बांधे लाल खोपड़ी को देख रही थी... ।

तभी कहीं से उसके कानों में पुनः फुसफुसाहट पड़ी, ‘वहाँ मत रुको शैतान की दुल्हन ! हमारे पास चली आओ !’

ऐसा प्रतीत होता था जैसा कोलम्पा को अपना होश ही नहीं है—वह उठ खड़ी हुई और यत्रं वत् बाहर की तरफ चल पड़ी... ।

‘आ जाओ— । चली आओ ।’—उसे फिर से फुसफुसाहट सुनाई दी— ।

वह उसी स्वर के पीछे चलती गई—यंत्र सी बनी—जैसे उसे अपने विषय में कुछ भी पता नहीं था—।

लगभग बीस मिनट के पश्चात वह एक पर्वतीय कमरे में प्रविष्ट हुई जिस में कंकाल मौजूद था— ।

वह उस हड्डियों के पिंजर के सामने खड़ी हो गई... ।

‘कोलम्पा— !’ कहीं से फिर फुसफुसाहट सुनाई दी—
‘प्रेतराज गोमाना का इन्तजार करो... ।’

उसी वक्त जैसे कोलम्पा को होश आ गया—उसने चेतन होकर इधर उधर देखा और तब उसकी नज़रें सामने के कंकाल पर अटक गईं ।

उसके देखते २ कंकाल धुआं बन गया और फिर वह हल्की सी आवाज़ में चीख पड़ी— ।

उसे किसी अदृश्य व्यक्तित्व ने अपने दोनों बाजूओं में उठा लिया ।

वह इस तरह दिखाई दे रही थी जैसे वह हवा में पीठ के बल लेटी हुई उड़ रही हो ।

पाँच सात मिनट के पश्चात् ही वह एक ऐसे कमरे में पत्थरीले फर्श पर लेटी हुई थी जिसके वातावरण में कई प्रकार की सुगंधियाँ फैली हुई थी— ।

उसकी आँखें खुली थीं—सच्चाई यही है कि उस वक्त वह अपने बस में नहीं थी— ।

जब से वह लाल खोपड़ी के सामने से हटी थी, तबसे उसे भीतरी चेतना थी किन्तु उसका अपने आप से नियंत्रण हट गया था— ।

वह बोलना चाहती थी पर बोल नहीं सकती थी... वह रुकने की इच्छा रखती तो ऐसा करने में समर्थ नहीं थी... ।

उस वक्त भी अदृश्य व्यक्तित्व उसे फर्श पर लिटा गया था—, उसके नेत्र खुले थे—, वह सब कुछ सोच समझ सकती थी किन्तु बोलने की इच्छा रखने के बावजूद बोल नहीं सकती थी ।

उसे ज्ञात था कि उसे किस प्रकार की कामुक यातनाएँ सहन करनी पड़ेंगी—किन्तु वह यह भी निश्चित रूप से समझे बैठी थी कि उसे जादूगर लागूना के साथ रहस्यमय कामुक सम्पर्क बनाना ही पड़ेगा, यही कारण था कि उसके लिए वह स्वयं को पूरी तरह तैयार कर चुकी थी— ।

ऐसे ही वक्त में नीलम गढ़ी की बस्ती के एक मकान में पंच कोबरा एक व्यक्ति से बात चीत कर रहा था— ।

पंच कोबरा ने मोटे कपड़े पहन रखे थे किन्तु उसका आँखों में खून की लाली उभरी हुई थी—उसके चेहरे की कठोरता से उसका स्वभाव स्पष्ट रूप से प्रकट हो रहा था ।

उसकी आयु लगभग पचास वर्ष की थी और उस वक्त वह काफी चिंतित दिखाई दे रहा था ।

वह कभी सिद्धहस्त सपेरा था—वह अत्यन्त ही खतरनाक एवं विषैले साँपों को आसानी से पकड़ कर अपने बस में कर लेता था— ।

वह ज़हरीले साँपों की खोज में खतरनाक घने जंगलों में जाया करता— । उसे कई प्रकार के व्यक्तियों से मुलाकात होती— ।

इसी अवधि में उसे जादू सीखने का शौक चुराया और अन्त में इस कला में भी वह पारंगत हो गया—और नीलम गढ़ी में आकर रहने लगा...यह दस वर्ष पहले की बात है।

धीरे २ उसके जादू की धाक बैठती गई और वह कबीले की मालिका का विश्वास पात्र बन गया...तब इस कबीले की मालिका नारिमा थी—।

लगभग डेढ़ वर्ष पहले शामी कबीले की मालिका नारिमा ने उसे कबीले का पंच बना दिया—वक्त सुचारु रूप से बीतता चला गया...।

लगभग चालीस पचास दिन पहले नारिमा रात को किसी गुफा में अकेली गई और फिर वापस नहीं आई—कबीले में कुहराम मच गया।

कुछ दिन तक खोज होती रही...फिर बड़े बूढ़ों की मीटिंग बैठी...और नई मालिका के चुनाव की तैयारी होने लगी—।

पंच कोबरा और अन्य कुछ चौधरियों ने सलमीना के नाम की सिफारिश की—।

सलमीना शामी कबीले की पहली मालिका नारिमा की निकटतम साथी थी और अपने ढंग के जादू पर कमाल रखती थी—।

लगभग बत्तीस वर्षीय युवती सलमीना की कबीले में इज्जत थी और प्रायः सभी को विश्वास था कि मालिका के रूप में उसका चुनाव निश्चित है किन्तु अभी दो चौधरियों ने कोलम्पा की सिफारिश की—।

‘कोलम्पा— ! कौन कोलम्पा...?’ वहां बैठे कई चौधरियों ने आश्चर्य से पूछा—।

जिन दो चौधरियों ने कोलम्पा के नाम की सिफारिश की थी, उन्होंने बताया कि वह इन दिनों नीलम गढ़ी की उत्तरी सीमा में बाहर से आकर अधिवास बनाए हुए हैं—और वह शामी कबीले में रहना चाहती है—।

मालिका और पंच... ? शामी कबीले की परम्परा के अनुसार यह आवश्यक नहीं था कि वे दोनों इसी कबीले के सदस्य

हों...। यह दोनों पदवियां योग्यता के आधार पर जानबूझ होती थीं... ।

तब कोलम्पा और सलमीना की जादुई कला की प्रतियोगिता करवाई गई... और परिणाम आश्चर्यजनक निकला... । कोलम्पा की तुलना में सलमीना की कला बहुत ही कम थी... ऐसी स्थिति में पंच कोबरा के चाहने पर भी सलमीना मलिका नहीं बन सकी... ।

उस के पश्चात शामी कबीले की मलिका के रूप में ऐसे २ कार्य हुए जिन्हें पंच कोबरा बिल्कुल पसन्द नहीं करता था किन्तु उसे इस बात का एहसास भी भली प्रकार से हो गया था कि उस बस्ती के कुछ चौधरी कोलम्पा के पक्ष में पूरी तरह हैं और इसी सवाल पर कबीले में फूट पड़ सकती है... ।

उस वक्त पंच कोबरा अपने सामने बैठे युवक के साथ इसी विषय पर बातचीत कर रहा था ।

उस युवक के चेहरे पर छोटी २ दाढ़ी थी... उसके बाल घने थे और दो दिन पहले जब वह पंच कोबरा को मिलने आया था तो उसने पश्चिमी जादूगरों जैसे कपड़े पहन रखे थे... ।

उसने कोबरा को बताया था कि वह शामी कबीले में कुछ दिनों के लिए रहना चाहता है ।

उसने पंच कोबरा के एक घनिष्ठ मित्र का पत्र भी दिया था कि प्रोफेसर नकबी उसका विश्वास पात्र व्यक्ति है और वह जादू की नई विधियों के अध्ययन के लिए शामी कबीले के वासियों के साथ रहना चाहता है... ।

कोबरा के मित्र ने उसे पत्र में लिखा था कि वह प्रोफेसर को पूरा सहयोग दे और यदि उसे नकबी से कोई परामर्श लेना हो तो कोई संकोच न करे । उसी पत्र में प्रोफेसर नकबी की योग्यता की प्रशंसा के पुल बांधे गए थे... ।

पंच कोबरा ने उस अपने घर में ही रखा और दो दिन तक उसकी योग्यता की परख करता रहा... और जब उसे यकीन हो गया कि वह सचमुच ही परामर्शदाता बन सकता

है तो उसने बातचीत करने का फैसला किया। उसे अपने मित्र के पत्र में लिखित इन शब्दों पर पूरा भरोसा था कि प्रोफ़ेसर नकवी विश्वास पात्र प्रभाणित होगा...।

लगभग बीस मिनट पहले उसने प्रोफ़ेसर नकवी को अपने कमरे में बुलवाया और पांच सात मिनट तक इधर उधर की बातचीत करने के बाद उसने अपने अभिप्रायः की चर्चा की वह इस बात से संतुष्ट था कि प्रोफ़ेसर नकवी उसकी बातों में पूरी दिलचस्पी ले रहा है।

उस वक्त वह कह रहा था..., “मलिका कोलम्पा के विषय में मैंने जो अन्दाज़ा लगाया है, उसके मुताबिक वह किसी खास मकसद से यहां पर आई है पर वह मकसद क्या है, बहुत सोचने के बाद भी मैं समझ नहीं पाया।”

प्रोफ़ेसर नकवी ने सिग्रेट सुलगा कर एक कश लगाया, तब बोला, “सवाल यह है पंच कोबरा ! जिन दो चौधरियों ने कोलम्पा की सिफारिश की थी, उनसे वह कब मिली और उन्होंने उसे मलिका बनाने में क्या दिलचस्पी ली...?”

“कुछ नहीं कहा जा सकता प्रोफ़ेसर ! हां, इतना अवश्य है आज कल उन दोनों के दिमाग काफी अकड़ गए हैं। उनमें से एक तो कई २ दिन घर से गायब रहता है जबकि ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था।”

प्रोफ़ेसर नकवी ने कोलम्पा के विषय में कुछ सुन रखा था और सच्चाई यह है कि वह उसके बारे में जानकारी प्राप्त करने वहाँ गया था किन्तु वह पंच कोबरा को अपनी ज़बान से कुछ बताने के लिए तैयार नहीं था। वह किसी भी हालत में सन्देहस्पद स्थिति पैदा नहीं करना चाहता था।

उसने कुछ सोचकर पूछा, “उन दोनों चौधरियों के क्या नाम हैं।”

“उनमें चौधरी शोजा ही ज्यादा दिलचस्पी ले रहा है। दूसरे चौधरी के बारे में यही सन्देह है कि शोजा चौधरी की बाता में आ गया है।”

‘उत्ती से तो कुछ पता चल सकेगा पंच ! असल में कोलम्पा

के किसी आदमी ने शोजा को अपने जाल में जकड़ लिया होगा और उसने दूसरे चौधरो को अपने साथ मिला लिया होगा। वैसे उसका नाम क्या है ?”

“चौधरी बलगा लेकिन जहां तक मेरा ख्याल है कि शोजा ही सारी मुसीबत की जड़ है।”

प्रोफ़ेसर नकवी का सिग्रेट खत्म हो गया था, उसने सामने पड़ी एश ट्रे में सिग्रेट के बचे टुकड़े को मसलते हुए कहा, “वैसे कोलम्पा और पिछली मलिका नारिमा की गतिविधियों में कुछ अन्तर भी है क्या ?”

प्रोफ़ेसर नकवी ने यह सवाल विशेष अभिप्राय से किया था। वह दोनों की गतिविधियों के अन्तर को कुछ २ जानता था किन्तु वह पंच कोबरा की जबान से सुनना चाहता था...। उसे ऐसा लग रहा था जैसे पंच को बहुत कुछ ज्ञात है किन्तु वह बताने का साहस नहीं कर रहा...।

कोबरा ने उसे गहरी नजरों से देखा... फिर बोला, ‘पिछले दस सालों में मैंने शामी कबीले की मलिका को बेशर्म होते नहीं देखा था पर कोलम्पा...? ऐसा लगता है कि इसकी आग कभी शान्त नहीं होगी...।’

“इसके अलावा मुझे कुछ बताईए पंच कोबरा ! उसकी कामुकता की कहानी तो उसके नाम से प्रकट है कि उसे शैतान की दुल्हन के नाम से पुकारा जाता है।”

‘नारिमा ने शामी कबीले की परम्परा को कभी नहीं तीड़ा पर कोलम्पा के बारे में मेरा अनुमान है कि वह हमारी रीति रिवाजों को खत्म कर देना चाहती है। हमारे कबीले पर शहरों की तहजीब का कोई असर नहीं...लेकिन ऐसा मालूम देता है कि अब...।’

सहसा पंच बोलते २ रुक गया...बाहर से शोर सुनाई देने लगा था...। स्पष्टतः वह शोर पंच कोबरा के पत्थरीले मकान के नज़दीक चला आ रहा था।

पंच कोबरा उठ खड़ा हुआ...नकवी भी उठा किन्तु वह कोबरा के साथ बाहर की ओर नहीं बढ़ा...।

शोर काफी नजदीक आ गया था...। प्रोफेसर नकवी भी बाहर जाना चाहता था किन्तु वह फैसला नहीं कर सका कि वह बाहर जाए या नहीं।

कोबरा उसे वहीं रुके रहने का संकेत करके गया था मगर वह देखना चाहता था कि बाहर शोर कैसा है और वह आधी रात को पंच से क्या चाहते हैं।

कोबरा मोड़ पार करके उसकी नज़रों से गायब हो चुका था... वह अपनी जगह पर ही खड़ा विचारों में निमग्न था...।

आखिर उसने फैसला कर लिया कि वह बाहर जाएगा।

उसने आगे कदम रखा किन्तु वह बुरी तरह चौंक पड़ा... पीछे से उसके कंधे पर किसी ने हाथ रख दिया था।

उसने पलट कर देखा... कदीसा खड़ी थी...। पंच कोबरा की नौजवान बेटी कदीसा ने अपने कबीले की परम्परा के अनुसार अर्धनग्न वेश भूषा पहनी हुई थी... स्तनों पर बण्डी और बारीक कपड़े का गरारा...! उसके बाल खुले थे...।

“तुम बाहर नहीं जाओगे अजनबी!” उसने अपने क्षेत्र की भाषा में कहा।

यह तो सौभाग्य की बात थी कि प्रोफेसर नकवी शामी कबीले की भाषा से परिचित था वरना वह तो किसी बात को भी समझ नहीं पाता। पंच कोबरा से भी वह उसी की भाषा में बातचीत किया करता था।

प्रोफेसर नकवी उस घर में पिछले दो दिन से था किन्तु कदीसा ने उसका स्पर्श नहीं किया था वैसे वह उसके साथ शुरू से ही खुल गई थी...।

“यह बाहर शोर कैसा है...?” नकवी ने उन्हीं की भाषा में पूछा...।

“तुम देखना चाहते हो क्या ...?”

नकवी ने स्वीकारात्मक सिर हिला दिया, कदीसा ने उसका हाथ पकड़ कह कहा—‘आओ मेरे साथ।’

उस वक्त बाहर शोर कम हो गया था और पंच कोबरा ऊंची आवाज़ में कुछ कह रहा था।

कदीसा नकवी को हाथ पकड़ कर उसे भीतर की ओर ले गई ।

प्रोफेसर नकवी महसूस कर रहा था कि शामी कबीले की युवतियों में नागरिक युवतियों की भांति कामुकता की भावनाओं में दिलचस्पी नहीं है ।

उसने नकवी का हाथ पकड़ा हुआ था किन्तु कदीसा की गतिविधियों से कामुक आकर्षण की ओर ध्यान नहीं था...

वह उसे एक ऐसे कमरे में ले गई जिसमें दीवार के साथ पुराने किन्तु घातक हथियार लगे दिखाई दे रहे थे—

कदीसा ने दीवार के साथ पास जा कर एक कटार को अपने हाथ में लिया... फिर उसके नजदीक आकर बोली—, 'मलिका कोलम्पा की छाती में यही कटार धौपी जाएगी ।'

नकवी बुरी तरह चौंक उठा—उसके स्वप्न में भी यह आशा नहीं थी कि वह उससे इस तरह खुल जाएगी—

'क्या—?' उसने पूछा, 'तुम कोलम्पा की छाती में कटार क्यों चलाओगी ? वह तो शामी कबीले की मलिका है ।'

'नहीं ! वह चौधरी शोजा की मलिका है—,' कदीसा का स्वर अत्यन्त कटु हो चुका था, 'हमारी मलिका सलमीना है अजनबी ! कोलम्पा कमीनी है—उसका गोरा साथी यहां अपनी हुकूमत बनाना चाहता है—।'

नकवी चौंका—पंच कोबरा ने उसे नहीं बताया था कि कोलम्पा का कोई गोरा साथी भी यहीं मौजूद है ।

नकवी ने सम्भल कर कहा, 'तुम कैसे जानती हो कि कोलम्पा का कोई गोरा साथी भी है ।'

'यह राज मैं तुम्हें बता दूंगी पर एक शर्त पर...'—वह चुप हो गई ।

'कौन सी शर्त मनवाना चाहती हो—!'

'तुम बाबा से कुछ नहीं कहोगे । मैं यह काम सलमीना से मिल करना चाहती हूँ—। हमने फैसला किया है कि जिस वक्त उसकी छाती में से खून का फव्वारा निकलेगा तो हम कोबरा डांस करेंगी ।

कोबरा डांस...? नकवी उस का अभिप्रायः समझ रहा था किन्तु फिर भी उसने बात बनाई, “क्या तुम्हारे बाबा ने तुम्हें वह डांस सिखाया है?”

कदीसा ने उसे इस तरह देखा...जैसे उस के सामने कोई मूर्ख व्यक्ति खड़ा है, तब बोली, “कोबरा एक खतरनाक सांप भी कहलाता है...उसके नाम से वह नृत्य है—।”

बाहर शोर थम गया था...कभी २ मामूली आवाजें आ रही थीं...। नकवी का ध्यान उस तरफ था...

तभी कदीसा बोल उठी..., “अभी चिल्ला चढ़ाया जा रहा है...काम शुरू होगा तो मैं तुम्हें सारा निजारा दिखा दूंगी—।
‘पर बाहर है क्या—!’

थोड़ी देर में देख लगे; कदीसा कटार दीवार के साथ लटकाती हुई बोली, “तुम ऐसे समझ लो कि कोलम्पा के लिए मौत का पैगाम आने वाला है। मैं फिर कह रही हूँ कि तुम बाबा को कुछ नहीं बताओगे वरना ऐसा न हो कि मुझे तुम्हारी लाश पर भी कोबरा डांस करना पड़े—।”

उस का चेहरा काफी कठोर हो चुका था...। भले ही नकवी का ध्यान उस तरफ था किन्तु वह संतुष्ट था कि कदीसा उसे निजारा अवश्य दिखलाएगी। कदीसा की बातों से ऐसा पता चलता था कि जो कुछ भी है, वह कोलम्पा को गिराने का आयोजन होगा—।

“एक बात सुनो !”—‘नकवी कुछ याद करके बोला’, तुम कोलम्पा तक पहुँच ही नहीं सकोगी, फिर उस की छाती में कटार सेकें घोंपोगी...!”

‘तब मेरी फनमणी उसका नाश करेगी...। अभी मैं उसे सिखा रही हूँ और जब वह पूरी तरह सीख जाएगी, तब उससे काम लूंगी।’

“फनमणी...!” नकवी समझ नहीं पाया कि वह किस की चर्चा कर रही है...?”

कदीसा उसकी अनभिज्ञता भांप गई...। वह बोली, ‘मेरी बेटी को नहीं जानते तुम...?’

“तुम्हारी बेटी...?” नकवी चौंक कर बोला, “क्या तुम विवाहित हो...?”

‘विवाहित...?’ कदीसा इस तरह बोली जैसे वह समझ नहीं पा रही कि वह क्या कह रहा है—, ‘विवाह के साथ बेटी का क्या सम्बन्ध अजनबी !’

उस समय वह इस प्रकार कह रही थी जैसे वह मासूम बच्ची हो और उसे विवाह एवं संतान के सम्बन्ध की बिल्कुल जानकारी न हो ।

‘तुम्हारी शादी हुई है या नहीं...?’

कदीसा ने नकारात्मक सिर हिलाते हुए कहा—“नहीं अजनबी और मुझे लगता है कि शादी होगी भी नहीं...।”

‘क्यों...?’ —नकवी ने अधिक दिलचस्पी लेते हुए कहा—।

‘अभी नहीं बताऊंगी...बाबा ने सुन लिया तो वह मेरी बेटी को मुझ से छीन लेगा—।’

‘मैंने तुम से वायदा किया है कि मैं तुम्हारे बाबा को कुछ नहीं बताऊंगा।’

‘हम लोग शहरियों की बात पर यकीन नहीं करते...तब भी मैं तुम्हें अपनी बेटी फनमणी दिखाऊंगी...।’

‘मुझ पर यकीन कैसे करोगी—?’

‘यकीन तो नहीं करूंगी पर मुझे यह भी मालूम है कि शहरी मौत के नाम से भी डरते हैं और मैं तुम्हें कह चुकी हूँ कि अगर तुम मेरे बारे में बाबा को कुछ बताओगे तो मैं तुम्हारी लाश पर कोबरा डांस करूंगी ।’

प्रोफ़ेसर नकवी उसकी शक्ल देखता रहा...वह पुनः बोली, ‘मेरी बेटी फनमणी देखनी हो तो पीछे चले आओ !’

वह इस प्रकार पलट पड़ी जैसे उसे विश्वास था कि वह उसके पीछे अवश्य आएगा ।

अभी तक दूसरी ओर ऊंची आवाजें नहीं सुनाई दे रही थी । स्पष्ट था कि अभी चिल्ला नहीं चढ़ाया गया...ऐसा ही कुछ कदीसा ने कहा था ।

वह उस का अनुकरण करने लगा...कदीसा एक कमरे में पहुँच गई जहाँ एक टोकरी पड़ी थी—। उसे ढक्कन से बन्द कर दिया गया था ।

प्रोफ़ेसर नकवी पूरी तरह नहीं समझ पा रहा था किन्तु बन्द टोकरी को देखकर उसने कुछ अनुमान लगा लिया था... वह कदीसा की ओर देखने लगा जो टोकरी का ढक्कन खोलने के लिए झुक गई थी ।'

उसका अनुमान ठीक निकला...कदीसा सीधी खड़ी हुई तो उसके हाथ में एक सर्पिणी थी...जिस के काले शरीर पर कोड़ियों की तरह सफेद निशान थे—।

‘यह मेरी बेटी फनमणी है अजनबी ! बाबा ने मुझे बचपन में उपहार में दी थी...मैंने ही इसे पाला पोसा है...’

प्रोफ़ेसर उसे आश्चर्य चकित होकर देख रहा था...। उसे भी साँपों के बारे में जानकारी थी और उसका अनुमान था कि कदीसा के हाथ में जो नागिन है, वह इतनी जहरीली है कि उसके काटे का सम्भवतः कोई इलाज नहीं है । पर कदीसा उस के साथ इस तरह अपने हाथों से खेल रही थी जैसे उसे कोई चिन्ता ही नहीं थी...।

“तुमने इसे पाला पोसा...? इससे तुम्हारा क्या मतलब है कदीसा ।”

‘माँ अपनी संतान को कैसे पालती है अजनबी !

नकवी कोई जबाब देने लगा था कि बाहर से एक चीख सुनाई दी...।

कदीसा ने जल्दी से फनमणी को टोकरी में रख कर ऊपर से ढक्कन लगा दिया और बोली, ‘चिला चढ़ा दिया गया है अजनबी ! आओ मेरे साथ...’

उसने पुनः नकवी का हाथ पकड़ा और फिर तेजी से बाहर की तरफ लपकी...।

वह उसे एक कमरे में ले गई जहाँ दीवार में फर्श से लगभग पाँच छः फुट ऊपर छोटा सा रोशनदान सा बना था...।

“तुम यहाँ से छिप कर देख सकते हो अजनबी ! मैं भी

यही से देखूंगी...लेकिन तुम बाबा को नहीं बताओगे।

नकवी ने तेजी से उस में झाँका और बुरी तरह चौंक पड़ा...

पंच कोबरा के प्रवेश द्वार से भीतर आते ही लम्बी चौड़ी ड्योढ़ी थी, और वहाँ का निजारा नकवी को स्पष्ट नजर आ रहा था—।

पंच कोबरा अपने दोनों बाजू उठाए खड़ा था जैसे दुआ मांग रहा हो...उसकी आँखें बन्द थीं—।

उसके ठीक सामने शामी कबीले की एक युवा स्त्री खड़ी थी जिसके बाल बिखरे हुए थे...जगह-जगह से कपड़े फट चुके थे—। उसके अंग नजर आ रहे थे...वह काफी सहमी-सी खड़ी थी...

उसके पीछे ही तीन चार व्यक्ति तबला मंजीरा आदि साज लिए बैठे थे...पंच कोबरा के तीन तरफ शामी कबीले के कई स्त्री पुरुष बैठे हुए थे...

नकवी झाँककर देख रहा था...तभी उसके कानों में कदीसा की फुसफुसाती सी आवाज पड़ी—जरा बाईं तरफ हट जाओ अजनबी !

वह भी झाँकने लगी, उसका शरीर नकवी के शरीर से बिल्कुल सटा हुआ था किन्तु उसे जैसे चिन्ता ही नहीं थी।

तभी पंच कोबरा ने जोर से चीख मारी और फिर अपने दोनों हाथों को नचाने लगा...

उस वक्त साज बज उठे और सहमी सी औरत बड़े बेढंगेपन से नाचने लगी...। उसके पाँवों में पायल नहीं थे...बस ! वह ऐसे ही बेतुकेपन से नाचने लगी थी।

“यह कौन है...?” नकवी ने धीरे से पूछा—।

“कासवी...!”—कदीसा ने उसका नाम बताया, इस पर चिल्ला चढ़ा दिया गया है, अब यह पूरी तरह बाबा के बस में है।”

“पर उसे सजा क्यों दी जा रही है—?”

“सजा नहीं दी जा रही अजनबी !” कदीसा फुसफुसाई,

“कासवी की शादी होगी...।”

“तब उसे चिला पर क्यों चढ़ाया गया है—?”

‘बाबा के सामने अब यह जिस नौजवान का नाम लेगी, उसके साथ इसकी शादी हो जाएगी। यहां यही रिवाज है...।’

‘वह एक ही नौजवान का नाम लेगी क्या—?’

‘यह तो उसके मन की बात है।’ चिल्ला पर चढ़कर वह बाबा के सामने झूठ नहीं बोल सकती...।’

“अगर उसने दो नौजवानों का नाम ले लिया तो...?”

‘तो वह दोनों नौजवान...तभी वह बोलती-बोलती रुक गई और विद्युत् गति से नकवी को बाईं तरफ धिकेल कर स्वयं भी परे हट गई...।’

‘क्या है—?’ नकवी ने पूछा—।

पर कदीसा को जवाब देने की जरूरत नहीं पड़ी, उस वक्त बाहर से रोशनदान द्वारा एक शोला भीतर पहुंचा और फिर बुझ गया—।

“बाबा का अंग रक्षक हमें हटाने आया था...। अब तुम रोशनदान से नहीं झांक सकोगे।”

नकवी आश्चर्य चकित सा खड़ा रहा...बाहर से तबलों पर थाप पड़ने की आवाज सुनाई दे रही थी...कभी-कभी पंच कोबरा की चीख भी सुनाई देती...पर प्रोफेसर अपने स्थान पर खड़ा विचारों में मग्न रहा...इसके अलावा वह कर ही क्या सकता था।

पांच

राय राघवेन्द्र को जब भी रहस्यमयी साकोशा की याद आती, उसके हृदय की धड़कन तेज हो जाती...। कभी-कभी वह सोते-सोते चौंक उठता ।

कुछ दिन पहले उसने शहर के बदनाम गुण्डे बाबुल को बुलवा भेजा था और वह उसी के इन्तजार में था कि उसके कमरे की घंटी टनटना उठी...

उसने द्वार खोला था कि वह चौंककर पीछे हट गया, उसके सामने काफी रात बीते एक खूबसूरत युवती खड़ी थी...

वह रहस्यमयी साकोशा थी जिसने उसे पीर ताश्ची के नाम से पुकारा था...और जो देखते-देखते गायब हो गई थी...

उस रहस्यमयी स्त्री ने राय को नीलम गढ़ी में आने का निमंत्रण दिया था..., वह निमंत्रण इतना विचित्र था कि उसके पश्चात राय राघवेन्द्र आराम से सो नहीं सका था ।

वह नहीं जानता था कि नीलम गढ़ी कहां स्थित है । उसी रात बाबुल आया था किन्तु राय ने उसकी कोई ड्यूटी नहीं लगाई थी—। वह प्रतापी तथा कुछ अन्य लोगों से प्रतिशोध चाहता था कि साकोशा की रहस्यमयी मुलाकात के पश्चात वह किसी से भी नई दुश्मनी मोल लेने के विषय में सोचना चाहता था ।

उसने बाबुल को कुछ रुपये देकर वापस लौटा दिया । उसे सारी रात नींद नहीं आई । साकोशा के आगमन से पूर्व उस

पर कामवासना का भूत सवार था पर रहस्यमयी साकोशा के गायब हो जाने के पश्चात उसे अपनी पत्नी को वासना पूर्ति का साधन बनाने का ध्यान तक नहीं रहा था ।

कई दिन बीत गए किन्तु उसके पश्चात वह चैन से सो तक नहीं सका...सचमुच ही कभी-कभी तो वह आतंकित होकर सोते २ हड़बड़ा कर उठ खड़ा होता ।

उसने गुप्त रूप से नीलम गढ़ी के विषय में जानकारी करने का प्रयास किया किन्तु असफल रहा...

उस पर आतंक छाया हुआ था...। रहस्यमयी साकोशा ने उसे कहा था कि नीलम गढ़ी में काले जादू का अजीम मालिक उसका इन्तजार कर रहा है ।

वह बुरी तरह डर गया था...उसे अपने प्राणों का खतरा पड़ गया था पर सवाल यह था कि वह करे भी क्या...। अपने साधनों के आधार पर वह पूर्ण कोशिश कर चुका था किन्तु उसे नीलम गढ़ी का पता नहीं चल सका था ।

दिन बीतते चले जा रहे थे और उस पर आतंक की परतें बढ़ती जा रही थीं...

उस आतंक से इतना अवश्य हो गया था कि उसने प्रतापी से खुली दुश्मनी लेने का विचार छोड़ दिया था...उसने दूसरे लोगों से प्रतिशोध चुकाने के ख्याल को भी त्याग दिया था ।

उसने अपनी पत्नी जमना से बोलना शुरू कर दिया था... किन्तु इसके बावजूद उसे हर वक्त यह महसूस होता कि उस पर मौत का साया अपना अधिकार जमाता चला जा रहा है ।

रात के लगभग साढ़े नौ बजे थे...वह अपने कमरे में चक्कर लगा रहा था...उसे स्वामीनाथ का इन्तजार था ।

१. कभी स्वामीनाथ की पत्नी रमोला उसकी सेक्रेट्री थी और वह इमानदारी से समझता था कि वही उसके लिए मुसीबत बन कर आई थी ।

भले ही पीरताशी के रूप में नाटक रचाने से उस पर विपत्तियों का पहाड़ टूटा पड़ा था किन्तु फिर भी वह रमोला पर ही

१. पढ़िए—शैतान की दुल्हन (एस० एन० कंवल)

सारा दोष देता था कि उसने जमना के पागल हो जाने के रहस्य को प्रतापी के सामने प्रकट कर दिया था और जब राय ने उसे अपनी वासनापूर्ति के लिए बुलवाया था तो उसने गुप्त रूप से प्रतापी को सूचना दे दी थी—।

ठीक उस वक्त जब वह रमोला को अपनी कामुकता का शिकार बनाने के लिए कमरे का दरवाजा बन्द करने लगा था तो द्वार पर प्रतापी पहुँच गया था और उसे गिरफ्तार कर लिया गया था ।

वह रमोला के विषय में जानता था कि वह चरित्रवान नहीं रही और सोमेसंस के खास साथी विल्जी रोमर की अंक-शायिनी रही थी... उधर क्रिस्टा द्वारा काले जादू के प्रभाव से स्वामीनाथ को चरित्रहीन बना दिया गया था ।

उसे विश्वास था कि यदि सोमेसंस के काले जादू के किसी अजीम मालिक ने उसे नीलम गढ़ी में बुलवा भेजा है तो स्वामीनाथ एवं रमोला को भी अवश्य बुलावा आया होगा । वह इस विषय में स्वामीनाथ से बातचीत करना चाहता था ।

उसे अधिक देर प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी और स्वामीनाथ उसके पास पहुँच गया...।

उस वक्त स्वामीनाथ के हृदय में राय राघवेन्द्र के विरुद्ध आग जल रही थी, ...उसके विचारानुसार राय ही उसके दाम्पत्य जीवन को बरबाद करने वाला था—।

भले ही सोमेसंस काण्ड के पश्चात स्वामीनाथ एवं रमोला का समझौता हो गया था और दोनों ने प्रायश्चित्त करने का फैसला किया था किन्तु यह स्थिति बहुत दिनों तक नहीं रही ।

जब भी स्वामीनाथ को यह ध्यान आता कि उसकी पत्नी रमोला विल्जी रोमर से अपनी असमत लुटवाती रही है, तब तब अपनी बीबी के विरुद्ध उसके हृदय में आग जल उठती...।

उधर रमोला की भी यही दशा थी । उसे भी पता चला था स्वामीनाथ पराई स्त्रियों के समागम में रहा है... और जब भी वह ऐसे दृश्यों की कल्पना करती तो ऐसे अपने पति पर से विश्वास उठ जाता...।

वे दूर होते चले गए थे...और अब तक यही स्थिति थी।

स्वामीनाथ समस्त परिस्थितियों का जिम्मेदार राय राघवेन्द्र को मानता था और यही कारण था कि वह राय को खरी-खरी सुनाने का फैसला कर के आया था।

“स्वामीनाथ !” — राय राघवेन्द्र ने गम्भीर स्वर में कहा, “आज हम दोनों काफी दिनों के बाद आमने सामने खड़े हैं...। कहो रमोला कैसी है ?”

स्वामीनाथ को आग लग गई...वह दांत किचकिचा कर बोला, “काम की बात करो राय !”

“काम की बात ही कर रहा हूँ, स्वामीनाथ !” — उसका स्वर पूर्ववत् गम्भीर था, “मैं रमोला को फिर से अपनी सेक्रेट्री बनाना चाहता हूँ।”

“हमारी बरबादी की रही सही कसर पूरी करना चाहते हो क्या...?”

“अपनी बरबादी के जिम्मेदार तुम स्वयं हो स्वामीनाथ ! तुमने रमोला को भी बरबाद कर दिया और मेरा दाम्पत्य जीवन भी नष्ट हो गया।”

“अपना पाप मत छिपाओ राय, कहीं ऐसा न हो, कि मैं भड़क उठूँ।”

“अपने मन में भांक कर देखो तो तुम हकीकत तक पहुँच जाओगे। अगर तुम नीरा पर आसक्त न होते तो निश्चित ही वह उसे विल्जी रोमर के पास नहीं भेजती। रमोला तो मजबूरी में विल्जी के जाल में जकड़ी गई लेकिन तुम तो अपनी इच्छा से नीरा के साथ ऐश करते रहे।”

स्वामीनाथ उसे घूर कर देखता रहा, वह कहता गया— “अगर तुम काले जादू के चक्कर में पड़ कर नीरा की इज्जत न लूटते तो रमोला विल्जी के जाल में न पड़ती और फिर सोमसंस उसे डमी बनाकर मेरी सेक्रेट्री न रखवाती।”

“जो बीत गया उसे छोड़ो राय। अब तुम क्या कहना चाहते हो ?”

“मैं बता चुका हूँ। क्या रमोला फिर से मेरी सेक्रेट्री बन

सकती है ?'

'नहीं ! मैं उसे तुम्हारे साए के निकट भी नहीं आने दूंगा। तुम भूले नहीं होगे कि तुमने भी उसकी इज्जत लूटने की कोशिश की थी—।'

'पुरानी बातें छोड़ो स्वामीनाथ ! आज भी बात करो ! मैं तुम से वायदा करता हूँ कि मैं उसे कभी भी गलत रास्ते पर ले जाने की कोशिश नहीं करूंगा। हाँ ! तुम चाहो तो मैं तुम्हारे लिए नीरा जैसी बीसियों जवानियों का प्रबन्ध कर सकता हूँ।'

'नीरा—!'—एकदम स्वामीनाथ को वह रंगीन रातें याद आ गईं जो उसने नीरा के साथ बिताई थीं। उसकी कामुकता को आग लग गई।

'तुम्हें मुझ से समझौता करने में कोई नुकसान नहीं होगा स्वामीनाथ ! तुम्हें रुपया चाहिए, वह मिल जाएगा..., इसके अलावा भी तुम्हें हर प्रकार की सुविधाएं दूंगा...'।'

स्वामीनाथ दुविधा में पड़ गया... उसकी स्मृतिपट पर विल्जी रोमर और रमोला के अवैध सम्बन्ध के काल्पनिक दृश्य उभर आए...

वह विचारों में तल्लीन हो गया—। तभी राय ने उसके कंधे पर हाथ रख कर कहा, 'सोफे पर बैठो स्वामीनाथ ! रंगीन जिन्दगी तुम्हारा इन्तजार कर रही है...'।'

वह सोफे पर बैठ गया—। राय ने अलमारी खोली और उसमें से एक अलबम निकाल कर उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा, —'इसे खोल कर देखो स्वामीनाथ !'

उसने अलबम खोली और उसे ऐसा महसूस होने लगा जैसे चान्द के कई टुकड़े चित्रवत् हो कर अलबम के कागजों पर बिखर गए हैं।

उस अलबम में लगभग बीस खूबसूरत युवतियों के चित्र थे।

'यह एक प्राईवेट एजेंसी की फाईल है स्वामीनाथ ! तुम जब चाहो, इनमें से कोई भी युवती तुम्हारे इशारे पर चलने के लिए तैयार है। बारी-वारी इनमें से हरेक हुस्न तुम्हारे कदमों की गुलामी करेगा और जद तुम्हारा इन तितलियों से मन भर

गया तो तुम्हें दूसरी फाईल दे दी जाएगी....।”

स्वामीनाथ का सारा शरीर तप गया था। उसके ख्वाब में भी यह आशा नहीं थी कि कभी रमोला के कारण उसे इस तरह जवान रंगीनियाँ पेश की जाएंगी।

उसने सम्भल कर पूछा,—‘एक बात बताईए राय ! आप रमोला को सेक्रेट्री बन कर क्या फायदा उठाना चाहते हैं ?’

राय राघवेन्द्र ने अपनी मक्कार आंखों से उसे देखा, फिर साभिप्रायः स्वर में बोला, ‘मैं तुम्हें फिर यकीन दिला दूँ कि रमोला मेरे साथ केवल तुम्हारी पत्नी के रूप में रहेगी।’

‘तब...? आपको क्या फायदा होगा ?’

‘स्वामीनाथ ! तुम यह क्यों भूल रहे हो कि मेरे विरुद्ध दो मुख्य गवाहियाँ हैं...एक जमना की और दूसरी रमोला की...। अब तो तुम समझ गए हो ?’

इसमें न मसझने की कोई विशेष बात नहीं थी। स्पष्ट था कि राय अपने विरुद्ध गवाहियाँ खत्म करना चाहता है—।

‘इसके अलावा मुझे उससे एक और काम भी है। मैं उसे अपने साथ सेक्रेट्री के रूप में नीलम गढ़ी ले जाना चाहता हूँ।’

स्वामीनाथ इस तरह चौंककर उठ खड़ा हुआ जैसे उसने कोई प्रेत देख लिया हो —।

पिछले पाँच सात दिनों में उसने कई बार ऐसा महसूस किया था जैसे उसके कानों में कोई औरत फुसफुसा कर नीलम गढ़ी का नाम लेती है।

उसने हमेशा ही इस फुसफुसाहट को अपना भ्रम समझा था किन्तु अब राय राघवेन्द्र के शब्द...?

उसका चौंक उठना स्वाभाविक ही था....।

तब क्या फिर से काले जादू का चक्कर चल रहा है....।

‘ओह मेरे भगवान !’ उसका हृदय धड़कने लगा....। उसे भय महसूस होने लगा—। वह इस चक्कर में फँसना नहीं चाहता था। किन्तु वह यह भी जानता था कि अगर उसने कोई विद्रोहात्मक कार्यवाही की तो उसका नतीजा काफी भयानक हो सकता है।

उसे फिर से नीलम गढ़ी का ध्यान आ गया...वह सम्भल कर बोला, 'नीलम गढ़ी...? यह कहाँ है राय !'

"जहाँ काले जादू का अजीम मालिक रहता है स्वामीनाथ ! उसका हुक्म है कि रमोला को साथ होना चाहिए वना...!"

हा : हा : हा...सहसा कमरे में कहीं से नारी कण्ठ का अट्टहास सुनाई दिया...

राय और स्वामीनाथ...दोनों बुरी तरह घबरा कर उठ खड़े हुए ।

उन्होंने इधर उधर देखा पर वहाँ उन्हें कोई भी नहीं दिखाई दिया ।

'पीर ताशी...'—कमरे के एक कोने से आवाज आई, 'नीलम गढ़ी में रमोला नहीं आएगी—। तुम अकेले आओगे ।'

राय राघवेन्द्र तो विस्मित था ही पर स्वामीनाथ को तो अपना होश भी नहीं रहा था...। कमरे में मौजूद किसी अदृश्य स्त्री की स्पष्ट आवाज आ रही थी—।

'स्वामीनाथ !—फिर से अदृश्य स्वर गूँजा—'जीना चाहते हो या मौत चाहिए तुम—?'

उसका सारा शरीर थरथर कांपने लगा—। वह इस रहस्य को बिल्कुल नहीं समझ पाया ।

"रमोला को पीर ताशी के हवाले कर दो...तुम्हारी जिन्दगी में बहारें छा जाएंगी..."

उसका कण्ठ सूख रहा था...राय भी बुत्त सा बना खड़ा था...। वह साकोशा की आवाज पहचान चुका था...भले ही वह नज़र नहीं आ रही थी...

"अपनी पत्नी से समझौता करो स्वामीनाथ ! काले जादू का अजीम मालिक जादूगर लागूना तुम दोनों को पहले की तरह देखना चाहता है...जिन्दा रहना चाहते हो तो उसके साथ खुली बात करो —।"

स्वामीनाथ ऐसा करने के लिए तैयार था पर उस वक्त वह वहाँ से भाग जाना चाहता था—। उसके शरीर में आतंक की शीत लहर दौड़ गई थी...

‘नीलम गढ़ी में कब आ रहे हो पीर ताशी ।’—एक बार फिर से साकोशा का स्वर सुनाई दिया ।

राय भी डर चुका था किन्तु उसने साहस बटोर कर कहा, ‘नीलम गढ़ी कहां है...?’

हा : हा : हा...अदृश्य साकोशा का रहस्यमय कहकहा गूंजा और फिर खामोशी छा गई...

राय राघवेन्द्र और स्वामीनाथ—दोनों चित्रवत् खड़े फिर से अदृश्य औरत की आवाज का इन्तजार करते रहे पर ऐसा नहीं हुआ—। साकोशा के रहस्यमय अट्टहास के पश्चात् निःस्तब्धता ही बनी रही—।

आठ दस मिनट के बाद दोनों की चेतना लौटी—उन्होंने एक दूसरे को साभिप्रायः दृष्टि से देखा—।

तभी राय बोला, ‘तुमने सब कुछ सुन लिया—।’

‘यह कौन थी—?’

‘मैं कुछ नहीं कह सकता स्वामीनाथ ! यकीन मानो—मैं कुछ नहीं समझ पाया—। यह औरत एक बार मुझे दिखाई दी—उसने मुझे नीलम गढ़ी में आने के लिए कहा था और फिर देखते ही देखते गायब हो गई थी—। उसने मुझे अपना नाम साकोशा बताया था ।

स्वामीनाथ ने यह नहीं पूछा कि अब तो वह रमोला को नीलम गढ़ी में नहीं ले जाएगा क्योंकि उसे विश्वास था कि वह काले जादू के मालिक के आदेश की अवज्ञा नहीं कर सकता ।

दोनों बातचीत करने के मूड में नहीं थे...। स्वामीनाथ कुछ देर तक इधर उधर की बातें करने के बाद वापस चला गया—किन्तु उसके मस्तिष्क का बोझ अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका था ।

दो दिन के बाद—।

रात के लगभग दस दजे थे । स्वामीनाथ अपने स्लीपिंग रूम में पहुँचा, रमोला लेटी हुई थी—

इन दिनों उनके सम्बन्ध सामान्य नहीं थे । वह शयनगृह में जाता तो खामोशी से अपने पलंग पर सो जाता—। रमोला भी

अकड़ गई थी, वह भी उसे नहीं बुलाती ।

वह भीतर प्रविष्ट हुआ तो रमोला अपनी नवीन गति-विधियों के कल्पना लोक में बिहार कर रही थी...

उसकी विचार शृंखला भंग हुई और अपने पति को देख कर करवट बदल ली...

‘रमोला ! —स्वामीनाथ ने उसे बुलाया पर उसे कोई जवाब नहीं मिला, वह पीठ किए पड़ी रही—

उसने कोई जवाब नहीं पाकर रमोला के कंधे पर हाथ रखा और उसे अपनी ओर पलटाने का प्रयास करते हुए बोला, ‘मैं तुम से कुछ जरूरी बातें करना चाहता हूँ रमो !’

‘रमो !’—उसने मन ही मन में दुहराया—कई दिन के पश्चात स्वामीनाथ की जबान से अपनी पत्नी के प्रति यह सम्बोधन निकला था—

‘क्या बात है—?’ रमोला ने बेरुखी से कहा ।

“उठ बैठो ! मैंने कहा ना कि मैं कुछ आवश्यक बातें करना चाहता हूँ ।”

“आपकी बातें लेटे २ भी सुनी जा सकती हैं । कहिए ! आपको क्या कहना है ।”

स्वामीनाथ ने उसे उठाते हुए कहा, “सरी ! तुम उठो तो सही । निश्चित ही हम किसी समझौते पर पहुँच जाएंगे और हमारी जिन्दगी में फिर ते बहारें आ जाएंगी ।”

रमोला कुछ नहीं समझ सकी । पिछले कई दिनों से स्वामीनाथ ने अपनी पत्नी को स्पर्श तक नहीं किया था—पर आज वह उसे ‘रमो’ कह कर प्यार का सम्बोधन दे रहा था... उससे कोई समझौता करना चाहता था ।

स्वाभावतः उसकी उत्सुकता बढ़ी और वह उठ कर बैठ गई—

स्वामीनाथ अपने पलंग पर ही बैठा रहा, उसने सिम्रेट सुलगाई और फिर बोला, ‘विल्जी रोमर और नीरा !’

वह खामोश हो गया किन्तु रमोला ने अवज्ञात्मक स्वर में कहा, ‘दोनों मर खप गए हैं, उनकी बातें करने से क्या

फायदा—?’

‘मैं पुरानी बातें करने के बाद नई बातें करना चाहता हूँ रमोला !

‘मुझ ऐसी बातें पसन्द नहीं हैं !’

‘क्या तुम चाहती हो कि हम दोनों की जिन्दगी इसी तरह अज्ञाब बनी रहे...’, क्या तुम्हें वरबादी में दिलचस्पी है ?’

‘हमने कभी फैसला किया था कि पिछली बातें भुला देंगे— पर उस फैसला पर कुछ ही दिन कायम रह सके, फिर अतीत को याद करके मुझ से दूर होने लगे ।’

‘तुम भी तो ऐसी ही रही थी...। तुम्हें भी नीरा नहीं भूली थी ।’

रमोला खामोश रही...उसे अपने मन का चोर सता रहा था ।

तभी स्वामीनाथ बोला, ‘आज हम जिस तरह दूर २ रह रहे हैं, उसका परिणाम क्या होगा...? यही कि तुम्हें एक बार फिर से किसी विल्जी की जरूरत पड़ेगी और मैं किसी नीरा की खोज में भटकने लगूंगा । । सोमेसंस के किंगारा का प्रभाव तो दूर होने से रहा...।’

रमोला का हृदय धक से रह गया—निःसन्देह उसके पति ने गलत नहीं कहा था—।

सोमेसंस काण्ड में परिस्थितियों ने उसे विल्जी रोमर के कामुक नाल में फंसा दिया था...।

भले ही पहली बार विल्जी ने उस पर रिवाल्वर तानकर उसकी असमत को लूटा था किन्तु बाद में किंगारा के प्रभाव से वह अपना शरीर अर्पण कर देती—!

किंगारा एक प्रकार की कामुक औषधि थी जिसकी एक बून्द भी किसी तग्ल पदार्थ में मिला कर पी ली जाए तो कामुकता का अति प्रभाव पीने वाले की चेतना भूला देता ।

विल्जी उसे बुलवाता—किंगारा का प्रयोग करवाता और फिर वह अपनी आग को शांत करने के लिए व्याकुल हो जाती ।

ऐसी ही स्थिति स्वामीनाथ की रही थी, नीरा ने

उसे पथभ्रष्ट कर दिया और फिर उसे शराब में किंगारा के बिन्दु मिला कर कई बार पिलाए—और तब उसकी यह स्थिति हो गई कि रमोला और विल्जी के अवैध सम्बन्ध की जानकारी होने के पश्चात भी वह अपनी पत्नी को रोक नहीं सका क्योंकि इस रोक के पश्चात उससे नीरा का छिन जाना स्वाभाविक था और वह ऐसा करना नहीं चाहता था ।

आज स्वामीनाथ फिर से कामुक पदार्थ किंगारा की चर्चा कर रहा था और रमोला सहमत थी कि उस पर भी किंगारा का प्रभाव नहीं हटा । यदि ऐसा न होता तो पिछली रात काम-वश होकर रमोला भटक न गई होती...

तभी उसकी विचार-शृंखला भंग हो गई..., स्वामीनाथ कह रहा था, 'हमें समझौता कर लेना चाहिए रमोला !

'वह तो पहले भी हुआ था, आपने ही उसे तोड़ा था । अब फिर समझौता कर लें तो पुनः टूट जाएगा ।'

'वैसा समझौता करेंगे ही नहीं । अब हमें दूसरे ढंग का समझौता करना होगा ।'

'आप कहना क्या चाहते हैं ?'

स्वामीनाथ कुछ देर तक उसे देखता रहा, फिर बोला, 'हमें खामोश समझौता करना होगा... एक दूसरे के इशारों को समझना होगा । क्या तुम मेरी बात समझ गई हो ।'

'नहीं !'—वह समझते हुए भी नकारात्मक ढंग से बोली 'आप जो कहना चाहते हैं, खुल कर कहें ।'

'हम दोनों किंगारा का प्रभाव मिटाने के लिए आजाद होंगे—।'

'नहीं !—ऐसा नहीं होगा ।'

'ऐसा ही होगा रमोला ! तुम समझ क्यों नहीं रही कि ऐसा न हुआ तो हम दोनों अपनी जवानियां तबाह कर बैठेंगे ।'

तब स्वामीनाथ ने उसे राय राघवेन्द्र के साथ हुई सारी बातचीत बिता दी... । अदृश्य औरत के शब्द भी बताए और अपनी राय भी कि अगर उस स्त्री की बात नहीं मानी गई तो दोनों की जिन्दगियां खतरे में हैं ।

क्या कहती - रोमाला...! उसे तो पिछली रात एक ऐसी अनुभूति हुई थी जिसकी स्मृति से वह वह पूरी तरह समझ रही थी कि उसे अपने पति के साथ मूक समझौता करना ही पड़ेगा।

उसने बात बनाई, 'मैं कुछ नहीं समझ पा रहा कि क्या करूं? मैं आपको खुश देखना चाहती हूं—। इसके अलावा मेरा कोई मकसद नहीं। मुझे क्या करना है, यह आपको सोचना है—।'

बस ! उसके बाद स्वामीनाथ ने रमोला के भरपूर जिस्म को अपने मजबूत आलिंगन में ले लिया—तब शराब का दौर चला और कामुकता अपनी चरमसीमा पर पहुँच गई—।

रात बीतती चली गई...स्वामीनाथ पलंग पर बेसुध पड़ा सो रहा था किन्तु रमोला को नींद नहीं आ रही थी...उसे पिछली रात की घटना की स्मृति हो रही थी।

—तब सम्भवतः रात के बारह बजे थे—वह अचेत सी अपने कमरे में सो रही थी—स्वामीनाथ शहर से बाहर गया हुआ था—वह घर में अकेली थी...।

वह प्रगाढ़ निद्रा में इस तरह तल्लीन थी कि उसे अपने आप का होश भा नहीं था...।

पर...? पर तभी उसकी निद्रा भंग हो गई...वह हड़बड़ा कर उठ खड़ी हुई...। उसे ऐसा आभास हुआ था जैसे उसके बाएं कान में किसी ने फूंक मारी है...।

उसने बेड स्विच आन किया और घबरा कर उधर देखा किन्तु उसे कोई भी नज़र नहीं आया।

'तब क्या उसे भ्रम हुआ है...?' उसने सोचा था...।

वह कुछ देर तक बैठी रही, फिर वह सोचने लगी—। उसने बेड स्विच आफ करने के लिए हाथ ऊपर किया तो वह बुरी तरह चौंक उठी—।

उसके बाएं कान में फिर किसी ने तेज़ फूंक मारी थी...। उसने बाईं ओर देखा किन्तु उसे वहां कोई दिखाई नहीं दिया। फिर भी वह उसे भ्रम नहीं समझ रही थी जबकि वह उस रहस्य

को जान नहीं पा रही थी ।

वह कुछ देर तक वहीं बैठी बुत सी बनी रही, तब उसने साहस बटोर कर फिर से बेड स्विच को आफ करने के लिए हाथ ऊपर किया पर यह क्या...?

किसी ने उसका हाथ पकड़ लिया... उसने विद्युत् गति से ऊपर उठे हाथ की ओर देखा... तब भी उसे कुछ नहीं दिखाई दिया...। उसने अपना बाजू गिराने का प्रयास किया किन्तु असफल रही ।

उसका अंग २ कंप-कंपा गया... अभी तक वह महसूस कर रही थी कि किसी अदृश्य हाथ ने उसका हाथ अपने आलिंगन में लिया हुआ है ।

वह इतनी भयभीत हो गई थी कि उसमें बोलने का भी सामर्थ्य नहीं रहा था—।

तभी उसका हाथ मुक्त हो गया... फिर उसके कानों में पूर्ववत् ठंडी फूंक का एहसास हुआ..., उसके हृदय की घड़कन तीव्र गति से बढ़ गई...

“रमोला!”—उसके कानों में नारी कण्ठ की फुसफुसाहट हुई—“मेरी आवाज सुन रही हो क्या...?”

उसे ऐसा एहसास हुआ जैसे उसका शरीर पसीने से तर हो गया है ।

‘तुम मुझे नहीं देख रही पर मैं तुम्हें देख रही हूँ—उसके कानों में फिर से फुसफुसाहट हुई—मुझसे मत डरो..., मैं जो कहती हूँ, वही करो—।’

रमोला ने अपने आप को सम्भालने का प्रयास किया... वह देख नहीं रही थी किन्तु वह पूरी तरह समझ रही थी कि काला जादू उस पर छा गया है—।

‘उठो...’—वहीं फुसफुसाहट—‘श्रृंगार करो—, इतना खूबसूरत श्रृंगार करो कि जन्नत की ‘हूरें’ भी तुम्हारे हुस्न को देख कर शर्मा जाएं—! उठो !!’

आवाज में कटुता नहीं, बल्कि नम्रता थी... रमोला का भय कम हुआ ।

वह उठ खड़ी हुई—वह जानती थी कि इस आदेश की अवज्ञा करने का अंजाम उसके लिए भयानक सिद्ध हो सकता है—।

वह अपने श्रृंगार दर्पण के सामने पहुँची और उसने शानदार मेक-अप किया—सचमुच ही ऐसा ज्ञात होता था जैसे कोई अप्सरा धरती पर उतर आई हो ।

उसके पश्चात वह अर्धचेतन सी हो गई—उसे ज्ञात नहीं कि वह कैसे बाहर निकली और एक कार में सवार हो गई—।

उसे जब होश आया तो वह एक खूबसूरत युवती के सामने खड़ा थी जिसने उसे अपना नाम कौसरा बताया था—

वहाँ उसे किंगारा मिली शराब पिलाई गई और उसके बाद उसे एक ऐसे कमरे में भेज दिया गया जिसका सौंदर्य देवलोक को भी लज्जित कर रहा था—। वहाँ एक युवक मौजूद था ।

वह उस युवक को नहीं जानती थी किन्तु किंगारा के प्रभाव से वह उस युवक को अपने शरीर सौपने में संकोच नहीं कर सकी—।

उसके पश्चात—जब उसे होश आया तो वह फिर से अपने पलंग पर पड़ी थी—।

उसने थोड़ी देर पहले घटने वाली निर्लज्ज घटना को स्वप्न समझा—। वह कुछ देर तक वैसे ही पड़ी रही ।

उसका कण्ठ सूख रहा था...वह पानी पीने के लिए उठ बैठी...उसने बेंड स्विच को आन किया तो बुरी तरह चौंक उठी...उसने देखा कि वह सचमुच उन वस्त्रों में थी जिन्हें पहन कर उसे निर्लज्जता की सीमा पार करनी पड़ी थी ।

उसने हड़बड़ा कर पलंग से फर्श पर छलांग लगाई और उसका दिल बुरी तरह धड़कने लगा ।

वह सारी रात सोचती रही—बस—! सोचती ही रही...। उसे विश्वास हो गया था कि रात को उसके साथ जो भी घटना घटी है, वह सही है और वह काले जादू के चक्कर में फंस गई है ।

सारा दिन वह उन्हीं विचारों में जकड़ी रही...। स्वामीनाथ

वापस आ गया—। उसके साथ तो वह खुलकर बातचीत नहीं करती थी—, अगर उनके सम्बन्ध ठीक भी होते...तब भी वह निर्लज घटना उसे किस तरह बता सकती थी।

आज रात भी जिस वक्त स्वामीनाथ स्लीपिंग रूम में दाखिल हुआ था, वह पिछली रात की घटना के बारे में ही सोच रही थी—।

अब भी वह उसी पर विचार कर रही थी --। उसका पति अपनी वासना तृप्ति के पश्चात बेसुध सो गया था किन्तु उसे नींद नहीं आई थी --।

उसके पति ने उसे राय राघवेन्द्र के साथ होने वाली बात-बीत बता दी थी...फिर अदृश्य औरत के आदेश भी बता दिए थे।

यदि कोई दूसरा अवसर होता तो सम्भवतः वह इस प्रकार के रहस्य पर विश्वास ही नहीं करती किन्तु वह तो पिछली रात स्वयं किसी रहस्यमय अदृश्य का आभास पा चुकी थी—, तब अविश्वास करने का अभिप्राय ही क्या हो सकता था।

स्पष्ट था कि उसे काले जादू से भयभीत होकर कुछ सेजें सजानी होंगी—। क्या वह इसे सहन कर पाएगी ?

काले जादू का पहला वार उसकी असमत पर विल्जी रोमर ने किया था...दूसरा वार राय राघवेन्द्र करना चाहता था किन्तु वह बच गई पर तीसरे वार से बच नहीं सकी।

उसे अभी तक स्पष्ट याद था कि पिछली रात को उसने किस शकल सूरत के युवक को अपना शरीर सौंपा था किन्तु यह भी तो वास्तविकता थी कि उसे युवक का नाम तक मालूम नहीं था—।

उसे कौसरा की शकल भी याद थी पर उसे यह तो याद नहीं था कि उसे कहां ले जाया गया था।

और फिर काले जादू का चौथा वार स्वामीनाथ ने किया था। भले ही उसका पति था किन्तु पति पत्नी के सम्बन्ध तो पिछले कई दिन से टूटे हुए थे इसके बावजूद स्वामीनाथ ने उसके दाम्पत्य सम्बन्ध स्थापित किए थे तो निश्चित ही इस

स्वीकृति के पश्चात् कि वह दोनों एक दूसरे के साथ मूक सम-
झौते में बंधेंगे और यह सब कुछ उस अदृश्य स्त्री के आदेश के
अनुसार होगा जो स्वामीनाथ को राय राघवेन्द्र के बंगले में
टकराई थी—।

उसने सोचते सोचते करवट बदली—किन्तु वह विचार
प्रवाह से बाहर नहीं निकल सकी—। वह सोने की जितनी
कीशिश करती, उतनी ही विचारों में डूबती चली जाती—।

रात ढलती जा रही था और करवटें बदलते बदलते वह
विचारों में अधिकाधिक विलीन होती जा रही था—।

छः

बालयोगी रंजन ने इधर उधर पर्वतीय कक्ष को देखा—
फिर उसकी निगाहें सामने बनी विशाल गुड़िया पर जम गई—।

“जय भूतनाथ ! जय महाप्राणी !!— कुछ देर के पश्चात्
रंजन की जबान से अत्यंत ही गम्भीर स्वर निकला—”, मुझे
शक्ति दो देवों के देव ! आज मेरी मातृभूमि पर संकट की
घटाएं छा गई हैं—। शैतान लागूना भारत की नई पीढ़ी को
विलासी बना कर इस पवित्र देश की पावन संस्कृति को नष्ट
कर देना चाहता है—। मुझे शक्ति दो महादेव !

उसकी निगाहें सामने बनी मिट्टी की गुड़िया पर थीं—,
वह उस ओर देखता रहा...तब उसकी जबान से निकला—

‘प्रभावती !’—वह गुड़िया को सम्बोधित हो रहा था ।

‘प्रभावती !’—वह कहता चला गया—, ‘तुम्हें नीलम गढ़ी में जाना होगा... । मैं जानना चाहता हूँ कि शैतान लागूना किस जगह रह रहा है— । वहां कहीं सोमेसंस होगी...उसे यहां किस तरह लाया जाए, यह तुम बताओगी— ! जाने के लिए तैयार हो जाओ !’

“जय भूतनाथ !”—रंजन के जोर से हुंकार भरी और फिर उसने आंखें बन्द कर ली... ।

उसका चेहरा कठोर हो गया—सारा शरीर अकड़ गया और मुट्ठियाँ कस गई ।

पांच सात मिनट के बाद गुड़िया प्रभावती के शरीर से धुआं उठने लगा... । रंजन ने आंखें नहीं खोलीं...उसका शरीर वैसा ही तना रहा...मुट्ठियां पूर्ववत् कसी रहीं— ।

धुआं अधिक होता गया और फिर बाहर की तरफ निकलने लगा...कुछ ही देर में मद्धिम से धमाके की आवाज सुनाई दी और कमरा साफ हो गया... पर प्रभावती की गुड़िया वहां पर नहीं थी— ।

रंजन आंखें बन्द किए पूर्ववत् बैठा रहा...वैसे ही उसका शरीर अकड़ा रहा... ।

लगभग दस मिनट के बाद उसकी आत्मा का प्रारूप उसके शरीर से प्रकट हुआ और हवा में उड़ता हुआ एक तरफ निकल गया... ।

उसका धुंधला सा आत्मिक रूप हवा में उड़ता आगे बढ़ता गया...वह रूप बिल्कुल वैसी ही स्थिति में था जिस स्थिति में वह अपने पर्वतीय कक्ष में आंखें बन्द किए बैठा था— ।

उसी प्रकार धुंधला सा आत्मिक आकार निबिलम्ब उड़ता हुआ एक ऐसे भयानक वातावरण में जा पहुंचा जहाँ कितनी ही खोफनाक शम्लों की चुड़ैलें उसकी ओर देख कर ओर मचाने लगी— ।

रंजन— ! एक चुड़ैल चीख मार उठी, “रुक जाओ यहां— ।”

इसे मैं अपने पास रखूंगी।—दूसरी चुड़ैल तड़पी—।
तीसरी ने कुछ कहा...और इस प्रकार सभी अपनी-२
भयानक आवाजों में पुकारने लगी...

अत्यन्त ही भयानक वातावरण... जबरदस्त खोफनाक
आवाजें... इतना भयानक शोर कि सामान्य व्यक्ति तो वह दृश्य
देख ही खत्म हो जाता—किन्तु रंजन का आत्मिक रूप वैसे ही
हवा में तेरता चला गया...

चुड़ेलें दूर से ही भयानक शोर मचाती रहीं... अट्टहास और
रुदन की मिली जुली आवाजों से वातावरण अति भयानक
होता रहा किन्तु कोई भी चुड़ैल उसके निकट जाने का साहस
नहीं कर सकी।

रंजन का प्रारूप आगे बढ़ गया... पीछे भयानक आवाजें
उसे पुकारती रहीं—हंसती, रोती एवं चीखती चिल्लाती रहीं
पर व्यर्थ—।

वातावरण शान्त हो गया... चुड़ैलों की बस्ती पीछे रह
गई... बाल योगी का आत्मीय रूप हवा में तेरता हुआ आगे बढ़
गया :।

सहसा वह किसी कब्रिस्तान में जा पहुँचा... आधी रात का
अन्धियारा चारों ओर फैला था..., हर कहीं निःस्तब्धता का
वातावरण बना हुआ था। उसका प्रारूप एक बूढ़े बरगद के
वृक्ष के पास धरती पर उतरा...

‘जय भूतनाथ... ! वह गम्भीर में बोल उठा..., “जय
देतों के देव।’

सहसा वहाँ धुआं उमरा और फिर एक नारी कण्ठ
गूँजा, “महा गुरु अल्पासा तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं रंजन !
मेरे साथ आओ !”

रंजन का आत्मिक प्रारूप उठ खड़ा हुआ... और धुएं के
पीछे चलने लगा—।

सहसा जमीन फट गई... रंजन का आत्मिक रूप एक वृद्ध
व्यक्ति के सामने खड़ा था...

“महागुरु अल्पासा !” रंजन बोला, ‘मैं तुम्हारे चरणों में

आशीर्वाद लेने आया हूँ... ।”

“तुम्हारा रास्ता कोई नहीं रोकेगा बालयोगी !—
अल्पासा का भारी स्वर उमरा, ‘भूतनाथ के गुलाम तुम्हारी
मदद करेंगे— ।”

“आपने मुझे शोलामन को दिया था—वह प्रेतराज गोनामा
से भयभीत है— ।

हा ! हा ! हा !—बूढ़े अल्पासा का भयानक अट्टहास
तड़पा और फिर वह चीख पड़ा..., शोलामन ! कहां हो
तुम... ?”

उसी वक्त कहीं से एक शोला उड़ता हुआ वहां पहुँच
गया— ।

“अपनी शकल में आओ ! एक दम— ।’—अल्पासा के स्वर
में अब भी चिल्लाहट थी— ।

उस समय आदेश का पालन हुआ—अल्पासा के सामने
मानवीय आकार का अग्नि-रूप आ गया— । धीरे २ आग
लुप्त हो गई और एक भयानक व्यक्तित्व सामने दिखाई देने
लगा ।

अत्यन्त ही भयानक रूप—शरीर एकदम रक्तम—
सिन्दूर के लेप की भाँति लाल किन्तु चेहरा बिल्कुल काला— ।
काले कलूटे चेहरे पर भयानक दिखाई देने वाले सफेद दाँत और
दोनों किनारों में से निकले हुए दो दो दाँत...उफ—! वह
इतनी खोफनाक शकल का था कि उसे कोई सामान्य व्यक्ति
देखता तो उसके हृदय की गति रुक जाती ।

“शोलामन ! शोलामन !!”—विचित्र व्यक्तित्वधारी बूढ़े
अल्पासा की आवाज ऊँची होती चली गई...’शोलामन !!
बाल योगी क्या कह रहा है... । तुम उस चूहे से भयभीत हो
जिसे गोनामा कहते हैं— तुम शतान लागूना के मामूली गुलाम
से भयभीत हो ?’

‘प्रेत पालक भूतराज !’—शोनामा का भारी किन्तु
नम्रता से परिपूर्ण स्वर गूँजा—“प्रेतराज गोनामा के पास जाने
के लिए मुझमें साहस नहीं है— । जब तक प्रेतराज—

“शोलामन—?”—।बूढ़ा भूत अल्पासा उसकी बात काट कर चीख पड़ा, “तुम जानते हो कि तुम क्या बक रहे हो—?”

‘मैं प्रेतलोक के असूलों का पाबन्द हूँ मेरे हज़ूर ! प्रेत-राज गोनामा जिसके बस में होगा, उसके नजदीक प्रेतलोक का कोई प्रेत नहीं जा सकता—।’

‘धमाक—।’ सहसा बूढ़े अल्पासा का बाजू हवा में लहराया और जोरदार धमाके की आवाज हुई।

उसी वक़्त भयानक शोलामन का शरीर बुरी तरह कपकपाया और फिर वह जमीन पर गिर कर तड़पने लगा—।

उसकी जबान से कराहटें फूट रही थीं...ऐसा लग रहा था जैसे उसका अंग २ जल रहा था—।

जहन्नुम...! जहन्नुम!!—रहस्यमय व्यक्तित्व का भूतराज अल्पासा बावरो की भांति चीखा—जहन्नुमी कुत्ते !! तुम रंजन की गुलामी में रहोगे...तुम तब तक जहन्नुम की आग में जलते रहोगे, जब तक गोनामा का व्यक्तित्व नहीं खत्म हो जाता...। तुम बाल योगी को हर राज बताओगे।

एक विचित्र बात हो गई...जिस जगह शोलामन का भयातक शरीर तड़प रहा था, वह जगह धुएँ से भर गई...शोलामन की कराहटों की आवाज़ें अधिक व्यथित हो गईं और फिर खामोशी छा गई—।

कुछ ही देर में धुआँ साफ हो गया...वहाँ शोलामन के भयानक शरीर की जगह एक काला कुत्ता तड़प रहा था।

सहसा श्वान उठा और वह भूतराज अल्पासा के कदमों पर घर लौटने लगा...वह काफी बेचैन दिखाई देता था।

‘मैं जा रहा हूँ रंजन !...अल्पासा का ऊँचा स्वर सुनाई दिया और फिर वातावरण में धुआँ भर गया...श्वान का रूप धारण किए हुए शोलामन के भयानक रुदन की आवाज़ें आने लगीं...वातावरण डरावना हो गया।

लगभग एक घंटे के बाद...

अपने पर्वतीय कक्ष में रंजन बैठा प्रभावती का इन्तजार कर रहा था...अपनी मायावी गुड़िया प्रभावती का जिसे उसने

जादूगर लागूना का ठिकाना मालूम करने के लिए नीलम गढ़ी में भेजा था....।

उसे कब्रिस्तान के मालिक अल्पासा के दरबार से आने के पश्चात ही प्रभावती का इन्तजार शुरू हो गया—।

मायावी गुड़िया को तब तक वापस आ जाना चाहिए था ।

लागूना और सोमेसंस के विषय में मायावी गुड़िया को जानकारी करनी थी और उसे इतनी देर में वापस आ जाना था किन्तु ऐसा नहीं हुआ....।

वह अशान्त हो गया था....अल्पासा के कब्रिस्तान से वापस आने पर वह काफी थक गया था....उसे योग साधना से जादुई क्रियाएं सम्पन्न करनी पड़ती थीं और परिणामस्वरूप जितना कठोर कार्य करना पड़ता....उतना ही वह अधिक थक जाता—।

उसकी परेशानी थकावट में अधिक वृद्धि कर रही थी....। वह चिंतित सा हो गया....। उसने समाधिस्थ अवस्था में अन्तर्लीन होकर मायावी गुड़िया की जानकारी करने का प्रयास किया किन्तु वह अशांति के कारण आत्मनियंत्रण नहीं कर सका ।

वह बेचैन होकर उठ खड़ा हुआ और पत्थरीले कक्ष में चक्कर लगाने लगा....उसकी अशांति में क्षण प्रतिक्षण वृद्धि होती जा रही थी....।

सहसा वह बुरी तरह चौंक उठा....उसे ऐसा लगा जैसे वह आकाश में उड़ता जा रहा है—। ऐसा समझना उसके लिए स्वाभाविक ही था....: उसने बाहर किसी के पायलों की आवाज सुनी थी—।

वह दो मिनट तक वहीं खड़ा सोचता रहा....फिर उसने अपने हाथ को ऊपर उठा कर जोर से बाजू को झटका दिया ।

“जय भूतनाथ !”—उसकी जवान से निकला और फिर वह अपने बाजू को पूर्ण गति से घुमाने लगा....।

धम...!—वह बुरी तरह चौंक उठा—उसने देखा कि कहीं से उसकी मायावी गुड़िया प्रभावती फर्श पर गिर पड़ी थी—उसके अंग टूटे हुए थे—शरीर में दरारें पड़ी हुई थीं... वह विनिष्ट हो चुकी थी—।

जय भूतनाथ !—वह जोर से चिल्लाया..., उसका चेहरा क्रोध से लाल हो गया—, उसकी भृकुटियां तन गईं—। वह यह भी भूल गया कि उसने कुछ ही देर पहले बाहर से आती हुई झंकृत पायलों की आवाज सुनी थी—।

उसकी निगाहें गुड़िया पर जमी थीं...उसके हृदय में ज्वाला जल रही थी—वह दांत किचकिच रहा था। उसे विश्वास था कि लागूना प्रभावती की मायावी वास्तविकता को जान गया होगा और उसे निःस्सार कर दिया होगा—।

उसने तेजी से पलट कर अपना सुनहरी जादुई डंडा उठाया और ध्वस्त गुड़िया पर घुमा दिया...। कुछ शोले भड़के और टूटी फूटी गुड़िया भस्मीभूत हो गई।

वह कुछ देर तक उसे देखता रहा...। फिर उसने आत्म-नियंत्रण कर लिया...। वह अशांति से दूर भागने का प्रयास करने लगा—।

जब तक मायावी गुड़िया नहीं लौटी थी...तब तक वह अशांत था किन्तु जब वह विनिष्ट हो गई तो उसे प्रभावती से मोह नहीं रहा था—।

भले ही उसकी नजरें गुड़िया की भस्म पर टिकी थीं किन्तु अब उसकी दृष्टि में वह राख मात्र ही थी, इससे अधिक उसका महत्व नहीं था।

तभी वह पुनः चौंक पड़ा...उसने फिरमें बाहर झंकृत होती हुई पायल की गुंजार सुनी थी—।

वह तेजी से बाहर निकला...उसने बाहर कदम ही रखा था कि उसकी आंखें फटी सी रह गईं—।

उसने देखा कि एक बड़े पत्थर से की ओट लगाए एक खूबसूरत युवती आँखें बन्द किए बैठी है—उसने टाँगें इस तरह फैला रखी हैं, जैसे वह बहुत थक गई हो—। उसने पायल पहन रखे हैं और कभी २ उसके पायल थिरक उठते हैं जिसके झंकार की आवाज गुंजरित हो उठती है।

वह पांच सात मिनट तक वहीं खड़ा रहा किन्तु उस युवती ने आँखें नहीं खोलीं—वह काफी थकी हुई दिखाई दे रही थी—।

वह धीरे २ कदम बढ़ाता हुआ उसके निकट जा पहुँचा पर तबभी उसने आँखें नहीं खोलीं...

“कौन हो तुम—?”

उसकी जबान से प्रश्न निकलते ही युवती ने हड़बड़ा कर आँखें खोल दीं और अपने सामने एक युवक को देख कर उसने घबराई आँखों से सहम कर कहा, “नहीं?”

रंजन कुछ कहने लगा कि वह युवती उठ कर एक तरफ भागी।

छम...छम...छम...वह भागती चली गई और पायल बजते रहे...

‘सुनो ! —’ रंजन ने उसे पुकार कर कहा। पर वह रुकी नहीं।

ऐसा दिखाई दे रहा था जैसे वह काफी घबरा गई है और छिप छिप कर इतनी दूर चली आई है...

वह भागती चली जा रही थी...पायलों की आवाज से समस्त वातावरण गुंजरित हो उठा था...रंजन वहीं खड़ा उसे देख रहा था...

सहसा भागती हुई युवती की गति धीमी हो गई—फिर वह रुक गई—एलट कर तनिक दूर खड़ा रंजन को देखती और लम्बे लम्बे साँस लेती रही...फिर उसकी टाँगें लड़खड़ा गईं और वह धड़ाम से गिर पड़ी—ऐसा अनुमान लगाया जा सकता था कि

वह थकावट के कारण खड़ी नहीं रह सकी—।

सहसा रंजन को एक अन्य ख्याल सूझा । अगर उसका अनुमान ठीक है कि वह कहीं से बचाव कर इतनी दूर पहुँची है तो निश्चित ही वह तीन चार दिन से भूखी होगी ।

वह उसकी ओर तेजी से बढ़ा । कुछ ही देर में उस युवती का जवान शरीर उसके बाजुओं में था और वह उसे अपने कक्ष में लिए जा रहा था ।

युवती बराबर बेहोश थी और रंजन के मन में उसके प्रति सहानुभूति पैदा हो चुकी थी—।

— (२) —

सीक्रेट सविस के कार्यालय के एक कमरे में बैठी रोजी विचार-मग्न थी—उसके चेहरे पर अशान्ति की रेखाएँ बिखरी हुई थीं—। उस वक्त वह प्रतापी के विषय में सोच रही थी ।

प्रतापी पिछले कई दिनों से कार्यालय नहीं आ रहा था... उसके फ्लेट के प्रवेश द्वार पर भी ताला लगा हुआ था ।

वह हर रात को उसके फ्लेट के फोन नम्बर डायल करती किन्तु वहाँ घंटी टनटनाती रहती—कोई होता तो रिसीवर उठाता ।

वह समझ नहीं पा रही थी कि प्रतापी एकदम कहां चला गया—।

उम्मे यह भी ज्ञात नहीं था कि वह छुट्टी लेकर गया है या बिना बताए ही दफतर से गायब है ?

प्रतापी के लिए सोचना इसलिए भी स्वाभाविक था क्योंकि सोमेंसस काण्ड के पश्चात यह विश्वास किया जाता था कि उस पर किसी वक्त भी जादुई वार हो सकता था ।

उसे प्रतापी के साहस और शौर्य पर विश्वास था—। उसे यह भरोसा था कि वह बड़े से बड़े खतरनाक मुजरिम से टक्कर ले सकता है किन्तु जादूगरों की शत्रुता तो उसके लिए घातक

भी बन सकती थी ।

इसीलिए वह चिन्तित थी—वह इतना भी साहस नहीं कर सकी था कि सुपर महाजन सु पूछ सके ।

सहसा उसे एक विचार सूझा जिससे वह सुपर महाजन से प्रतापी के विषय में पूछताछ कर सकती थी ।

उसने अपने विचार पर गहराई से सोचा, फिर उसने फोन का रिसीवर उठा कर नम्बर डायल किए ।

‘सीक्रेट सर्विस सुपर स्पीकिंग !’—दूसरी ओर से भारी आवाज सुनाई दी ।

‘मैं रोजी हूँ सर !’

‘क्या बात है मिस रोजी !’

‘सर ! वह मिस शान्ता है ना ? मैं उस मिस की बात कर रही हूँ जो पहले सेन्ट्रल इन्टेलीजेंस से यहां काम करने आई थी—’

‘उसे क्या हुआ ?’

‘वह मुझे मिली थी सर !’

‘मेरे पास फिजूल बातें सुनने के लिए वक्त नहीं है बेवकूफ लड़की !’ दूसरी तरफ से सुपर गुर्गए, ‘‘जल्द बोलो ! क्या कहना चाहती हो ?’

‘वह प्रतापी की बहन की फ्रेंड है सर !’

‘मैं पूछता हूँ कि मेरे मतलब की कोई बात है तुम्हारे पास !’

‘वह प्रतापी के बारे में पूछ रही थी जवाब !’

‘उसे बताया नहीं कि वह जहन्नुम में चला गया है...’

घड़ाक...! यह कहते हुए दूसरी तरफ से रिसीवर क्रेडल पर पटक दिया गया...।

रोजी घक से रह गई... उसने झूठ बोला था और उसके मन का पाप ही उसे सहमा देने के लिए काफी था ।

वह कुछ देर तक धड़कते हृदय से बैठी रही, फिर वह

पूर्ववत् विचारों में तल्लीन हो गई। उसे प्रतापी के लिए चिन्ता था, वह बहुत ही ज्यादा चिन्तित थी।

चाहे प्रतापी ने उसे कभी लिफ्ट नहीं दी थी किन्तु फिर भी वह उससे मूक प्यार करती थी... हृदय की गहराईयों से वह उसे चाहती थी—।

वह उसकी घरेलू परिस्थितियों को जानता थी... उसके पापा सीक्रेट सविस डिपार्ट के इन्सपेक्टर जनरल थे और लाखों रुपयों की सम्पत्ति के मालिक थे किन्तु उनका आदेश था कि प्रतापी उनके बंगले के मुख्य द्वार को भी पार न करे...।

उसे यह भी मालूम था कि ममता की मारी माँ बेटे के लिए तड़पती है किन्तु वह अपने पति के आदेश की अहंलना नहीं कर सकती।

कभी २ तो रोजी को प्रतापी के एकाकीपन पर दया सी आ जाती और उसकी आंखों में आंसू छलछलाने लगते...।

आज भी उसकी ऐसी ही स्थिति थी...। उसे पक्का यकीन था कि उसके अतिरिक्त प्रतापी के इस प्रकार गायब हो जाने के विषय में कोई भी चिन्तित नहीं होगा।

वह बहुत ज्यादा अशान्त हो गई... उसके सामने फाईले पड़ी थीं किन्तु उन्हें देखने के लिए उसका मन नहीं चाह रहा था।

उसने फाईलों को समेटा और उठ खड़ी हुई... वह कार्यालय के प्रांगण से बाहर निकल कर खुले वातावरण में प्रतापी के विषय में सोचना चाहती थी।

वह अपने कमरे के द्वार की ओर बढ़ी ही थी कि फोन की घंटी टनटना उठी...।

वह पलट पड़ी... उसने रिसीवर उठा कर अपना परिचय दिया।

दूसरी ओर सुपर महाजन थे जिन्होंने उसे अपने कमरे में

बुलवाया था। उसने रिसीवर रखा और अपने 'इमीजेट बॉस' के कमरे की तरफ चल पड़ी—।

जिस वक्त रोजी सुपर महाजन के कमरे में पहुँची, उस वक्त वह एक फायल पर झुके हुए थे...

वह उनकी भेज के निकट पहुँच कर बोली, 'मैं उपस्थित हूँ सर !

'बैठ जाओ !'—वह सिर झुकाए हुए बोले—।

वह एक कुर्सी पर बैठ गई... सुपर काम करते रहे...

सात आठ मिनट के पश्चात सुपर महाजन ने फाईल बन्द करके फिर ऊपर उठाया और उसे घूरने लगा।

रोजी का हृदय धड़कने लगा—, वह समझ गई कि सर सुपर किसी मामले की जवाबदेही चाहते हैं...

'रोजी साहिबा !' उनके स्वर में व्यंग्य था—'सरकार तुम्हें हर मास मोटा वेतन इसलिए देती है कि कानून की सुरक्षा कर सको—।'

रोजी ने स्वयं को सम्भाल कह कहा, 'मैं जानती हूँ सर।'

'तब तुम यह भी जानती होगी कि जो व्यक्ति अपने कर्तव्य की पूर्ति नहीं करता, सरकार उसे नौकरी से हटा देती है—।'

क्या कहे वह—? स्पष्टता उस पर सीधा वार किया जा रहा था—।

'मिस रोजी !—' कुछ देर के बाद वह फिर बोले, 'कुछ दिन पहले तुम्हारी ड्यूटी लगाई गई थी कि परमेन्द्र को चेक करो...। सुना है कि आजकल वह कभी २ रात भर घर से बाहर रहने लगा है।'

'आपने ड्यूटी तो नहीं लगाई थी सर ! बात अवश्य की थी...। आपने कहा था कि परमेन्द्र के पापा आपके दोस्तों में से थे और उनकी विधवा ने आप से बात की है।'

'तब तुम्हारा क्या मतलब है कि मैंने तुम्हारे सामने अपना

निजी मामला उठाया था—।”

‘मैं तो यही समझी थी... ?’

वह भड़क उठे... क्रोध में बोले—‘तुम मेरी रिश्तेदार हो क्या... ? आखिर मैं तुम्हें अपने घर की बातें क्यों बताने लगा— ?’

वह क्या जवाब देती... ? खामोश बैठी रही... । तीन चार मिनट के बाद वह बोली, “आप चाहें तो मैं अब पता कर सकती हूं सर ।”

‘नहीं ! मैंने स्वयं पता लगा लिया था और मुझे ऐसे लगा है कि वह किसी गैंग में फंसा गया है— ।’

‘तब तो आपको उस गैंग पर हाथ डालना चाहिए— ।’ आपका आदेश हो तो मैं सारा काम सम्भालने के लिए तैयार हूं—।’

“तुम्हारे लिए सर ब्लेक क्रॉस ने अन्य आदेश ट्रांसमीट किया है । वह तुम्हें कल तक मिल जाएगा । हो सकता है कि तुम्हें नीलम गढ़ी जाना पड़े—अपने मेक अप का सामान तैयार रखना— ।”

‘नीलम गढ़ी कहां है सर ।’

‘मेरी जेब में... ?’ वह पुनः भड़क उठे—।

“मैंने तुम्हें यह कहा है कि शायद तुम्हें नीलम गढ़ी जाना पड़े । स्पष्ट है कि अभी वहां जाने का तुम्हारा पक्का फैसला नहीं हुआ ।’

रोजी कुछ नहीं बोली, सुपर बोलते चले,—“अगर तुम्हें वहां भेजा गया तो तुम्हें नीलम गढ़ी का क्षेत्र भी बता दिया जाएगा ।’

कुछ देर खामोशी रही..., सुपर फिर बोले—, ‘बहरहाल तुम अपनी तरफ से तैयारी मुकम्मल रखो...नया आर्डर मिलने के बाद तुम्हें वहां तुरन्त जाना पड़ेगा— । अब तुम जा

सकती हो— ।’

वह उठ खड़ी हुई, सुपर को जैसे कोई बात सूझी, वह बोले, ‘नीलम गढ़ी में जाना खतरनाक सिद्ध भी हो सकता है। अगर तुम किसी रिश्तेदार या सगे सम्बन्धी को मिलना चाहो तो कल तक मिल लेना। हो सकता है कि वहाँ से तुम्हारी लाश आए— ।’

रोजी ने कभी जिन्दगी की चिन्ता नहीं की— । उसे ज्ञात था कि वह जिस विभाग में काम करती है, वहाँ किसी वक्त भी उसके सिर मौत मण्डला सकती है और ऐसा कई बार हो भी चुका था किन्तु सुपर महाजन ने उसे जिस तरह शब्द कहे थे, वह उसे बहुत अखरे पर उसने प्रतिवाद नहीं किया... ।

वह वहीं खड़ी सोचती रही, फिर उसे सुपर की आवाज सुनाई दी, “तुमने प्रतापी के बारे में पूछा था क्या—?”

‘शान्ता मिली थी, वह—

‘मैं तुम्हारी फिजूल बातों पर तुम्हें नाराज होता हूँ, रोजी ! मैं जानता हूँ कि तुम्हें प्रतापी की खोज होगी पर तुम यकीन जानो कि मैं उसके बारे में तुम्हें कुछ नहीं बता सकता। वह कई दिनों से गायब है— ।’

रोजी का दिल धड़कने लगा... । प्रतापी का बिना सूचना कहीं गायब हो जाना चिन्ता का विषय था— ।

उसने कहा, ‘हमलोग कितने ही रहस्यमय मामलों की खोज करते हैं—तब क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं कि हम अपने एक साथी की खोज—

‘बस। अब तुम उसकी खोज में लग जाओ और अपनी ड्यूटी को भुला दो जैसे तुम्हें हराम का वेतन मिलता है— ।’

वह कुछ कहने लगी, तभी सुपर ने क्रोध में कहा, “अब तुम चली जाओ और नीलम गढ़ी की तैयारी करो— ।”

रोजी चली गई—सुपर विचारों में तल्लीन हो गए ।

उन्होंने अज्ञात चीफ ब्लेक क्रॉस का मेसेज रोजी को दे दिया था कि वह नीलम गढ़ी को जाने के लिए तैयार रहे— मेकअप का सामान मुकम्मल कर ले और यह बात ध्यान में रखले कि सम्भवतः उसे वहां जिन्दगी से भी हाथ धोने पड़ें।

वास्तविकता यह थी कि उन्हें स्वयं भी ज्ञात नहीं था कि नीलम गढ़ी कहाँ पर स्थित है—।

शेष रहा प्रतापी के विषय में...कुछ ही देर पहले जब उन्हें सीक्रेट सर्विस विभाग के अज्ञात चीफ ब्लेक क्रॉस का ट्रांसमीटर मेसेज मिला था तो उन्होंने प्रतापी के रहस्यमय ढंग से गुप्त होने की उन्हें सूचना दी थी।

तब चीफ ने उन्हें बताया था कि प्रतापी नीलम गढ़ी में पहुँच चुका है और वह इस वक़्त सरकारी ड्यूटी पर है किन्तु चीफ ने स्पष्ट शब्दों में सुपर को कह दिया था कि वह इस रहस्य को किसी के सामने प्रकट नहीं करेंगे और किसी को आभास भी नहीं होने देंगे कि वह इस तथ्य से परिचित हैं।

वह इसी विचार में तल्लीन थे...कि आखिर चीफ ब्लेक क्रॉस हर खतरनाक अभियान पर प्रतापी को ही क्यों भेजते हैं—।

प्रतापी अपने चीफ को गालियाँ देता था और अज्ञात चीफ भी अपने भरभराए स्वर में कई बार कह चुका था कि वह प्रतापी की लाश को किसी चौराहे पर लटकता हुआ देखना चाहता है किन्तु ऐसा कभी नहीं हुआ—। यहां तक कि दो चार बार सुपर महाजन ने प्रतापी को नौकरी से हटा दिया और फिर कुछ ही दिनों में प्रतापी चीफ के विशेष आदेश से उनकी छाती पर मूँग दल रहा होता।

वह काफी देर तक इन्हीं विचारों में तल्लीन रहे, फिर उनका ध्यान परमेन्द्र की ओर गया—।

पाँच सात दिन पहले परमेन्द्र की ममी ने उन्हें बताया था

कि उन दिनों उसका बेटा किसी रहस्यमय उलझन में रहता है—बहुत कम बोलता है...हर रात देर से घर आता है, कभी कभी तो रात भर घर पर भी नहीं आता ।

सुपर को परमेन्द्र की ममी ने यह भी बताया था कि उसके बेटे का स्वास्थ्य भी गिरता जाता है । उसकी राय में उसे कोई कष्ट भीतर ही भीतर घुला रहा है ।

सुपर महाजन परमेन्द्र के पापा के दोस्त थे । उसकी मृत्यु के पश्चात् सुपर कभी २ अपने मित्र की विधवा को आश्वासन देने चले जाते ।

ऐसी स्थिति में उन्होंने स्वयं ही उसकी जांच करनी चाही और उन्हें पता चला कि परमेन्द्र किसी गैंग के हाथों में फंसा हुआ है ।

वह गैंग कौन सा है, इस विषय में उन्हें इतना ही पता चल सका था कि बाबुल नाम का एक गुन्डा उस गैंग का सरदार है ।

प्रतापी शहर में नहीं था—वर्ना वह बाबुल के पीछे उसे लगा देते— ।

अब उन्होंने निर्णय किया था कि वह इन्स्पेक्टर कृपाल को परमेन्द्र का केस सौंपेगे...।

वह अपने निर्णय पर विचार करते रहे...क्लॉक की सूईयां आगे बढ़ती गई— ।

सात

अमावस की रात थी...नीलम गढ़ी में बिजली नहीं थी... वह लोग घरों में बड़े बड़े दिए अथवा मशालें जला कर रोशनी का आयोजन किया करते थे ।

अमावस की आधी रात...चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था...। अधियारे का आधिपत्य था...हाथ को हाथ नहीं सुभाई दे रहा था ।

ऐसे वक्त में प्रोफेसर नकवी अपने पत्थरीले कमरे में फर्श पर बिछे बिस्तर पर बैठा विचारों में मग्न था...

कमरे के एक कोने में नन्हें सी दिये की लौ से मद्धिम रोशनी फैली हुई थी...

थोड़ी देर पहले वह अपनी डायरी लिखता रहा था और अब वह विचारलोक में विहार कर रहा था—।

उसे नीलम गढ़ी में आए हुए कुछ दिन हो गए थे...उसने यहां कितनी ही विचित्र बातें देखी थीं...

पंच कोबरा के पास सचमुच जादू था...वह अपने काम में सिद्धहस्त था...वहां के दूसरे चौधरी भी अपने काम में कमाल रखते थे और सम्भवतः यही कारण था कि पहली मलिका नारिमा के मौजूद रहते तक आपस में कोई मतभेद नहीं था...। सभी अपने अपने काम में मस्त थे ।

परन्तु...जब से मलिका कोलम्पा वहां आई थी...तब से कुछ चौधरियों का परस्पर शीत युद्ध चल रहा था किन्तु ऐसा होते हुए भी कोई व्यक्ति भी टकराव में आमने सामने नहीं हुआ था।

भूतपूर्व मलिका नारिमा का कोई पता नहीं था...उसकी निकटतम साथी सलमीना को उसकी उत्तराधिकारिणी बनाना था कि कोलम्पा ने उसे पराजित करके उसका अधिकार छीन लिया था...वह कोलम्पा से इन्तकाम चाहती थी किन्तु सम्भवतः उसने अपने एक दो साथियों के अतिरिक्त किसी के सामने यह बात खुल कर नहीं कही थी—।

प्रोफेसर नकवी को सबसे ज्यादा विचित्र व्यक्तित्व पंच कोबरा की भरपूर जवान बेटी कदीसा का लगा था...। सच-मुच ही उस पर नागरिक सभ्यता का प्रभाव नहीं था और कभी कभी तो नकवी को यह आभास होता था कि उसे स्त्री पुरुष के कामुक सम्बन्ध की जानकारी भी नहीं है।

पिछले दिनों उसने नकवी से यह पूछा था कि संतान का विवाह से क्या सम्बन्ध है...? तब से आज तक नकवी यह विश्वास नहीं कर सका था कि कदीसा ने यह शब्द परिहास में कहे थे।

आज भी ऐसा लगता था जैसे वास्तव में कदीसा की युवा बुद्धि विवाह और संतान के परस्पर सम्बन्ध से अपरिचित है और उसकी जवानी को किसी पुरुष की आवश्यकता का आभास नहीं है।

अमावस की रात थी और प्रोफेसर नकवी विचार लोक में विहार कर रहा था...। वास्तव में वह बाहर निकलना चाहता था...वह नीलम गढ़ी की गतिविधियों को अमावस की आधी रात में देखना चाहता था किन्तु वह साहस नहीं कर पा रहा था।

उसने सुन रखा था कि बस्ती की मलिका कोलम्पा रात को जन्म-जात नग्न घूमा करती है।

वह शैतान की दुल्हन कहलाती थी तब यह बात भी स्पष्ट थी कि वह शैतान जादूगर लागूना की प्रमुख एवं पूर्णतया प्रशिक्षित शिष्याओं में से एक है ...।

जादूगर लागूना के पश्चिमी जादू की बुनियाद कामुकता और विलासिता पर आधारित थी ऐसी स्थिति में प्रोफ़ेसर नकवी के लिए अनुमान लगाना कठिन नहीं था कि कोलम्पा जन्मजात नग्न होकर निश्चित ही कोई जादुई साधना करती होगी...। वह ऐसी स्थिति को अपनी आँखों से देखना चाहता था...उसे विश्वास था कि अमावस की रात के काले अन्धेरे में कोलम्पा अवश्य ही अपने जादुई अमल के लिए अपने ठिकाने से बाहर कहीं विहार कर रही होगी।

ऐसा होते हुए भी वह पंच कोबरा की अनुमति के बिना बाहर जाने का साहस नहीं कर रहा था—। उसे ज्ञात नहीं था कि बस्ती में आधी रात को कोई बाहर भी निकलता है या नहीं और अपनी इसी सीमित जानकारी के कारण वह कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहता था।

वह नीलम गढ़ी में किसी विशेष उद्देश्य से पहुंचा था और उसकी किसी गति विधि से यदि उसे नीलम गढ़ी से निकलने के लिए दिवश होना पड़ा तो उसका उद्देश्य अपूर्ण रह जाएगा...वह यह स्थिति नहीं लाना चाहता था।

वह समझ नहीं पा रहा था कि करे तो क्या करे...? परन्तु...

तभी वह चौंक पड़ा...उसने किसी की पद-चाप सुनी थी...। निःसन्देह पद-चाप काफी मद्धिम थी किन्तु नकवी तो हर समय चौकन्ता रहता था और यही कारण था कि वह सतर्क हो गया था।

उसकी नज़रे पंज कोबरा के कमरे की तरफ उठीं—वहाँ घुप अन्धेरा था—।

उसके अनुमान के अनुसार कदीसा भी अपने कमरे में सो रही होगी, तब—? तब यह किसके कदमों की आवाज़ हो सकती है—?

वह उठ खड़ा हुआ—वह किसी आकस्मिक वार से बचना चाहता था....।

पर—उसका अनुमान गलत निकला—। उस पर कोई वार करने नहीं आया था—उसके कमरे के द्वार पर से पर्दा उठा—और उसके सामने कदीसा खड़ी थी—।

‘तुम—? तुम इस वक्त—?’

शी—ऽ ! —कदीसा ने अपने अंधरों पर उंगली रख कर उसे खामोश रहने का संकेत किया—।

नकवी उसे ध्यान से देख रहा था—कदीसा उस समय अत्यन्त ही हल्की वेश भूषा में थी—।

उसका वक्ष छोटी सी अगिया से अर्धढका हुआ था और उसने जांगिया पहन रखा था—उसका सारा शरीर नग्न था—।

उसके घने बाल खुले हुए थे—वह पहले से कहीं ज्यादा जवान दिखाई दे रही थी—।

वह धीरे धीरे कदम बढ़ाती हुई उसके पास चली आई । वह घबरा गया ।

उसके मस्तिष्क का बोझ बढ़ गया—। उसे डर था कि पंज कोबरा को उसके पास कदीसा की मौजूदगी की जानकारी हो गई तो कहीं वह किसी भ्रम में उसे अपने घर से बाहर ही न निकाल दे—।

उसकी निगाहें बार बार दीवार की उस खाली जगह पर उठ रही थी जिस से पंज कोबरा के कमरे में झाँका जा सकता था अथवा उस कमरे में मौजूद कोई व्यक्ति उसके कमरे का

नजारा देख सकता था—।

पंच कोबरा के कमरे में उस खाली जगह को बन्द करने का साधन था किन्तु उस वक़्त तो वह 'खिड़की' खुली थी—।

वह उसके निकट आ कर धीरे से बोली, "...बाबा घर पर नहीं हैं ?'

'तब तुम इतना धीरे—

'शी—S ?—नकबी ऊंचा बोलने लगा था कि कदीसा ने उसे फिर अपने अधरों पर उंगुली रख कर मौन रहने का संकेत कर दिया—।

नकबी उसका अभिप्रायः समझ नहीं सका कि जब पंच कोबरा घर पर नहीं है तो वह उसे ऊंचा क्यों नहीं बोलने देती ।

उसने मद्धिम स्वर में अपने प्रश्न को पूछ लिया "...तब कदीसा पूर्ववत् बोली—'मेरी बेटी सो रही है ...फनमणी...'। तुम ऊंचा बोलोगे तो उसकी नींद टूट जाएगी ।''

उसका संकेत उस सर्पिणी की ओर था जिस से वह मलिका कोलम्पा को डंक लगवा कर उसे हमेशा के लिए समाप्त करवा देना चाहती थी पर नकबी को कदीसा का यह संकल्प नहीं भूला था कि वह फनमणी का प्रयोग उस समय करेगी, जब वह कोलम्पा की छाती में अपनी कटार घोंपने में असफल रहेगी ।

उसने बहस करना उचित नहीं समझा और धीरे से बोला, 'बाबा कहां गया है—।'

'यहां से दूर पहाड़ियों की दूसरी तरफ नीलम गढ़ी का पीर रहता है...'। हर अमावस को उसकी पूजा करने बाबा दूसरे चौधरियों के साथ जाया करता है...आज [भी वह वहीं गया है—।''

'बस्ती के दूसरे लोग नहीं जाया करते हैं क्या...?'

'वहां शादीशुदा जोड़े ही जा सकते हैं...या वह लोग

जाया करते हैं जिनकी शादी होनी होती है। आज कासवी की वहां शादी होगी।'

"वहां मलिमा कोलम्पा भी जाएगी क्या...?"

"नहीं!"—कदीसा ने उत्तर दिया—'अगर मलिका शामी कबीले की हो तो वह जाया करती है। परि भौखा के दरबार में शामी कबीले के बाहर का कोई आदमी नहीं जा सकता—।"

'अगर मैं वह दरबार देखना चाहूं तो...?"

कदीसा ने नकारात्मक सिर हिला दिया, "ऐसा नहीं हो सकता।"

नकवी ने कुछ सोचा, फिर कहा, "तुम जानती हो कि मैं यहाँ शामी कबीले के बारे में जानकारी करने आया हूँ, मुझे इस पर एक पुस्तक लिखनी है।"

कदीसा ने स्वीकारात्मक सिर हिलाया, वह पुनः बोला, "पर मैं समझ रहा हूँ कि यहां पर मेरा आना बेकार रहेगा...। तुम भी तो मेरी कोई मदद नहीं कर रही।"

दोनों बैठ गए थे...कदीसा उसकी आंखों में आंखों डाल कर कुछ देर तक देखती रही, फिर बोली, 'मैंने तुम्हें फनमणी को दिखाया है...कासवी को चिल्ले पर चढ़ते हुए भी दिखाया है...तब भी तुम नाराज हो—।"

"मैं नाराज नहीं कदीसा!"—उसने जाल फैलाते हुए सामने बैठी युवती का हाथ अपने हाथ में ले लिया, "मैं निराश हो गया हूँ।"

कदीसा ने अपने हाथ के समर्पण पर एतराज नहीं किया पर ऐसा प्रतीत होता था जैसे उसे इसका महत्व भी ज्ञात नहीं है।

'तुम चाहते क्या हो?'

"मैं कोलम्पा को देखना चाहता हूँ...मैं तुम्हारी सखी सलमीना से मिलने का इच्छुक हूँ।"

“कोलम्पा के ठिकाने पर जाने के लिए मौत का खतरा है प्रोफेसर ! क्या तुम वह खतरा उठाने के लिए तैयार हो ?”

“मैं मौत से नहीं डरता...! मैं बड़े बड़े खतरनाक लोगों से टक्कर ले चुका हूँ और देख लो ! अभी तक जीवित हूँ । अगर मुझे कभी लकोम्पा से भी टकराना पड़े तो मैं नहीं डरूंगा ।”

‘वह शैतान की दुल्हन है प्रोफेसर !’

“मैं स्वयं शैतान बन कर उसे दुल्हन बना लूंगा ।”

कदीसा के अधरों पर क्षण भर के लिए हंसी आई किन्तु वह तुरन्त ही गम्भीर हो गई । वह सोच रही थी कि अपने सामने बैठे साहसी युवक का प्रयोग कोलम्पा से बदला चुकाने के विषय में किस तरह किया जाए ।

दोनों के हाथ अभी तक बंधे थे...। नकवी महसूस कर रहा था कि कोई विद्युत तरंग उसके शरीर में प्रवाहित हो रही है किन्तु कदीसा का शरीर उत्तेजित नहीं था, वह सामान्य ढंग से सोचने में तल्लीन थी—।

‘प्रोफेसर !’...वह मौन भंग करती हुई बोली, ‘क्या तुम मेरे साथ चलोगे ?’

‘कहां...?’ उसका हृदय उचक गया ।

‘सलमीना के पास...’ वह बोली, ‘तुमने कहा था ना कि तुम कोलम्पा से टकराने में संकोच नहीं करोगे ।’

‘मैं अब भी यही कहता हूँ ।’

‘उठो...!’...वह उठती हुई बोली, उसने अपना हाथ नहीं छुड़ाया बल्कि उसके हाथ को अपने हाथ में ले लिया ।’

‘सुनो ! तुम डरोगे तो नहीं...?’

‘क्या मतलब है तुम्हारा—?’

‘आज अमावस की रात है...। हो सकता है कि कोई जादुई अमल कर रहा हो...?’

‘जादुई अमल रास्ते में होता है क्या ?’

‘जब से शैतान की दुल्हन मलिका बनी है, तब से बड़ी २ अजीब बातें देखने को मिलती हैं। सुना है कि मलिका कभी २ अलफ नंगीं होकर पहाड़ों में घूमती देखी गई है—।’

‘तुम इसे बुरा समझती हो क्या ?’

कदीसा ने कोई जवाब नहीं दिया, सम्भवतः उसे अपने नग्न प्रायः रूप का ध्यान आ गया था...

वे दोनों बाहर निकले। नकवी हाथ छड़ाना चाहता था, उसे यौवन की विद्युत् तरंग का स्पर्श असह्य महसूस हो रहा था किन्तु कदीसा ने उसका हाथ पूरी मजबूती से पकड़ा हुआ था।

नीलम गढ़ी के पत्थरीले मकानों का क्रम शृंखला बध नहीं था। कहीं कोई मकान बना हुआ था और कहीं कोई मकान...। मध्य में कहीं तंग रास्ते थे...कहीं खुला मैदान...और कहीं चौड़ी सी सड़कें—, कितने ही मोड़ थे—अत्यन्त ही विचित्र सिलसिला था।

वे दोनों एक तंग रास्ते पर बढ़े जा रहे थे—कदीसा उसके साथ इतनी निकट दूरी पर चल रही थी कि कभी २ अंधेरे में दोनों के जिस्म टकरा जाते—।

सहसा नकवी चौंक पड़ा—उसे किसी की जोर २ से सांस लेने की आवाज सुनाई दी—।

वह रुक कर खड़ा हो गया...कदीसा भी उसके साथ रुक गई...तभी नकवी सहम सा गया—।

उसने देखा कि मोड़ पार करके एक औरत भाग कर जोर जोर से सांस लेने की आवाज फैलाती हुई उनके निकट आकर खड़ी हो गई।

उसने अपने जिस्म पर सफेद लेप किया हुआ था...चेहरे पर सफेद राख थोपी हुई थी...उसके खुले बालों पर भी राख

पड़ी हुई थी....।

वह अंधेरे में भी दिखाई दे रही थी....। उसने निकट आकर दोनों को घूरना शुरू कर दिया और फिर उसने एक अट्टहास किया ।

हा ! हा ! हा ! कहकहा लगा कर वह भागती हुई उनके पास से निकल गई ।

नकवी कुछ देर तक बुत्त सा बना खड़ा रहा....फिर धीरे से बोला, यह कौन थी....?

शामी कबीले की एक औरत—, कदीसा ने जवाब दिया, “यह बंटनी कर रही है ?”

“बंटनी क्या होता है—?”

कदीसा ने उसका हाथ पकड़े हुए आगे बढ़ते २ कहा, “इसका बेटा बीमार है....आज अमावस की रात पूर्ण बस्ती में इस तरह भागती हुई घूमने के बाद यह उस नीलम गढ़ी के परि भोखा के दरबार में जाएगी—। कल तक उसका बेटा ठीक हो जाएगा ।”

“इस बात का पूरा विश्वास है क्या ?”

“बिल्कुल यक़ीनी—वह चलते २ बोली—, “अगर ऐसा न होता तो परि भोखा की इतनी मान्यता न होती ।”

लगभग पन्द्रह मिनट के पश्चात वह उसे सलमीना के अधिवास पर ले गई....। बाहर रुक कर वह धीरे से बोली—

“सलमीना कौ किसी बात का बुरा न मानना । कोलम्बा से पराजित होने के बाद उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया है । कभी २ वह बुरी तरह झुंझला कर बात करती है—।”

मकान पर कोई द्वार नहीं था....केवल पर्दा लटक रहा था ।

‘मेरे साथ खामोशी से चले आओ ! कुछ भी हो, जब तक सलमीना तुमसे सीधी बात शुरू नहीं करेगी, तब तक तुम एक शब्द भी जवान से नहीं निकालोगे ।’

उसने कोई उत्तर नहीं दिया, मोन होकर कदीसा के साथ चल दिया....।

प्रवेश द्वार के बाद एक तंग सा रास्ता था...वे दोनों उसे पार कर गए...फिर एक कमरा था—।

कमरे के एक कोने में पिजरा लटक रहा था जिसमें एक मैना बन्द थी...। उसके निकट ही दीवार के साथ बड़े स्थान पर एक मशाल जल रही थी—।

उस मैना को देख कर नकवी ने प्रश्नात्मक दृष्टि से कदीसा को देखा किन्तु उसे कोई उत्तर न देकर वह मैना के पिजरे के पास पहुँची—।

‘मैं अपने साथी के साथ सलमीना के पास जाना चाहती हूँ बाकवी !’

‘चली जाओ !’

मैना की ज़बान से नारी कण्ठ गूँजा...। नकवी ने आश्चर्य से कदीसा को देखा पर उसके चेहरे पर विस्मय की रेखाएँ नहीं थीं...।

वह उसे साथ लेकर दूसरे कमरे की तरफ जाने लगी तो उसे मैना का पुनः मानवीय स्वर सुनाई दिया, ‘मेरी बात सुनो कदीसा !’

वह रुक गई, उसने पलट कर मैना को देखा—।

‘तुमने सलमीना को मेरी मुक्ति के लिए कहा था क्या ?’

‘कहा था । वह कहती है कि उसने तुम्हें शर्त बता दी है...।’

‘वह शर्त बहुत मुश्किल है कदीसा । कोलम्पा की मौत कैसे हो सकती है ।’

‘तब वह तुम्हें आज़ाद क्यों करेगी ! तब वह कहती है कि अगर तुम ठीक वक्त पर वहाँ मौजूद होती तो निश्चित ही कोलम्पा हार जाती ।’

‘उससे सलमीना का फिर मुकाबिला करवा दो, मैं मौजूद रहूंगी।’

‘अब कुछ नहीं हो सकता....’

मैना खामोश रह गई....कदीसा नकवी के साथ दूसरे कमरे की तरफ चल पड़ी। वह आश्चर्यचकित था....उसने मैना का विचित्र दृश्य देखा था जिसके विषय में उसने अनुमान लगाया था, सलमीना ने कोई रूह मैना के शरीर में बन्दिनी बना ली होगी।

वह विवरण के साथ कदीसा से पूछना चाहता था किन्तु वहां वक्त ही कहां था—।

वे दूसरे-कमरे में प्रविष्ट हुए....उस समय सलमीना एक छोटे से तख्ते पर समाधिस्थावस्था में बैठी थी....। उसकी आंखें बन्द थीं किन्तु वस्त्र बहुत कम थे....उसके बाल खुले थे और उसका चेहरा बहुत ज्यादा लाल था। वह भरपूर जवान थी। नकवी ने कदीसा को साभिप्रायः दृष्टि से देखा....। परन्तु कदीसा की ओर से कोई प्रतिक्रिया दिखाई नहीं दी....। उसने अब नकवी का हाथ छोड़ दिया था किन्तु वह उसके साथ बिल्कुल ही सटी खड़ी थी....।

सहसा नकवी चौंक पड़ा....उसने कहीं से किसी पक्षी के पंखों की फड़फड़ाहट की आवाज सुनी थी....।

वह आवाज इस प्रकार मन्द थी जैसे वह पक्षी दूर कहीं उड़ रहा हो किन्तु फड़फड़ाहट का स्वर क्षण प्रति क्षण बढ़ता जा रहा था—।

वह आवाज काफी बढ़ गई थी....और फिर....? एक विशाल पक्षी ऊपर से पंख फड़फड़ाता हुआ नीचे उतरा—।

ठीक उस वक्त सलमीना ने आंखें खोल दीं....उसने नकवी और कदीसा की तरफ आंखें उठा कर भी नहीं देखा। वह अपने सामने बैठे विशाल पक्षी की ओर देखती रही—।

‘क्या बना शीरशा !’—सलमीना ने अपने सामने उपस्थित पक्षा से इस तरह कहा जैसे उसने कदीसा और नकवी को देखा तक न हो—।

‘डगलस मान गया है सलमीना ।’

नकवी बुरी तरह चौंक उठा—उसने डगलस का नाम सुना हुआ था—। वह कभी सोमेसंस का महबूब था—किन्तु सोमेसंस ने भारतीय जादूगर बाल योगी रंजन के जाल में फंस कर डगलस से बेवफाई की जिससे चिढ़ कर उसने सोमेसंस को एक ऐसी दवाई खिला दी जिसके पश्चात वह कामुकता में तड़पन लगी ।

उस दवाई के प्रभाव के पश्चात सोमेसंस का शरीर इस प्रकार हो गया था कि याद वह किसी से भी कामुक सम्बन्ध स्थापित करे तो उसके शरीर में कोढ़ फूट पड़ेगा ।

उन दिनों लागूना की वह विशेष कोसम्बी थी और उसे शैतान की दुल्हन बनने का जादुई प्रशिक्षण दिया जा रहा था ।

डगलस द्वारा दवाई खिलाने के पश्चात सोमेसंस अपना जादुई प्रशिक्षण जारी नहीं रख सकी क्योंकि लागूना के जादू का प्रमुख आधार कामुक-सम्पर्क था....।

तब उसे किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए हिन्दुस्तान की सर-जमीन पर भेज दिया गया । वह डगलस की बन्दी बना कर साथ ले आई और उसे वह प्रति दिन हंटर मारती ताकि उसे दवाई का तोड़ बता दे किन्तु डगलस ने अपने जिस्म के लहुलहान होने के पश्चात भी सोमेसंस के सामने सिर नहीं झुकाया ।

पिछले दिनों जब वह भारतीय कानून के चंगुल से निकल लागूना की शरण में भागी तो डगलस को भी साथ ले गई ।”

सुना गया था कि सोमेसंस इन दिनों नीलम गढ़ी में है । यह अनुमान लगाया जाना भी कठिन नहीं था कि वह डगलस को साथ लाई होगी ।

उसका ख्याल था कि मानवीय स्वर में बोलने वाला विशाल पक्षी शीरशा उसी डगलस की बात कर रहा होगा।

उसका विचार सही प्रमाणित हुआ... उसे सलमीना की आवाज सुनाई दी—‘उसने सोमेंसस के बारे में क्या कहा था...?’

“वह हमें इतलाह देगा कि सोमेंसस किस वक्त मातहत बनाई जा सकती है और वह कहाँ मिलेगी।”

‘सोमेंसस उसे अब भी हर रोज हंटर मारा करती है क्या?’

‘हां! वह काफी परेशान है... उसका कहना है कि जिस दिन सलमीना ने सोमेंसस को मातहत कर लिया, वह दिन उसके लिए खुशकिस्मती का दिन होगा।’

‘और कुछ...?’

‘डगलस ने एक नई बात बताई है सलमीना! आजकल कोलम्पा और सोमेंसस में शीत युद्ध चल रहा है।’

सलमीना का चेहरा पूर्ववत् गम्भीर था... वह कुछ देर तक सोचती रही, तब बोली, ‘अब तुम जाओ शीरशा।’

वह उड़ कर दीवार से बड़े हुए एक स्थान पर जा बैठा... फिर मामूली से धमाके की आवाज हुई और उस पक्षी से धुआँ निकल कर कहीं गायब हो गया और तब वह पक्षी केवल माडल बना दिखाई देने लगा—।

नकवी को विश्वास हो चुका था कि सलमीना के बस में भूत प्रेत हैं और वह अपनी इच्छा के अनुसार उन्हें किसी बेजान पुतले अथवा बुत्त में डाल कर उनसे काम लिया करती है।

वह उसी ओर देख रही थी... नकवी कभी बेजान पक्षी को देखता, कभी उसकी नज़रें सलमीना पर जा पड़तीं और कभी उसकी निगाहें बुत्त सी बनी खड़ी कदीसा की ओर मुड़ जातीं।

सचमुच ही उसे ऐसे दृश्य नीलम गढ़ी में देखने की आशा स्वप्न में नहीं थी।

तभी उसने देखा कि सलमीना का शरीर बुरी तरह कप-कपा उठा है...ऐसा लग रहा था कि कोई अदृश्य शक्ति उसे पूरी ताकत से झंझोड़ रही है।

दो चार मिनट तक ऐसा ही क्रम चलता रहा...फिर वह शान्त हो गई...उसकी आंखें बन्द हो गईं...

कुछ ही देर के पश्चात उसने आंखें खोलीं...फिर वह सम्भल कर बैठ गई...

तब वह कदीसा से सम्बोधित हुई, 'तुम कब आई...?'

"कुछ देर हो गई—, कदीसा ने जवाब दिया—, 'पर मैं एक बात समझ नहीं पाई...। तुम अमल पर थी, फिर बाकवी ने मुझे भीतर आने की अनुमति क्यों दी...', जबकि मेरे साथ पराया आदमी था।"

सलमीना के अधरों पर मन्द सी मुस्कान फैल गई, वह बोली, 'तुम्हारी और नकवी की बातचीत का मुझे पता चल गया था...', उस वक्त मुझे तुम्हारी याद सता रही थी...मेरा ध्यान तुम्हारी तरफ गया तो तुम नकवी के पास बैठी थी।'

नकवी उसे पहली बार मिला था पर वह इस तरह उसका नाम ले रही थी जैसे वह उसका पूरा परिचित हो।

वह कहे जा रही थी, "तुम लोग मुझे जब मिलने के लिए चले तो मुझे पता चल गया। उससे पहले मैंने शीरशा को बुलवा भेजा था, वह आ गया तो मुझे अमल करना आवश्यक हो गया..."

नकवी की बुद्धि काम नहीं करे रही थी, सचमुच ही वह विचित्र घटनाओं से साक्षात्कार कर रहा था...

उसके कथन का क्रम जारी था, "तब मैंने बाकवी को कह दिया कि तुम और नकवी आना चाहो तो वह रोके नहीं—?"

कुछ देर रुक कर वह पुनः बोली, “नकवी कोलम्पा से टक्कर ले सकता है, इससे ज्यादा हम लोगों के लिए खुशी की बात क्या हो सकती है।”

फिर वह नकवी से सम्बोधित हुई—“तुम सोच लो नकवी—! कोलम्पा मिट्टी की पुतली नहीं है कि उसे आसानी से बस में किया जा सके।”

‘मैं उससे टक्कर ले लूंगा मादाम सलमीना !—वह दृढ़ शब्दों में बोला, “पर शर्त यह है कि आप का सहयोग बना रहे।”

‘तुम किस किस्म का सहयोग चाहते हो नकवी।’

‘आप मेरा पथ प्रदर्शन करेंगी और साथ ही यहां के सभी रीतिरिवाज देखने का अवसर देंगी—।’

कुछ देर खामोशी रहें, वह फिर बोला, आज पीर भोखी की पूजा हो रही है—, मुझे उस सभा को देखने का अवसर मिलना चाहिए। मैंने सुना है कि यहां के कुछ चौधरी भी कोलम्पा का साथ दे रहे हैं, ऐसी हालत में अगर मैं यहां के रीति रिवाजों से परिचित नहीं हूंगा तो मुझे हर वक्त खतरा हो सकता है।”

सलमीना ने सोच कर कहा, “पर सवाल यह है कि उस पूजा उत्सव शामी कबीले से बाहर का कोई आदमी शामिल नहीं हो सकता—कोई अविवाहित भी नहीं जा सकता।”

“तब आप बताएं मादाम ! क्या मेरे लिए कोलम्पा से टकराना मुश्किल नहीं हो जाएगा। लागूना जैसे जादूगर की शैतानी दुल्हन से टक्कर लेने के लिए ऐसा करना जरूरी है।”

सलमीना बोली, ‘क्या तुम नकवी को छिप कर नजारा दिखा सकती हो।’

‘मैं कंवारी हूँ सलमीना।’

‘कोलम्पा से टकराने और नकवी की मदद लेने के लिए

कुछ तो करना होगा कदीसा !'

‘बाबा को पता चल गया तो...?’

‘बाकवी मायावी पर्दा डाले रहेगी कदीसा ! तुम किसी पहाड़ी की ओट में छिप कर नकवी को नजारा दिखा देना ।’

सलमीना के शब्दों में जैसे अनुरोध था...। ऐसा लगता था कि कोलम्पा से अपना प्रतिशोध चुकाने के लिए वह नकवी से मदद लेने का कोई अवसर नहीं गंवाना चाहती थी । वह उसकी प्रत्येक खाहश को अपनी सीमाओं को उलंघ कर भी पूरा करना चाहती थी ।

कदीसा और सलमीना के सम्बन्ध इतने निकट थे कि वह उसकी किसी बात की अवज्ञा नहीं करना चाहती थी ।

कुछ देर की बात चीत के पश्चात यही निर्णय हुआ कि कदीसा नकवी को छिप कर उत्सव पूजा का दृश्य दिखाएगी ।

लगभग एक घंटा के पश्चात...

नकवी किसी पहाड़ी की ओट में पूजा उत्सव का आश्चर्य-जनक दृश्य देख रहा था जो पत्थरीले खुले मैदान में सम्पन्न हो रहा था ।

उसने देखा...

पंच कोबरा एक तख्त पोश पर बैठा था...उसके पीछे कुछ दूसरे लोग बैठे थे...सम्भवतः वे लोग नीलम गढ़ी के चौधरी होंगे...

सामने एक विशाल बुत्त था...नकवी को विश्वास था कि वह बुत्त निश्चित ही परि भौखा का होगा ।

परि भौखा के बुत्त और पंच कोबरा के मध्य में छोटे से घेरे में आग जल रही थी...जिसमें से कई प्रकार के रंगों का धुआं निकल रहा था...

उस अग्नि से कुछ दूर हट कर दाईं तरफ बस्ती के कई स्त्री पुरुष बैठे थे...दूसरी ओर आग से उतनी ही दूरी पर सात

आठ व्यक्ति बैठे विचित्र साज बजा रहे थे... और पीर भौखा के बुत्त के सामने छः सात युवतियां नग्न प्रायः सी पूरी उत्तेजना के साथ नृत्य कर रही थी... वातावरण भी काफी उत्तेजित हो चुका था...

कदीसा इस तरह नकवी के साथ सटी खड़ी थी कि दोनों के आधे जिस्म आलिगत से हो गए थे...

कदीसा नकवी के पीछे थी और उसकी दाई छाती का उभार नकवी की पीठ पर दबा हुआ था और उसने अपना दायां बाजू नकवी की ग्रीवा को लपेट रखा था...

‘नकवी !’—वह धीरे से बोली, ‘थोड़ी देर के बाद पीर भौखा की आंखों में से आग निकलनी शुरू हो जाएगी और फिर नाचने वाली औरतों में से एक औरत में पीर भौखा प्रवेश कर जाएगा... वह झूलने लगेगी।’

‘तब क्या होगा ?’

‘तब... तब वह औरत एकदम अपने जिस्म के कपड़े उतार कर नंगी हो जाएगी... और उसके बाद वह पीर के कदमों में बैठ कर अपने सिर को जोर जोर से हिलाना शुरू कर देगी। फिर पंच कोबरा जो भी सवाल पूछेंगे, उस औरत की जबान से पीर भौखा जवाब देंगे।’

नकवी के लिए यह तथ्य विशेष आश्चर्यजनक नहीं था... शहरों में भी कभी २ ऐसे दृश्य देखे जाते थे कि किसी स्त्री या पुरुष में कोई इष्ट प्रवेश ले लेता है।

तभी कदीसा पुनः बोली, ‘जिस स्त्री के शरीर में पीर भौखा का प्रवेश होगा, उस स्त्री का पति सुबह होने से पहले अपनी पत्नी का गला काट देगा—’

‘नहीं !’—नकवी का दिल दहल गया।

कदीसा इस तरह बोलती गई जैसे उसने नकवी का अविश्वास पूर्ण स्वर सुना ही न हो—

‘फिर पीर भौखा के कदमों पर उस स्त्री का घड़ और सिर रख दिए जाएंगे और सभी लोम नाचना शुरू कर देंगे... । यह क्रम तब तक चलता रहेगा जब तक वह औरत फिर से जिन्दा नहीं हो जाती ।’

नकवी के लिए यह तथ्य सचमुच ही आश्चर्यजनक था... । सामान्य स्थितियों में इस प्रकार की बात मानना भी असम्भव था किन्तु वहाँ वह इतने चमत्कार देख चुका था कि असम्भव को सम्भव होते भी देर नहीं लगती थी— ।

‘तुम ने कहा था ना कि कासवी की भी शादी होगी— ।’

‘वह हो चुकी होगी । कासवी ने जिस नौजवान का नाम लिया था, वह भी शादी करना मान गया था ।’

‘तुम ने बताया नहीं था कि चिल्ले पर चढ़ने के बाद अगर कोई लड़की अपने दो मनपसन्द नौजवानों का नाम ले लेती है तो क्या होता है... ।’

‘तब दोनों जवान...’

वह कहते २ रुक गई—नकवी उसके रुकने का कारण समझ गया... पूजा-दरबार में एकदम पंच कोबरा उठ खड़ा हुआ था और वह इतनी ऊँची आवाज़ में चिल्लाया था कि पीर भौखा के दरबार में नृत्य करने वाली युवतियाँ हड़बड़ा कर रुक गई थीं—सभी चौधरी भी उठ खड़े हुए थे... साज बजाने वालों के अतिरिक्त अन्य स्त्री पुरुष भी उठ खड़े हुए थे— ।

साज अधिक उत्तेजित हो गए थे—लोगों ने शोर सा मचाना शुरू कर दिया था और पंच कोबरा बावलों की तरह अपने दोनों हाथ उपर नीचे हिला रहा था— ।

‘भागो प्रौफ़ैसर !’—,कदीसा उसका हाथ पकड़ते हुए पीछे पलट गई । वह काफी घबराई हुई थी— ।

‘बात क्या है— ?’ नकवी ने उसके साथ २ भागते हुए पूछा— ।

‘सलमीना की बाकवी का मायावी पर्दा कोई प्रभाव नहीं जमा सका और बाबा को पता चल गया है कि कोई बात रिवाज से परे हो रही है।’

वह पहाड़ी के ऊबड़ खाबड़ रास्ते से भागती हुई उतरती चली जा रही थी—वह बहुत ज्यादा परेशान दिखाई दे रही थी—उसका दिल बुरी तरह धड़क रहा था—।

चारों तरफ धुप अंधेरा था—नकवी का हाथ पकड़े कदीसा तेजी से अपने अपने अधिवास की ओर बढ़े जा रही थी—।

सहसा दोनों बुरी तरह चौंक उठे—उन्होंने एक डरावनी आवाज सुनी जो उनके नजदीक ही गूँजी थी...।

‘कौन—?’ नकवी चिल्लाया—।

पर तभी कदीसा की घरघराहट की आवाज सुनाई दी—।

‘कदीसा।—वह चीखा, फिर उसने पलट कर देखा—वहाँ कदीसा नहीं थी—।’

‘कौन हो तुम—?’ वह फिर चिल्लाया किन्तु उसे कोई जवाब नहीं मिला...वातावरण में मुकम्मल सन्नाटा छाया हुआ था—।

उसका सारा शरीर कपकपा रहा था...वह उस आश्चर्य-चकित घटना से बुरी तरह भयभीत हो गया था किन्तु उसने तुरन्त ही अपने आप को सम्भाल लिया था, फिर भी उस पर आश्चर्य की स्थिति बने रहना तो स्वाभाविक था।

चाहे धुप अंधेरा था, फिर भी नकवी का आँखें अभ्यस्त हो चुकी थी—उसे कदीसा कहीं भी दिखाई नहीं दे रही थी...।

‘नकवी।’—सहसा उसे कहीं से भारी आवाज सुनाई दी, ‘तुम चले जाओ वरना तुम मौत के घाट उतार दिए जाओगे।’

आवाज भारी भी थी और भयावह भी...तब भी नकवी ने अपने आपको सम्भाल लिया था, वह अपना साहस प्रदर्शित करते हुए कहा, ‘तुम कौन हो...?’

‘मैं नीलम गढ़ी का प्रेत हूँ... । मैं कदीसा को लिए जा रहा हूँ... हा: हा । हा... ।’ कहीं से भयानक आवाज़ गुंजी और फिर नकवी ने अपने सिर पर भारी बोझ महसूस किया— ।

‘वह कुछ देर तक तो सिर पर महसूस होते हुए बोझ की प्रति क्रिया को सम्भालने का प्रयास करता रहा किन्तु बहुत देर तक वह अपनी सहन शक्ति को स्थिर नहीं बनाए रख सका ।

उसकी टांगें लड़खड़ाईं और वह बेहोश होकर गिर पड़ा... कुछ ही देर में वातावरण में गहरा सन्नाटा छा गया ।

आठ

सीक्रेट सर्विस विभाग का इन्स्पेक्टर कृपाल परमेन्द्र के बंगले पर पहुंचा, तब शाम के साढ़े छः बजे थे... ।

सुपर महाजन ने उसकी ड्यूटी लगाई थी कि वह परमेन्द्र से मिल कर यह जानने का प्रयास करे कि वह किस समस्या में उलझा हुआ है

परमेन्द्र की ममी ने सुपर महाजन को इस किस्म का शिकायत लगाई थी कि उसका बेटा काफी सोच विचार में तल्लीन रहता है और हर रात काफी देर से घर आया करता है । कभी २ तो रात भर घर पर ही नहीं आता— ।

प्रतापी के विषय में सीक्रेट सर्विस के अज्ञात चीफ ब्लेक क्रॉस ने उन्हें सूचना दी थी कि वह नीलम गढ़ी में भेजा गया है।

नीलम गढ़ी कहां स्थित है, यह तथ्य सुपर महाजन को ज्ञात नहीं था किन्तु इतना अवश्य था कि उन्हें मामले की गम्भीरता का पूरा एहसास था...।

प्रतापी वहां चला गया था...मोटी अकल का मोटा शंकर बीमारी का प्रमाणपत्र देकर अवकाश ग्रहण कर रहा था।

तब सुपर को इन्स्पेक्टर कृपाल की परमेन्द्र के लिए ड्यूटी लगानी पड़ी।

जब कृपाल वहां पहुंचा, तब परमेन्द्र कहीं बाहर जाने की तैयारी कर रहा था...।

कृपाल ने उसे अपना परिचय दिया तो वह बोला, 'मैं नहीं समझ पा रहा कि सीक्रेट सर्विस डिपार्ट को मुझसे क्या काम हो सकता है?'

'मैं उस वक्त आफ़ीशल ड्यूटी पर आपके पास आया हूं। निश्चित है कि कानून को आपसे कोई न कोई काम अवश्य होगा।'

'तब आप किसी दूसरे वक्त पर आ जाईए इन्स्पेक्टर! मैं तीन चार दिनों के लिए बाहर जा रहा हूं।'

'मुझे कल रिपोर्ट पेश करनी है मिस्टर परमेन्द्र!'—कृपाल खड़ा २ बोला—, 'मेरा ख्याल है कि आप दस पन्द्रह मिनट अवश्य ही वक्त निकालेंगे।'

'मैंने कहा ना कि इस वक्त मेरे पास वक्त नहीं है। मैं सुपर महाजन से स्वयं बात कर लूंगा।'

'आपको शाब्द मालूम नहीं कि सर सुपर सीक्रेट सर्विस की केवल इकाई मात्र है...। इसलिए उनसे आप का परिचय आप

को कानून से नहीं बचा सकता ।’

कृपाल के शब्दों में इतनी दृढ़ता था कि परमेन्द्र को चौंक जाना पड़ा अन्यथा अभी तक वह यही समझ रहा था कि उसके सामने सुपर महाजन का एक मातहत खड़ा है ।

‘आप बैठिए मिस्टर परमेन्द्र !’—कृपाल ने पुनः दृढ़ शब्दों में कहा, ‘मेरी अवज्ञा का अभिप्राय कानून की अवज्ञा समझा जाएगा जिसका परिणाम ठीक नहीं हो सकता । मेरी रिपोर्ट सुपर महाजन से भी सीनियर अफसरों के पास डायरेक्ट पहुँचेगी और वही आप के व्यवहार पर सोच विचार होगा ।’

परमेन्द्र ने बैठते हुए कृपाल को भी बैठने का संकेत किया और फिर बोला, ‘कहिए ! आप क्या पूछना चाहते हैं ।’

कृपाल ने एक सिग्रेट सुलगाया... फिर बोला, ‘आप रत्नाकर के दोस्त है ना ?’

‘हम दोनों काफी नजदीक है मिस्टर कृपाल ! हमारी दोस्ती का महल काफी मजबूत बुनियादों पर टिका हुआ है ।’

कृपाल ने उसकी आंखों में आंखें डालकर कहा, ‘आप को रत्नाकर की बहन लाली को कई बार काफी रात बीते क्लबों में देखा गया है ।’

परमेन्द्र चौंका, फिर सम्भल कर बोला, ‘मैं नहीं समझ पा रहा कि आप को मेरे निजी मामलों में दखल देने का क्या हक है ।’

‘आप मुझे मेरे सवालों के जवाब देते रहिए तो आप को पूर्ण बात समझ में आ जाएगी । आपके लाली के साथ कैसे सम्बन्ध हैं ।’

‘अगर मैं जवाब देने से इन्कार कर दूँ तो—?’

‘तो मैं अपनी डायरी पर अपने अनुमान के अनुसार अपनी राय लिख लूँगा...’

‘वह मेरे दोस्त की बहन है ?’

‘मैं गलत जवाब पसन्द नहीं करता मिस्टर परमेन्द्र ! अपने दोस्त की बहन के साथ कैबिन में बैठ कर शराब नहीं पी जाया करती ।’

‘यह गलत है ?’

‘कल रात मुगल लाँज के एक सीक्रेट कैबिन में आप लाली के साथ एक घंटा बैठे रहे और जब आप बाहर निकले तो लाली का सेक्रेट बिगड़ा हुआ था ।’

परमेन्द्र ने दांत किचकिचाए पर उसने कोई उत्तर नहीं दिया ।

कृपाल ने गलत नहीं कहा था...तब उसका साफ मुकर जाने का साहस भी नहीं हुआ ।

उधर कृपाल के पास भी अपने शब्दों का ठोस प्रमाण था । चार पांच दिन पहले सुपर महाजन ने उसकी ड्यूटी लगाई थी...वह इन दिनों में परमेन्द्र पर कड़ी निगरानी करता रहा था ।

‘मिस्टर जन्टलमैन ! क्या मैं समझूँ कि मेरा अनुमान ठीक है...?’

‘क्या आप ऐसी रिपोर्ट देने से रुक नहीं सकते ।’

‘निश्चित ही ऐसा कर सकता हूँ पर शर्त यह होगी कि आप मुझे सही-सही जवाब दीजिएगा ।’

परमेन्द्र इस प्रकार खामोश हो गया जैसे वह उसके जवाब देना मान गया हो ।

कृपाल ने दूसरा सवाल किया—‘क्या आप बता सकेंगे कि राय राघवेन्द्र के माध्यम से परिचित होने वाली मिसेज़ रमोला के साथ आपके सम्बन्ध कैसे हैं ?’

परमेन्द्र कुछ परेशान नज़र आने लगा...तभी कृपाल ने एक अन्य शब्द आघात किया, ‘अपने दोस्त रत्नाकर की पत्नी मेडम मूर्धा से आप की कैसी निभ रही है...।’

‘आप कहना क्या चाहते हैं...?’

कृपाल ने अपनी जेब से सिग्रेट केस निकाल कर उसकी ओर बढ़ा दिया। दोनों ने अपने-अपने सिग्रेट सुलगाए।

तब कृपाल बोला, ‘जो कुछ मैं कहना चाहता हूँ...उसमें आपको निश्चित ही लाभ होगा। आपको विलासिता के गत में गिराकर किस जाल में फंसाया जा रहा है, मैं यह जानना चाहता हूँ।’

परमेन्द्र का हृदय धड़कने लगा—। उस के सामने बैठा युवक गलत नहीं कह रहा था।

जब से वह बाहर से आया था...उसे रंगीनियों के आकर्षण मिलने शुरू हो गए थे—।

वह जानता था कि लाली उस पर पहले ही आसक्त थी किन्तु रत्नाकर की दोस्ती का ख्याल उसे आगे बढ़ने से संकोच-शील बनाता रहा किन्तु एक दिन संकोच के सभी बंधन टूट गए...।

लाली ने उसे बुलवाया और जिस वक्त वह मूर्छा के पलंग पर मानवता को दानवता में परिवर्तन करने के लिए पागल से बन गए थे कि साकोशा ने उनका नशा हिरण कर दिया।...तब वह पैशाचिक रूप धारण नहीं कर सके किन्तु इतना अवश्य हुआ कि उसके दो चार दिन के पश्चात ही वह शैतानियत के राह पर चल पड़े—।

उस दिन परमेन्द्र की ममी अकेली थी और वह लाली को अपने घर ले गया था।

परमेन्द्र को ऐसा महसूस होता था कि रत्नाकर उसके और लाली के सम्बन्ध के बारे में परिचित है किन्तु इसके बावजूद रत्नाकर ने कभी उस पर आपत्ति नहीं की थी।

वास्तविकता तो यह थी कि इन दिनों रत्नाकर काफी परेशान था। उसने परमेन्द्र को यह बता दिया था कि वह किस

तरह कोसरा के पास पहुँचा और किस तरह उसे एक खूबसूरत युवती के पास भेजा गया जिसके साथ वह रंगरलियां मनाता रहा और बाद में उसे मालूम हुआ कि वह चुड़ैल है।”

उसके पश्चात् रत्नाकर का मस्तिष्क संतुलित नहीं हुआ था... इधर मूर्धा परमेन्द्र पर महरवान हो गई थी...। राय राघवेन्द्र ने उसका स्वामीनाथ से परिचय करवाया था और रमोला ने एक बार अपने यौवन का उत्तेजक आकर्षण दिखा कर उसे समर्पण पाने के लिए विवश कर दिया था—।

मुगल लाँज की कितनी ही आवारा युवतियां उसकी सेवा के लिए प्रस्तावित कर दी गई थी...।

कृपाल का सवाल अत्यन्त ही महत्वपूर्ण था कि वह विलासिता के गर्त में गिरा उसे कर किस जाल में फंसाया जा रहा है...?

सचमुच ही उसने स्वयं से भी कई बार यही सवाल पूछा था किन्तु उसे कोई उत्तर नहीं मिला था...।

आज वही प्रश्न कानून का एक रक्षक पूछ रहा था—।

तभी कृपाल का पुनः स्वर सुनाई दिया, ‘आप पिछली कहानी पर विचार कीजिए परमेन्द्र साहब ! तब आप को इस मामले की गम्भीरता का एहसास हो जाएगा।’

परमेन्द्र खामोशी से उसे देखता रहा, कृपाल फिर बोला, ‘राय राघवेन्द्र रत्नाकर, स्वामीनाथ और उसकी बीवी रमोला, ये सभी कभी मेडम सोमसंस के इशारों के गुलाम थे। सोमसंस के जादू की बुनियाद कामुकता थी... वह वासना के गढ़ में नई पीढ़ी को गिरा कर देश की संस्कृति को तबाह करना चाहती थी... और अब वही लोभ आपको घेरे हुए हैं। क्या यह सम्भव नहीं कि इन सभी के पीछे स्वयं सोमसंस या उसका कोई साथी हो !’

‘ओह !’—उसे सहसा साकोशा याद आ गई... वह भय-

भीत हो उठा....।

तभी कृपाल ने एक अन्ध वार किया—, 'आप इस भ्रम में मत रहिए कि आप हमेशा रंगीनियों में घिरे रहेंगे। यह भी सम्भव है कि आप विवाहित हो जाने के पश्चात् इस बात के लिए विवश कर दिए जाएं कि आप को अपनी पत्नी....। मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं कहता। आप मेरे अधूरे वाक्य का अभिप्रायः भी समझ गए होंगे—।'।

'नहीं इन्स्पेक्टर !—' उसका स्वर थर्रा गया....उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उसका कण्ठ सूख रहा है....उसके मस्तक पर पसीना छलछला आया था।

उसी रात लगभग दस बजे....

रत्नाकर ने अपनी बहन लाली को बुलवाया....उस वक्त वह और क्रिस्टा अपने कमरे में बातचीत कर रही थी....कि उसे अपने भाई की आवाज़ सुनाई दी, वह उसे बुला रहा था।

जब वह उसके कमरे में पहुंची तो उस वक्त रत्नाकर कमरे में चक्कर लगा रहा था....ऐसा लगता था जैसे वह किसी विशेष विचार में उलझा हुआ है।

'क्या बात है रत्नाकर !'—उसने अपने भाई से पूछा।

वह अपनी बहन को कुछ देर तक साभिप्रायः दृष्टि से देखता रहा....फिर बोला, 'क्रिस्टा क्या कर रही है ?'

मुझ से बातें कर रही थी....उस की तबीयत ठीक नहीं है। डाक्टर नींद का इंजेक्शन लगा कर गया है। कुछ ही देर में उसे नींद आ जाएगी। उस पर इंजेक्शन का प्रभाव बढ़ता जा रहा है।'।

वह सोफे पर बैठते हुए बोला—'मेरे पास बैठो ! मैं तुम कुछ जरूरी बातें करना चाहता हूँ।'।

दोनों भाई बहन एक दूसरे से कुछ ही दूरी पर बैठ गए...., रत्नाकर फिर से लाली को निनिमेष दृष्टि से देखने लगा....।

वह घबरा सी गई... उसने बात बनाई, 'भाभी किस वक्त लौटेगी।'।

रत्नाकर की पत्नी मूर्धा शाम से ही घर से बाहर गई थी और अभी तक नहीं लौटी थी।

'जब नवलंग चाहेगा—' 'रत्नाकर ने उसे उत्तर दिया,' 'वैसे तुम अब उसे भाभी न ही पुकारा करो तो ठीक रहेगा। वह मेरी पत्नी नहीं रही... अब वह नवलंग के इशारों पर चलने लगी है।'।

'तुम उसे रोकते क्यों नहीं...?'

'मैं तुम्हें यही बताने वाला हूँ लाली ! मुझे ऐसा लगता है कि हम सभी लोग किसी जादुई जाल में जकड़े गए हैं। इसका परिणाम भी हम के लिए ठीक नहीं रहेगा।'।

लाली को भले ही परमेन्द्र ने अभी तक साकोशा के विषय में कुछ नहीं बताया था किन्तु उसका अपना अनुमान था कि जब पहली बार मूर्धा के पलंग पर वह दानवता का रूप धारण करने के लिए तैयार हुए थे तो परमेन्द्र और वह चौंक उठे थे... उन्होंने कोई आवाज सुनी थी।

भले ही इस अदृश्य स्वर को परमेन्द्र लाली का भ्रम कहता रहा परन्तु उसका अपना मत था।

उसे विश्वास था कि कमरे में कहीं से अवश्य ही रहस्यमयी आवाज गूँजी है जिसकी वास्तविकता को निश्चित ही परमेन्द्र जानता होगा।

उसके पश्चात भी लाली ने अपने महबूब से एक दो बार उस आवाज के विषय में पूछा किन्तु उसे को आश्वस्त उत्तर नहीं मिला।

क्रिस्टा ने उसे कुछ ऐसी ही बातें बताई थीं किन्तु वह समझती रही थी कि वह बहक कर ऐसी बातें करती है—।

अब उसका भाई जादुई जाल की बात कर रहा था जिससे

वह आतंकित हो गई थी—।

वह सहम कर खामोश हो गई थी, उसे कोई प्रश्न पूछने का भी साहस नहीं हुआ।

तभी रत्नाकर फिर बोला, 'मैं जानता हूँ कि तुम्हारे और परमेन्द्र के सम्बन्ध कैसे हैं किन्तु फिर भी मैंने दोनों को भटकने से नहीं रोका...। उसकी वजह जानती हो क्या—?'

लाली परेशान हो गई...। उसे ज्ञात था कि रत्नाकर हकीकत जानता है किन्तु उनमें इस विषय में कोई बातचीत नहीं हुई थी...। वह समझती थी कि जिस प्रकार वह रत्नाकर और क्रिस्टा के अवैध सम्बन्ध को देख कर मूक रही थी वैसे ही उसका भाई भी खामोश है।

वे लोग पश्चिमी सभ्यता में ढले हुए थे और ऐसी स्थिति में लाली का अनुमान बना लेना गलत नहीं था...।

रत्नाकर बोला, 'मैं निर्लज नहीं हूँ लाली ! तुम मेरी बहन हो और परमेन्द्र मेरा निकटतम दोस्त ! मैं तुम दोनों को जीवन साथी बना देना चाहता था पर मुझे ऐसा लगता है कि शायद ऐसा न हो पाए—।

'क्या मतलब...? तुम कहना क्या चाहते हो रत्नाकर !'

वह उत्तेजित होकर उठ खड़ी हुई थी...रत्नाकर बोला, 'बैठ जाओ लाली ! आराम से मेरी बात सुनो ! जहां तक मुझे इत्तलाह है, इस वक्त तक साकोशा तुम्हारे सामने नहीं आई...?'

'साकोशा—?' वह बुरी तरह हड़बड़ा कर बोली, 'कौन साकोशा ?

'मैं तुम्हें पूर्ण कहानी सुनाता हूँ...। अगर तुम्हें सारी हकीकत का पता चल जाए तो सम्भवतः हम लोग अपने बचाव के लिए कुछ सोच सकें। मैंने परमेन्द्र को भी बुलवा भेजा है। आज कुछ घंटे पहले परमेन्द्र ने साकोशा की कहानी सीक्रेट सर्विस के इन्सपेक्टर कृपाल को बता दी है। सुपर महाजन

उसके पापा के दोस्त हैं और उसे यकीन है कि कानून हमारी पूर्ण मदद करेगा ।’

रत्नाकर ने कुछ देर सोचा कि वह किस तरह बातचीत शुरू करे और फिर उसने अपनी कहानी सुनाना आरम्भ कर दिया...

ठीक उस वक्त...

अपने मकान के एक सुसज्जित कमरे में स्वामीनाथ अपनी पत्नी रमोला को कह रहा था—

“हम जिस राह पर चल पड़े हैं ... उससे वापस हटना हमारे बस की बात नहीं रही रमोला ! पर सवाल यह है कि किया ही क्या जा सकता है ।”

रमोला ने उस वक्त शानदार मैकअप कर रखा था । स्पष्ट प्रतीत होता था कि उसे रात भर रंगीनियों का वातावरण सजाना है ।

‘कुछ ही दिनों में ऊब गए स्वामीनाथ !’—अब वह अपने पति को नाम से पुकारने लगी थी, ‘अभी तो राय राघवेन्द्र मुझे नीलम गढ़ी में नहीं ले गया...’ सुना है कि जादूगर लागूना के दरबार में औरत और मर्द इस तरह निःसंकोच होकर कामुक सम्पर्क बनाते हैं जैसे लोग अपनी प्यास बुझाने के लिए एक दूसरे के सामने पानी पीने में संकोच नहीं करते—।

स्वामीनाथ का सारा शरीर पसीने से तर हो गया—। सच-मुच ही वह निर्लज पथ से हट जाने का कोई तरीका नहीं सोच पा रहा था ।

रमोला काफी निर्लज हो चुकी थी... उनमें पति पत्नी के सम्मान की कोई बात नहीं रह गई थी—। स्वामीनाथ मन मसोस कर रह जाता और वह उसे रात भर बाहर रहने का कार्यक्रम बता कर इस तरह चली जाती जैसे उसने पर-पुरुषों की रंगीन सेजों को सजाने का घंघा शुरू कर दिया हो—।

‘नहीं रमोला ! मैं तुम्हें उस शैतान राघवेन्द्र के साथ नीलम गढ़ीमें नहीं जाने दूंगा ।’

‘तब क्या होगा—?’—रमोला निःसंकोच भाव से बोली,

‘...आज अगर मैं इस रास्ते से हट जाऊं तो परन्मेद्र जैसे कितने ही नौजवानों की छाया मुझसे दूर नहीं होगी...फिर भुगल लीज की आवारा जवानियों के साथ तुमसे दूर कैसे होंगे ।’

‘नहीं रमोला ! इस विषय में हमें कुछ सोचना होगा ।’

‘तुम सोचो स्वामीनाथ ! मेरे सोचने का वक्त चला गया । तुमने मुझे उस गढ़ में धकेल दिया है जिससे मैं नहीं निकल सकती । अभी तो तुम अपने किसी दोस्त को निमंत्रण दे आए हो—वह मुझे ले जाने के लिए आ ही रहा होगा ।’

स्वामीनाथ दांत किचकिचा कर रह गया—। रमोला ठीक कह रही थी...लगभग एक घंटा पहले स्वामीनाथ बाहर से आया था और उसने आदेश दिया कि वह मेक अप करके तैयार हो जाए, उसका एक दोस्त आ रहा है जिसके साथ उसे बाहर जाना होगा ।

रमोला शृंगार करने में व्यस्त हो गई और जब वह शानदार मेक अप करके उसके सामने आई तो वह शराब के नशे में धुत्त हो चुका था—।

अपनी पत्नी के अप्सरा सम रूप को देख कर वह कामोत्तेजित हो उठा किन्तु रमोला पीछे हट गई—।

‘नहीं स्वामीनाथ !’—वह बोली—‘यह शृंगार जिसके लिए किया गया है, वही पुरुष इस शृंगार को बिगाड़ने का अधिकार रखता है ।’

‘मैं तुम्हारा पति हूं, मुझे तुम पर पूरा हक है ।’

रमोला के अधरों पर तूफान सी रेखायें बिखर गईं—। वह निःसंकोच भाव से बोली, ‘कहां का पति और कहां का हक स्वामीनाथ ! अब तो तुम्हारी जवान से ऐसे शब्द भी अजीब

लगते हैं ।'

उसे एक धक्का सा लगा—तब से वह उसके साथ ऐसी बातचीत कर रहा था जिससे उसके प्रायश्चित्त भाव का पता चल रहा था पर रमोला की तो ज़बान खुल गई थी—अब उसे स्वामीनाथ से कोई संकोच नहीं था ।

रमोला ने उसे याद दिलाया था कि उसका कोई दोस्त आ रहा है जो उसकी पत्नी को रात भर के लिए कहीं ले जायेगा ।

स्वामीनाथ को ऐसा महसूस हो रहा था कि वह पागल हो जाएगा ।

‘मैं समझ नहीं पा रही कि तुम्हारे यह नित्त नए दोस्त कहां से पैदा हो गए—। आज तक तुम मुझे उनके ठिकाने पर पहुँचाते रहे, लेकिन आज तुम अपने नए दोस्त को भी घर का पता दिया ।’

क्या उत्तर दे स्वामीनाथ—? वह गलत नहीं कह रही थी—रमोला जिस युवक की भी साथी बनती, उसे कभी भी अपना ठीक नाम व पता नहीं बताती और इस तरह वह अपने मुहल्ले में इज्जत के साथ रह रही थी पर आज पहली बार उसने किसी ऐसे व्यक्ति को अपने घर पर बुलवाया था जिसके साथ रमोला को सर्वप्रथम सम्बन्ध स्थापित करने थे ।

उसे स्वामीनाथ पर झुंझलाहट आई थी किन्तु उसने अपना रोष प्रकट नहीं किया था और जब स्वामीनाथ ने उस पर पति होने का हक जिताना चाहा तो वह भड़क उठी—।

पर सम्भवतः वह यह नहीं जानती थी कि स्वामीनाथ की छांखें खुलने के पश्चात् उसने जो खतरा भाँप लिया था, उसे रमोला नहीं भाँप सकी थी....।

इसमें संदेह नहीं कि रमोला पूर्ण तरह निर्लज हो चुकी थी किन्तु उसे यह बात स्वप्न में भी नहीं थी कि उसकी ज़िदगी को भी खतरा हो सकता है ।

फिर स्वामीनाथ को यह एहसास पहली बार हुआ था कि अब उसका अपनी पत्नी पर कोई हक नहीं रहा ।

‘कहाँ का पति और कहाँ का हक—?’ रमोला के यह शब्द अब भी उसके कानों में चुभ रहे थे ।

‘नहीं रमोला ! नहीं!! तुम इस तरह भटक नहीं सकती—,’ ‘स्वाजीनाथ बोला, ‘मैं भी इस रास्ते से वापस आने के लिए तैयार हूँ...’

‘सवाल यह है कि तुम्हारा और मेरा साथ रह ही कहाँ गया है । अब वह वक्त नहीं आ सकता जब हम दोनों एक दूसरे के लिए सोचा करते थे...। जाओ शराब पियो...! तुम्हारा नया दोस्त आ रहा होगा...मुझे उसके साथ जाना है...।

‘रमोला! —वह तड़पा, नागिन की तरह डंक न चलाओ और अपना अतीत भुला कर यह मेंकअप उतार दो..., अपना शृंगार खत्म कर दो ताकि हम दोनों फिर से एक दूसरे के लिए सोच सकें ।’

रमोला के अधरों पर व्यंग्यात्मक मुस्कान बिखर गई... फिर उसने कुछ कहने के लिए मुहँ खोला ही था कि कमरे की घंटी टनटना उठी...।

‘तुम्हारा दोस्त आया है स्वामीनाथ ! जाओ, उसका स्वागत करो...आज की रात...,’ ‘फिर उसने वाक्य अधूरा छोड़ कर दांत किचकिचा लिए ।

वह उठ खड़ा हुआ और कुछ ही देर के पश्चात जब वह वापस आया तो रमोला अपने पति के नए दोस्त को देख कर बुरी तरह हड़बड़ा गई—।

यह वही युवका था जिसने उस की असमत पर काले जोदू का तीसरा वार किया था ।

कई दिन पहले रमोला एक रात सोई पड़ी थी कि उसे विचित्र घटना से साक्षात्कार हुआ...।

किसी अदृश्य आवाज़ ने उसे बेसुध नींद से जगाया था—। उसी के आदेश से वह शृंगार करके यंत्रवत चलती हुई कार में जा बैठी और फिर न जाने वह किस तरह एक बंगले में जा पहुंची जहां उसे कौसरा नाम की खूबसूरत युवती मिली थी—। उसे किंगारा मिलीं ह्विस्की पिलाई गई और फिर उसे एक कमरे में भिजवा दिया गया ।

वह किंगार पी कर अपना होश खो चुकी थी और उसने एक युवक को अपना शरीर सम्पर्ण कर दिया....।

फिर उसने स्वयं को अपने पलंग पर पड़ा पाया...वह सोचती रही...कई दिन बीत गए...उसे कौसरा की शक्ल याद थी...उस व्यक्ति का चेहरा याद था जिसने उसकी असमत लूटी थी । किन्तु आज तक वह उस रहस्य को नहीं समझ पाई थी....।

यदि उस रात जब घटना के पश्चात वह अपने पलंग पर उठी और अगर उसने शृंगार न किया होता तो निश्चित ही उसे स्वप्न समझती पर उसे विश्वास था कि सचमुच अपनी असमत लुटवा चुकी है लेकिन सवाल यह था कि उसके शरीर को खिलवाड़ करने वाला कौन था....।

वह उस रहस्यमयी घटना को भुला नहीं सकी थी....। विशेषकर उसे जब भी अदृश्य स्वर याद आता, उसके शरीर में शीत लहर दौड़ जाती...!...उसे कौसरा का ध्यान आता और किंगारा के स्वाद का आभास पाती तो वह कामोत्तेजित हो जाती....। फिर उसके स्मृति पट पर उस युवक का चित्र उभर आता जिसने उसके शरीर को अपनी बाहों में दबोच कर उसे रंगीन दुनिया में विहार करवाया था....। उसे आज तक ज्ञात नहीं हो सका था कि वह सब क्या था—।

पर आज...? आज उसके सामने वही युवक खड़ा था—।

लगभग एक घंटा पहले स्वामीनाथ ने जिस युवक को

अपना नया दोस्त बताया था, वह रमोला का पुराना परिचित था ।

उसने अपने पति के नए दोस्त का उस तरह अभिवादन किया जैसे वह पहली बार मिला हो...

स्वामीनाथ का हृदय धड़क गया...चाहे वह उस युवक के आगमन से पूर्व वह अपनी पत्नी को भटके रास्ते से हट जाने के लिए प्रेरित कर रहा था किन्तु उसके आने के पश्चात तो उसका सारा साहस जवाब दे गया था...

रमोला को बात चीत के दौरान मालूम हुआ कि उस युवक का नाम कामिल है और वह नगर के एक समृद्ध क्षेत्र में रहता है ।

वह बहुत देर वहां नहीं रुका...रमोला को साथ लेकर इस प्रकार ले गया जैसे वह उसका पति हो और स्वामीनाथ उन दोनों का मामूली खिदमतगार हो...उसने स्वामीनाथ को ऐसे ढंग से ही आदेश दिए थे ।

रमोला स्वयं भी आश्चर्यचकित थी, आज तक किसी पर-पुरुष के सामने उसने स्वामीनाथ को इस तरह दबू होते नहीं देखा था — ।

कामिल ने एक बार तो उसे अपमानजनक शब्दों से यहां तक भी कह दिया था कि अगर वह किसी भी प्रकार का विद्रोह करेगा तो उसकी लाश किसी चौराहे पर होगी—।

यह शब्द रमोला के सामने कहे गए थे और स्वामीनाथ विरोध में एक शब्द भी नहीं निकाल सका था ।

वह मसोस कर खड़ा रहा और कामिल रमोला को साथ लेकर चला गया...

उस वक्त अपने पति के अपमान पर रमोला को खुशी नहीं हुई थी बल्कि उस पर करुणा सी उमड़ पड़ी थी...

कामिल उसे बाहर ले गया और लगभग आध घंटे के

पश्चात् वह अपने नए महबूब के साथ एक शानदार कोठी में पहुँची जिसके प्रवेश द्वार पर मोटा सा ताला लगा था ।

वह नहीं देख सकी कि कामिल ने किस तरह ताला खोला...। द्वार खुलने पर वह भीतर प्रविष्ट हुए...किसी कारण उसने पलट कर देखा...खुला द्वार बन्द हो चुका था ।

वह उसे स्लीपिंग रूम में ले गया...कमरा शानदार ढंग से सुसज्जित था किन्तु रमोला ने आभास पाया जैसे उस कमरे की कई दिनों से सफाई नहीं हुई...।

दो पलंग बिच्छे थे...उन पर बहुमूल्य गद्देदार बिस्तर थे...पर उन पर मिट्टी पड़ी थी...।

वह रह नहीं सकी, पूछ ही लिया, 'आप इस कोठी में अकेले रहते हैं क्या...?'

'हां !' कामिल ने उत्तर दिया—'तुम्हें रात भर रहने के लिए कोई एतराज तो नहीं...?'

वह खामोश हो गई, उसने कोई उत्तर नहीं दिया किन्तु वह बहुत कुछ पूछना चाहती थी...।

'कौसरा कौन है...? वह अदृश्य महिला कौन है जो उसे एक रात रहस्यमय आदेश दे कर उसे कौसरा के पास ले गई थी और फिर वहां कामिल ने उसका समर्पण प्राप्त किया था...।

वह पूछना चाहती थी कि इतनी विशाल और शानदार कोठी में अगर वह अकेला भी रहता है तो वहां सफाई क्यों नहीं...बिस्तरा व अन्य सामान पर मिट्टी की तहें क्यों हैं...? क्या वह काफी दिनों के बाद वहां आया है—?

'किस सोच में पड़ गई हो रमोला ! —कामिल ने उसे सोफे पर अपने पास बिठाते हुए कहा—' 'तुम्हें इतना तो पता चल गया होगा कि स्वामीनाथ मेरे सामने मिट्टी के माखो से ज्यादा कुछ नहीं । कल सुबह जब तुम उससे मिलोगी तो

तुम्हारे सामने भी वह सिर उठाने का साहस नहीं कर सकेगा ।'
विचित्र बात थी कि कामिल ने इस एकांत वातावरण में भी उसे आलिंगन में नहीं लिया था ।

दोनों में बात चीत शुरू हो गई थी । वास्तविकता यह थी कि अपनी उत्सुकता मिटाए बिना रमोला भी अपना शरीर उसे नहीं सौंपना चाहती थी—।

‘एक बात बताओ कामिल !’—उसने शिष्टाचार का परित्याग करते हुए कहा—‘स्वामीनाथ तुम से इतना डरता क्यों है—?’

‘यह मत पूछ रमोला ! हां...मैं तुम्हें इतना बता दूँ कि स्वामीनाथ हो या राघवेन्द्र...रत्नाकर हो या लाली...चाहे परमेन्द्र क्यों न हो...सभी मेरी मुट्ठी में हैं—। अगर तुम चाहो तो इन सभी पर हुक्म चला सकती हो ।’

‘सवाल तो यह है कि यह सभी लोग तुम्हारी मुट्ठी में कैसे आ गए ?’

कामिल ने उसे ध्यान से देखा...रमोला पहले ही उसकी तरफ देख रही थी—।

दोनों की आंखें चार हुई और रमोला का सारा शरीर कांप उठा ।,

उसने महसूस किया कि उसके निकट बैठे हुए युवक की आंखों में रहस्यमय चमक है... ।

उसने अपनी नजरें हटा लीं...फिर बोली, ‘मैंने कुछ पूछा था कामिल ।’

‘आज तुम मुझे पहली बार मिली हो क्या ?’—कामिल बोला, ‘क्या तुम्हें याद है कि इससे पहले भी तुम कभी मुझे मिल चुकी हो—।’

रमोला के शरीर में सर्द हवा बिखर गई, वह बोली, ‘मैं तुम्हें पहले भी मिल चुकी हूँ । मैं नहीं जानती कि वह सब क्या

था पर यह निश्चित है कि सब कुछ अजीब सा था जिसे मैं आज तक समझ नहीं पाई—।”

‘तुम्हें’ मैं ‘बताता हूँ... तुम उस रात बेसुध सोई पड़ी थी कि तुम्हें साकोशा ने जगाया।’

वह चौंक पड़ी किन्तु तुरन्त ही सम्भल कर बोली, ‘साकोशा कौन ?’

‘सुनती चली जाओ,’ कामिल ने गम्भीरता से कहा, ‘साकोशा ने तुम्हें जगा कर शृंगार करने का हुक्म दिया और फिर वह तुम्हें अपने साथ ले गई... तुम कौसरा तक जा पहुँची जिसने तुम्हें शराब में मिला कर किंगारा पिलाया...।’

रिमोला का शरीर कांप रहा था... कामिल कहता चला गया—, ‘फिर तुम मेरे पास पहुँच गई और तब जो कुछ हुआ, वह बताने की जरूरत ही नहीं—।’

बत सही थी... अपनी जिन्दगी की उस रहस्यमयी रात की स्मृति आज भी उसके मस्तिष्क पर अंकित थी।

चाहे स्वामीनाथ ने उसे साकोश के विषय में बता दिया था किन्तु वह कामिल की जबान से उस रहस्यपूर्ण महिला के विषय में सुनना चाहती थी...। वह यह जानना चाहती थी कि साकोशा और कामिल के परस्पर क्या सम्बन्ध है।

‘साकोशा कौन है— ?’ उसने अपना सवाल दुहराया, ‘उसकी मुझे आवाज सुनाई दी थी पर वह दिखाई नहीं दी थी—।’

‘तुम राय राघवेन्द्र के साथ नीलम गढ़ी में जाने वाली हो रमोला। वहाँ तुम्हें सब कुछ पता चल जाएगा।’

‘वह कल की बात है... आज तुम मेरे जिस्म को स्पर्श करने से पहले बताओगे, कामिल।’

‘जिद्द न करो रमोला ! आज मैं तुम्हें दूसरे मकसद के लिए यहाँ लाया हूँ...। मैं तुम्हें अपनी हकीकत बताना चाहता

हूँ— ।’

‘वह बाद में—, रमोला हठ पर अड़ी रही, ‘पहले मैं साकोशा की हकीकत जानना चाहती हूँ ।’

कामिल जैसे बेवस हो गया, वह बोला, ‘क्या तुम अपना हठ नहीं छोड़ सकती— ।’

‘नहीं ।—उसने हठ शब्दों में कहा ।

‘तुम्हारी मर्जी ।’—उसने एक ठण्डा साँस लेकर कहा— ।

फिर उसने अपना बाजू ऊपर किया और आँखें बन्द करके कुछ देर तक अपने हाथ को हवा में लहराता रहा— ।

फिर उसका गम्भीर स्वर फूटा—, ‘साकोशा ! रमोला तुम्हारी हकीकत जानना चाहती है— ?’

दो तीन मिनट बीते... फिर कमरे में हल्की सी पद चाप सुनाई दी पर रमोला को कोई दिखाई नहीं दिया ।

‘साकोशा ।’—कामिल की आँखें बराबर बन्द थीं, उसका हाथ पूर्ववत् हिल रहा था, ‘रमोला तुम्हारी हकीकत जानना चाहती है ।’

‘रमोला की बात छोड़ो, कमरे में कहीं से अहश्य महिला की आवाज फूटी, ‘तुम बताओ कि तुम क्या चाहते हो । मैं रमोला की नहीं, तुम्हारी गुलाम हूँ प्रेतराज गोनामा !’— रमोला ने यह शब्द सुने तो उस पर बुरी तरह आतंक छा गया... ।

उसने पलट कर देखा तो उसे ऐसा आभास हुआ कि कुछ ही क्षणों में उसके हृदय की गति रुक जाएगी ।

उसके निकट अत्यन्त ही भयावह रंग रूप का व्यक्ति बैठा था... ।

तभी उस पर आतंक की रेखाएं और भी गहरी हो गईं... ।

उसे सामने से आवाज आई... 'मेरी हकीकत देखो रमोला ।'

उसकी ग्रीवा यंत्रवत् सामने की ओर पलट गई...

'ओह ।'—वह बुरी तरह घबरा गई । उसके सामने एक काली कलूटी चुड़ेल खड़ी थी— ।

ठीक उसी वक्त बाहर से जोर जोर से दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनाई दी— । दरवाजा इस तरह पीटा जा रहा था जैसे बहुत से व्यक्ति मिल कर उसे खुलवाने का प्रयास कर रहे हो ।

'कौन... ?' एकदम खोफनाक शक्ल का प्रेतराज पुनः खूबसूरत एवं आकर्षक युवक कामिल के रूप में आ गया, 'साकोशा ! बाहर कौन है— ?'

'पुलिस ।'—कहीं से अदृश्य आवाज सुनाई दी—, 'बाहर पुलिस खड़ी है प्रेतराज ! आज्ञा हो तो सभी को खत्म कर दूँ ।'

'अजीम मालिक लागूना की इजाजत के बगैर कुछ नहीं हो सकता, तुम चली जाओ ।'

रमोला थर थर काँप रही थी... उसका सारा शरीर पसीने से तर हो गया था... उसके हृदय की धड़कन चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी— ।

तभी उसने देखा कि कामिल खड़ा हो गया है... उसका खूबसूरत व्यक्तित्व पुनः भयावह रूप में बदल गया था—, फिर उसका कद लम्बा होने लगा... उसी अनुपात से उसकी टांगों और हाथों की लम्बाई भी बढ़ने लगी और तब... ? उसके बाजू रमोला की तरफ बढ़े... ।

बाहर द्वार तोड़ने का प्रयास किया जा रहा था—रमोला को जैसे होश ही नहीं था—प्रेतराज गोनामा का रहस्यमय और भयावह रूप देखकर वह अचेत सी होती चली जा रही

थी...

उसने अपनी ओर दो काले कलूटे लम्बे हाथ बढ़ते हुए देखे—तो आतंक की समस्त परतें उस पर आच्छादित हो गईं— ।

उसने जोर से एक चीख मारी और बेहोश होकर फर्श पर लुठक गई— । कुछ ही देर में प्रेतराज गोनामा के लम्बे बाजुओं के हाथों ने उसे खिलौने की तरह उठा लिया और वह दूसरी तरफ पलट गया— ।

बाहर द्वार तब भी तोड़ने का प्रयास किया जा रहा था किन्तु स्लीपिंग रूम का वातावरण निःस्तब्धता में डूब चुका था ।

थी...

उसने अपनी ओर दो काले कलूटे लम्बे हाथ बढ़ते हुए देखे—तो आतंक की समस्त परतें उस पर आच्छादित हो गईं— ।

उसने जोर से एक चीख मारी और बेहोश होकर फर्श पर लुठक गई— । कुछ ही देर में प्रेतराज गोतामा के लम्बे बाजुओं के हाथों ने उसे खिलौने की तरह उठा लिया और वह दूसरी तरफ पलट गया— ।

बाहर द्वार तब भी तोड़ने का प्रयास किया जा रहा था किन्तु स्लीपिंग रूम का वातावरण निःस्तब्धता में डूब चुका था ।

नौ

बाल योगी रंजन अशान्त था—काफी अशान्त—। वह पराजित हो गया था—अपने ही हृदय से पराजय पाने के पश्चात अशान्त हो जाना स्वाभाविक ही था—।

वह उर्वशी पर बुरी तरह आसक्त हो गया था—। उसके यौवन ने रंजन की निद्रा को बेचैन कर दिया था।

कुछ दिन पूर्व बाल योगी के हृदय पर उसका अपना नियंत्रण था—वह एकाग्र चित्त होकर कितने ही भूत प्रेतों पर अधिकार जमाए हुए था—, उसकी एकात्मकता ने उसे अजय बना दिया था, किसी भी अपार्थिव व्यक्तित्व का उस पर प्रभाव नहीं था—।

उसका आत्मा उसके बस में थी—वह जहां चाहता, चला जाता—अदृश्य प्रेत उसको कुछ नहीं बिगाड़ सकते—प्रेतपालक अल्पासा पर उसकी कृपा दृष्टि थी—।

शोलामन प्रेत ने उसकी अवज्ञा की तो वह रहस्यमय व्यक्तित्व के स्वामी अल्पासा के पास जा पहुँचा और शोलामन काले कुत्ते के रूप में उसका गुलाम हो गया।

वही रंजन एक मांसल शरीर से पराजित हो गया—। उर्वशी का सौन्दर्य और यौवन ही ऐसा था।

उर्वशी ने उसे बताया था कि कि वह नर्तकी है और उसने

नृत्य कला में विशेष प्रशिक्षण लिया हुआ है ।

उसने एक सांस्कृतिक समारोह में अपने नृत्य का प्रदर्शन किया और रात को जब वह आराम करने अपने कमरे में पहुंची तो वहां गुण्डों ने उसका अपहरण कर लिया ।

वे उसे एक करोड़पति सेठ के पास ले गए जिसने गुण्डों को हजारों रुपये देकर उसका अपहरण करवाया था ।

उर्वशी ने बताया कि वह उस बूढ़े करोड़पति को शराब में बेहोशी के दवा मिलाकर वहां से भाग निकली पर सेठ के गुर्गों ने उसे देख लिया...

वह उन्हें डाँज देकर वहां से भागी और उन पहाड़ियों के दामन में आन छिपी—। वह शहर की ओर नहीं जाना चाहती थी...बस ! वह हिमालय की घाटियों में भटकने लगी और आखिर रंजन को मिल गई ।

दोनों इकट्ठे रहते किन्तु रात को उर्वशी अलग कमरे में सोती...। रंजन रात भर उसके लिए तड़पता रहता ।

वैसे उर्वशी दिन भर उसके साथ रहती...उससे जादू के विषय में पूछती...उसके साथ पहाड़ी के दामन में घूमने निकलती...किन्तु रात...? सचमुच ही रंजन के लिए रात बीतनी कठिन हो जाती...। ऐसी स्थिति में साधना का ती कोई सवाल ही नहीं था ।

आज भी उसकी वही दशा थी जो पहले कई रातों में रह चुकी थी...वह करवटे बदल रहा था...

वह उठ बैठा और कमरे में चक्कर लगाने लगा, वह काफी अशान्त था ।

वह महसूस कर रहा था कि उसका स्वयं पर से नियंत्रण हटता जा रहा है । उसके शरीर में कामुकता की भावनाएं जागृत हो रही हैं...

वह बच्चा नहीं था... वह अपनी जादूई साधना की आधार-शिला आध्यात्मिकता से परिचित था...। उसे ज्ञात था कि यदि वह एक बार भी कामुकता और वासना का पुजारी बन कर अपना शारीरिक संतुलन खो बैठा तो वह अपनी साधना से कई वर्ष पिछड़ जाएगा और यही कारण था कि वह अब तक अपनी भावनाओं पर बरबस नियंत्रण करता चला आ रहा था...।

कभी नोशामी उसकी प्रेमिका थी... सोमेंसस पर भी उसने डोरे डाल कर उसे अपने प्रेम पाश में फंसा लिया था किन्तु वह उसका अभिनय था जहां कामुकता और वासना का कोई प्रश्न नहीं था...।

रंजन उस पर आसक्त हो गया था... उसे देख कर वह कामुक भी हो जाता पर उसने स्वनियंत्रण करके अपनी भावनाओं पर सयंम रखा हुआ था ।

किन्तु आज...? आज जैसे सयंम के सारे बांध टूटने वाले थे, उस पर काम देवता के पुष्प-वाण वार करते चले जा रहे थे—।

वह अशान्त हो कर कमरे में चक्कर लगा रहा था... उस पर वासना आधिपत्य जमाती चली जा रही थी... वह जीवन भर की साधना को समाप्त करने पर तैयार हो चुका था—।

वह सब कुछ जानता था... अपनी साधनामय जिन्दगी में फैल जाने वाले अन्धकार का भी उसे एहसास था किन्तु काम-भावनाओं पर नियंत्रण करना उसके बसकी बात पर नज़र नहीं आ रही थी ।

उसने स्वयं पर नियंत्रण करने का एक बार प्रयास किया...। वह कमरे से बाहर निकल कर उस गुफा की ओर चल पड़ा जहां प्रेतपालक अल्पासा का गुलाम शोलामन प्रेत काले कुत्त के रूप में भटक रहा था ।

जिस दिन रंजन का आत्मीय रूप दूर सुनसान कब्रिस्तान में भूतपालक अल्पासा के हज़ूर में गया था और उसने शोलामन को काले कुत्ते का रूप देकर रंजन के हवाले कर दिया था, उर्वशी रंजन को उसी रात मिली थी—।

रंजन ने शोलामन को एक अलग गुफा में बाण रेखा डाल कर बन्द कर दिया था—।

काले कुत्ते के चारों तरफ उसने लकीर डाल दी थी और आदेश दे दिया था कि अगर वह इस रेखा से बाहर निकला तो तो जल कर भस्म हो जाएगा—।

उसे जब भी किसी विशेष बात को पूछने की आवश्यकता होती तो वह स्वयं वहां चला जाता ।

आज रंजन फिर उसके पास जा रहा था—। वह अपने वातावरण को बदलना चाहता था ताकि उस पर आधिपत्य जमाती हुई कामुकता से उसे छुटकारा मिल जाए... वह अपना भविष्य सुरक्षित रखने के लिए एक अन्य प्रयास करना चाहता था...।

वह शोलामन की गुफा की तरफ बढ़ता जा रहा था किन्तु काम वासना के दबाव से वह ठीक ढंग से चलने में भी समर्थ नहीं हो रहा था । जैसे तैसे वह गुफा में पहुँच गया... किनारे पर दीपक जल रहा था...।

उसकी निगाहें बाणा-रेखा के मध्य में पड़ीं और वह बुरी तरह चौक पड़ा... वहां शोलामन नहीं था... उसे कहीं भी काला कुत्ता दिखाई नहीं दे रहा था...।

वह कहाँ गया...? —उसने वह छोटी गुफा पूरी तरह देख डाली पर उसे कुत्ते की जली हुई लाश कहीं भी दिखाई नहीं दी—।

क्या मतलब...? उसका मस्तिष्कक विद्युत गति से काम

कर रहा था....।

शोलामन वाण रेखा को पार करके कहां चला गया...? नहीं ! वह कहीं नहीं जा सकता था... । रेखा से बाहर निकलने के तुरन्त पश्चात उसे जल जाना चाहिए था..., पर उसका तो कहीं निशान भी नहीं था ।

तब वह कहां गया... ? कहां गया... ? —उसने एक बार फिर से इधर उधर देख डाला पर निराशा ही हाथ लगी... उसकी नजरें वाण रेखा के भीतर रिक्त घेरे पर टिक गईं... ।

‘जय भूतनाथ... ! जय महागुरु अल्पासा ! —’ उसने आंखें बन्द कर घीरे २ कहना शुरू किया... जय प्रेत पालक !! मैं तुम्हारे कदमों की खाक हूँ मेरे मालिक ! मुझे शोलामन की तलाश है—मैं जानना चाहता हूँ कि वह कहा है ।’

वह पाँच सात मिनट तक बड़बड़ाता रहा पर कुछ भी परिणाम नहीं निकला, उसने झुंझला कर आंखें खोल दीं— ।

उसे स्वयं पर पूरा नियंत्रण नहीं कर सका था... । अब भी उसके दिल व दिमाग पर उर्वशी छाई हुई थी—उसके शरीर में काम-भावनाएं जागृत थीं... । ऐसी स्थिति में वह एकात्म हो कर प्रेत पालक अल्पासा को पुकार नहीं सका था और उसका जादुई विधान निष्कल हो गया था ।

उसे अपने आप पर क्रोध आ रहा था—उसका जी चाह रहा था कि वह पागलों की तरह अपने कपड़े फाड़ कर बाल नोच ले और अपने सिर को दीवार के साथ तब तक टकराता चला जाए जब तक वह खून में लथपथ होकर बेहोश नहीं हो जाता ।

पर उसने ऐसा नहीं किया... उसकी नजरें वाण रेखा के मध्य के घेरे पह टिकी थीं... ।

यदि काम भावनाओं ने उसके संतुलित मस्तिष्क की

एकाग्रता को विनष्ट न कर दिया होता तो निश्चित ही उस घेरे में उस स्थान का दृश्य उभर आता जहाँ उस वक्त काले कुत्ते के रूप में शोलामन मौजूद होता ।

वह कुछ देर तक वहीं खड़ा रहा... फिर तेजी से वापस पलटा... ।

वह गुफा से बाहर निकला... तभी बुरी तरह चौंक उठा... ।

उसे भारी आवाज का कहीं से कहकहा सुनाई दिया था... ।

वह चौंक कर रुक गया... चारों तरफ अन्धेरा था किन्तु उसकी नजरें अन्धेरे में अभ्यस्त हो चुकी थीं... ।

उसे किसी की भी झलक नहीं दिखाई दी... ।

हा: हा: हा ।... उसे फिर से अट्टहास सुनाई दिया... ।

‘कौन हो तुम... ? उसने गम्भीर स्वर में पूछा— ।

‘मेरी आवाज नहीं पहचानते महान् जादूगर... !’—स्वर में स्पष्ट व्यंग्य था—, ‘मैं शोलामन हूँ... । भूल तो नहीं गए मुझे— ।’

‘तुम कहां हो?’—उसका गम्भीर स्वर पूर्ववत् था— ।

‘दाईं तरफ देखो... सफेद पहाड़ी पर— । अदृश्य शोलामन की आवाज आई और रंजन की ग्रीवा दाईं ओर घूम गई— ।

उसने देखा कि सफेद पहाड़ी पर काला कुत्ता बेचैनी से इधर उधर भटक रहा था... ।

‘जय प्रेतपालक ! जय भूत राज !!’ उसने ऊंचे स्वर में कहा और पूरी ताकत से भटका देकर उसने अपना बाजू उस ओर बढ़ा दिया... ।

उसके हाथ से शोले नहीं निकले—एक दो चिंगारियां अवश्य फूटीं पर वह वहीं भस्म हो गई... ।

उसे अपने आप पर क्रोध आ गया—उर्वशी अब भी उसके

दिल पर अस्पष्ट ही छाई हुई थी और उसकी साधना में विघ्न पड़ गया था ।

हा: हा: हा—सफेद पहाड़ी से यंग्यात्मक अट्टहास की आवाज सुनाई दी और फिर उसके देखते २ काला कुत्ता गायब हो गया— ।

‘शोलामन !’ वह अपने ढंग से बोला—‘मैं तुम्हें अपने कदमों में देखना चाहता हूँ । तुम भूले नहीं होंगे कि अजीम प्रेतपालक अल्पासा ने तुम्हें मेरी गुलामी में दिया हुआ है ।’

हा: हा: हा ! ... सभी बंधन टूट गए बाल योगी ! मैं अब तुम्हारा नहीं प्रेतराज गोनामा का गुलाम हूँ... ।”

‘ऐसा नहीं हो सकता... मैं कहता हूँ कि ऐसा बिल्कुल नहीं हो सकता । गोनामा का यहां पर साया भी नहीं पड़ सकता... उसके किसी गुलाम को यहां आने का साहस नहीं हो सकता और जब तक गोनामा स्वयं या उसका कोई गुलाम मेरे ठिकाने पर नहीं पहुँचता... तब तक तुम्हारी आजादी का सवाल ही पैदा नहीं होता ।’

‘देख लो... मैं आजाद हो गया हूँ—तुम मुझे अपने पास नहीं बुला सकते— ? अपने जादू से मुझे जला नहीं सकते— मैं आजाद हूँ और तुम— ? तुम गुलाम हो—कामी कुत्ते हो... हा: हा: हा:... ।

‘शोलामन !—‘वह चीख पड़ा... ।

हा: हा: हा !!!—उसे कोई भी कहीं दिखाई नहीं दिया किन्तु शोलामन के अदृश्य कहकहे काफी देर तक पहाड़ियों से टकराते रहे— ।

फिर खामोशी छा गई—वातावरण निःस्तब्ध हो गया—, वह बुत्त सा बना वहीं खड़ा रहा अपने आप पर झुंझलाता रहा— ।

शोलामन की घटना से उस पर कामुकता का प्रभाव काफी कम हो गया था—उसका अंग २ क्रोध से जल उठा था ।

वह तेजी से अपने अधिवास पर आया—उसका दिमाग तब भी पूर्णगति से कार्य कर रहा था ।

उसने अपना सुनहरा जादूई डण्डा उठाया और फिर भटके के साथ उसमें हवा में लहरा दिया—उसके मस्तिष्क का एक कपाट खुल गया ।

उसने अपने आप पर नियंत्रण करने के लिए सुनहरा जादूई डण्डा अपने सिर पर सात बार घुमाया—फिर वह तन कर सामने की दीवार की ओर देखने लगा—उसकी आंखों से जैसे शोले निकलने लगे ।

उसने कुछ देर तक आंखें खुली रखीं—फिर धीरे २ उसकी आंखें बन्द हो गई ।

कुछ ही देर में वह इस तरह चौंका जैसे उसने कोई अनहोनी बात देख ली हो—उसने एकदम आंखें खोल दीं और फिर दाँत किचकिचा लिए ।

उसने अपने आप को सम्भाला, फिर उस कमरे की तरफ चल पड़ा जिसमें उर्वशी मौजूद थी— ।

वह भीतर प्रविष्ट हुआ तो उसे आश्चर्य की कोई सीमा नहीं रही—उर्वशी बिना हिले जुले सो रही थी— । उसके चारों तरफ सफेद रेखा बनी हुई थी—

उसकी निगाहें उर्वशी के स्थिर शरीर पर टिक गईं— । वह कुछ देर तक निनिमेष दृष्टि से उस ओर देखता रहा— फिर उसने जादू का डण्डा ऊपर उठा कर भटके से उस ओर बढ़ा दिया । उस डण्डे से धुआं निकला और वह उर्वशी के शरीर पर छा गया— ।

कुछ ही देर में धुआं साफ हुआ तो उसके चेहरे पर अधिक

गम्भीरता छा गई—। उर्वशी के स्थिर शरीर में कोई परिवर्तन नहीं आया—।

‘जय भूतनाथ !’—वह लम्बा सांस लेकर बोला, ‘जय प्रेतपालक !!’

उसकी आंखें बन्द हो गई—उस वक्त उसने पुनः स्वयं पर पूर्ण नियंत्रण कर लिया था—। वह धीरे २ कुछ बड़बड़ाता घला जा रहा था—, उसका चेहरा एकदम लाल हो गया था और ऐसा लग रहा था जैसे सारे शरीर का खून उसके चेहरे पर एकत्रित हो गया था।

‘उठो निर्जीव शरीर !’—वह धीरे से बड़बड़ाया—, ‘तुम यहां से चले जाओ !’

वह उर्वशी के निर्जीव शरीर को देखता रहा—फिर वह बड़बड़ाया—, ‘जय भूतनाथ !! जय महाप्रेत !’

उसकी आवाज़ धीरे २ ऊंची होने लगी... वह दो तीन बार ऊंचे स्वर में चिल्लाया और उसकी आंखों की चमक तेज हो गई... उर्वशी का शरीर पहले बोड़ा सा हिला—फिर उठ कर चलने लगा... ।

वह उस गोल रेखा से बाहर निकला जो उस शरीर के चारों तरफ लगी हुई थी—।

उर्वशी का शरीर रंजन के जादू के प्रभाव से यंत्रवत कमरे से बाहर की ओर बढ़ता जा रहा था... रंजन की तेज नज़रें उसी ओर लगी हुई थीं।

‘जय प्रेतपालक !’—वह बड़बड़ाया... फिर उसका ऊंचा गम्भीर स्वर उभरा—, ‘भस्म हो जाओ मायावी शरीर !’

उसका जादू हवा में लहराया उससे शोले निकले... उर्वशी का मायावी शरीर आग की लपटों में घिर गया—और कुछ ही देर में राख की ढेरी बन गया... ।

वह उस राख को दस पन्द्रह क्षण देखता रहा...तब उसकी नजरें उस घेरे पर टिक गईं जिससे पहले उर्वशी का शरीर पड़ा था— ।

वह धीरे २ कुछ बड़बड़ा रहा था...एकाग्र चित्त सा बना...वह उस समय किसी बुत्त के समान खड़ा दिखाई दे रहा था— ।

‘प्रेतपालक अल्पासा ।’—वह बड़बड़ाया—, ‘मुझे मायावी कोकिला चाहिए...मैं प्रेतात्मा वापस भेज दूंगा महा स्वामी... ।

वह आँखें बन्द किये खड़ा रहा...उस समय वह अत्यन्त ही गम्भीर दिखाई दे रहा था...उसके चेहरे का रंग रक्तम लालिमा में परिवर्तित हो चुका था ।

कुछ ही मिनटों में उसने आँखें खोलीं और फिर उस सफेद रेखा में घिरे हुए रिक्त स्थान को देखने लगा, जहां कुछ देर पहले उर्वशी का मायावी शरीर पड़ा था... ।

थोड़ी देर में कहीं से कोकिला उड़ती हुई नीचे उतरी और फिर पांच दस क्षणों में ही वह बुत्त गई...उसके भीतर जो प्रेतात्मा थी...वह प्रेतपालक अल्पासा के पास अदृश्य रूप में ही वापस चली गई थी...बहां अब मायावी कोयल का केवल निर्जीव शरीर ही पड़ा था ।

वह बाहर निकला...और खुले स्थान पर आकर रुक गया— ।

उसने जादू का सुनहरा डण्डा हवा में उछाल दिया...फिर बोला, ‘मुझे उर्वशी के पास चलो साजन ।’

वह अपने जादुई डण्डे को इसी नाम से पुकारा करता था ।

जादुई डण्डा हवा में उड़ कर धीरे धीरे बाईं तरफ बढ़ने लगा... ।

कितनी ही मोड़ें पार करने के पश्चात् जादुई डण्डा एक

स्थान पर रुक गया...रंजन ने उसे अपने हाथ में लेकर घुमाया —उससे आग के शोले निकलने लगे और तभी...

तभी उसके सामने शोलामन का भयानक व्यक्तित्व नजर आने लगा ।

लाल शरीर...सिन्दूर के लेप सा रंगा और एक दम काले चेहरे पर होठों से बाहर झाँकते हुए लम्बे दांत...

‘महा मानव ! मुझे माफ कर दो भारतीय जादूगर— !

“जय प्रेत पालक ?” —रंजन का गम्भीर स्वर उभरा और उसके सुनहरे जादुई डण्डे से आग के शोले निकल कर शोलामन प्रेत पर पड़े—।

बातावरण में एक दर्दनाक चीख उभरी और फिर जहाँ भयावह व्यक्तित्व का शोलामन खड़ा था, वह आग की लपटें जल उठीं...

कुछ ही देर में अग्नि लुप्त हो गई और उस स्थान पर काले कुत्ते की झुलसी हुई लाश पड़ी थी—।

‘जय भूत नाथ !’ —रंजन ने अपना जादुई डण्डा पूरी ताकत से घुमाया और फिर बोल पड़ा—“उर्वशी ! कमीनी प्रेतात्मा कहां हो तुम...?”

उसी वक्त एक काली कलूटी चुड़ेल सी नजर आने लगी जो थरथर कांप रही थी—।

अत्यन्त ही कला शरीर...काले कलूटे शरीर पर बाहर निकले हुए सफेद दांत और लाल आंखें...बहुत बहुत भयानक रंग रूप की दिखाई दे रही थी—।

“मैं चाहूँ तो तुम्हारा अंजान शोलामन की तरह हो सकती हूँ पर नहीं । मैं ऐसा नहीं करूँगा...तुम अपनी जगह पर जाओगी...एक दम वापस ।”

तभी प्रेतात्मा गायब हो गई...रंजन फिर तेजी से अपने

कमरे की तरफ पलटा....।

अपने पत्थरीले कक्ष को पार करके वह उस कमरे में पहुंचा जहां उर्वशी का मानवीय शरीर भस्म किया गया था ।

उसने कमरे में कदम रखते ही देखा कि सफेद रेखा के घेरे में कोयल बेचैनी से निकने का प्रयास करती किन्तु सफल नहीं हो पाती....। वह जहाँ से रेखा पार करना चाहती, वहीं आग जल उठती ।

उस कोयल ने रंजन को देखा तो दुबक कर बैठ गई —।

रंजन का चेहरा काफी क्रुद्ध था—उसकी नज़र छोटे से पक्षी पर टिकी थी—।

दो चार मिनट तक वह छोटे सी पक्षिणी को देखता रहा, फिर उसने अपना हाथ का सुनहारा जादुई डण्डा घुमाया, कोयल का सारा शरीर थरथर कांपने लगा ।

“तुम प्रेतात्मा हो—! डायन !! चुडेल !!! किसकी जामी में हो....?”

“प्रेतराज गोनामा की जामी में—

सहसा रंजन के जादुई डण्डे से आग की एक रेखा निकली और कोयल की बात रुक गई—।

“इस वक्त तुम मेरे आधीन हो, मेरे सामने गोनामा को प्रेतराज कह कर तुम मौत को बुलाओगी ।”

“मैं माँफी चाहती हूँ महामानव !” वह पहले की तरह मानवीय स्वर में बोली ।

‘बको ! तुम्हारा असली नाम क्या है ?’

“साकोशा! —मैं कभी पीर लागूना के दरबार की कोसम्बी थी—। किसी बात से नाराज हो कर पीर ने मुझे चुडेल बना दिया और फिर मायावी मानवीय आकार में मैं घूमने लगी—।”

“मेरे पास क्यों आई हो तुम—।”

“मुझे तुम्हारी साधना भंग करने के लिए भेजा गया था—। मैं कामयाब होती जा रही थी कि मैं एक बार उर्वशी की शक्ल में उस गुफा में जा पहुँची जहाँ कुत्ते के मायावी रूप में शोला-मन कैद था। मैंने उसे आज़ाद करवा दिया। उसने बेवकूफी की कि अपने आपको छिपा कर नहीं रख सका और तुम्हें मुझे सन्देह हो गया।”

कोयल के मायावी आकार में फंसी चुड़ेल साकोशा गलत नहीं कह रही थी—।

रंजन कुत्ते के चारों ओर वाण रेखा डाल रखी थी जिसे वह स्वयं पार करने का प्रयास करता तो निश्चित ही वह जल जाता किन्तु रंजन को उसकी झुलसी हुई लाश नहीं मिली।

उसके लिए अनुमान लगाना कठिन नहीं रहा कि कोई न कोई प्रेत-शक्ति ही उसे घेरे से सुरक्षित बाहर ले गई है—।

तब उसे उर्वशी का ध्यान आया और वह फंस गई—।

वह उसे घूरता रहा—फिर उसने हाँक लगाई—, “तुम्हें मेरे आधीन रहोगी—गोनामा के सारे पर्दे तार तार होंगे—लागूना की शैतानियत का महल चूर चूर होगा—वह तुम करोगी उर्वशी ! तुम मेरे इशारों पर चलोगी।”

और दूसरी तरफ—

छनः छनः छन—धम : धमः धम—टकः टकः टक—

ऐसी कितनी ही विभिन्न आवाज़ों से वह कमरे गूँज उठा था जिसमें जादूगर लागूना बुरी तरह तड़प रहा था—।

दुबले पलले वृद्ध लागूना ने अपने काले कपड़े फाड़ डाले थे—सफेद बाल नोच लिए थे—

वह बुरी तरह झुंझलाया हुआ नज़र आ रहा था—उसकी नज़रें एक युवती की प्रतिमा पर टिकी थीं जिसमें सैंकड़ों दरारें पड़

गई थीं—

वह साकोशा का मायावी पुतला था जो जादूगर लागूना के खास कमरे में लगा हुआ था—।

जिस वक्त रंजन के जादू के प्रभाव से उर्वशी बनी साकोशा का प्रतिरूप कोयल के मायावी शरीर में समाया था, ठीक उस वक्त मद्धिम स्वर का धमाका हुआ और इस पुतले में सैंकड़ों दरारे पड़ गईं ।

लागूना ने धमाके की आवाज सुनी और फिर उसकी नजर साकोशा के बुत्त पर पड़ी तो वह चिंघाड़ उठा—और फिर उस पर दौरा पड़ गया—उसी वक्त लागूना के सैंकड़ों गुलाम प्रेत उसके चारों तरफ नाचने लगे—कितनी ही डरावनी आवाजों ने घातावरण को पहले से भी ज्यादा भयानक बना दिया ।

जादूगर लागूना की शक्ल काफी डरावनी हो चुकी थी—। उसकी आंखों में खून उतर आया था—उस वक्त उसकी निगाहें साकोशा के बुत्त पर टिकी थीं—और उसके चारों तरफ कितने प्रेत नाच रहे थे ।

“नहीं ! मैं तुम्हारा खून पी लूंगा रंजन !”—वह चिंघाड़ा—, “मैं तुम्हारी जिन्दगी के सारे तार तोड़ दूंगा ।”

फिर उसने इधर नाचते हुए काले कलूटे प्रेतों पर निगाह दीड़ाई—और चिल्ला पड़ा—, “गोनामा ! कहां हो तुम—?”

उसी वक्त छत से धुआं निकला—फिर शोले भड़के और तब उनके सामने अत्यन्त ही भयानक शक्ल का प्रेतराज गोनामा उसके सामने खड़ा था ।

वह उस समय काफी क्रोध में था—। उसके भयावह रूप पर क्रोध की लाली अधिक भयानक बनी हुई थी ।

“पीर लागूना—, ‘वह स्वयं पर नियंत्रण करने का

प्रयास कर रहा था, “मैं उस मामूली इन्सान का खून पी लूंगा।”

“प्रेतराज गोनाम! —लागूना जैसे चिघाड़ रहा था—, “उस छोकरे को शहर की रंगीरियो में ले जाओ—किसी भी तरह—। तब तक उसे तबाह नहीं किया जा सकता।”

“कोशिश करूंगा पीर! मैं उसे हिमालय की गुफाओं से अपने पास बुलाऊंगा...नीलम गढ़ी में—उसकी साधना को कदीसा चकनाचूर करेगी—।”

“यह मत भूलना कि उसकी साधना को वही लड़की भंग कर सकेगी जिसे किसी पुरुष का कामुक स्पर्श नहीं होगा।”

“कदीसा ऐसी ही रहेगी पीर लागूना।”

“नहीं गोनामा! कदीसा को मैं अपने साथ ले जाऊंगा। तुम किसी दूसरी लड़की का इन्तजाम करो।

‘बहुत अच्छा।’ —ऐसा ही होगा।”

‘तुम रंजन को यहीं बुलालो पर तुम्हें शहर में काम करना होगा...तबाही और बरबादी के नजारे दिखाने के लिए...। सुना है कि वहां की पुलिस सोसेसंस का ड्रामा दुहराना चाहती है।’

हा: ! हा: ! हा: ! ...पुलिस...चूहों की टोली..., गोनामा के भयानक स्वर में व्यंग्य था—‘कोलम्पा के दरबार में शहर के बीसियों लोग हाज़िर होंगे मेरे सरताज! पुलिस देखती रह जाएगी।’

‘रमोला शैतान की दुल्हन के लिए तैयार की जा सकती है या नहीं?’

‘मैं पहले बता चुका पीर लागूना! उसकी जिह्व ने मुझे साकोशा की हकीकत बताने के लिए मजबूर कर दिया और

फिर... फिर मैं नहीं चाहता अजीम जादूगर ! मैं उसे शैतान की दुल्हन के रूप में नहीं देखना चाहता... मैं उस पर आसक्त हो गया हूँ ।'

पीर लागूना के नेत्र फड़क उठे पर उसने अपने भाव प्रदर्शित नहीं किए, बस यही कहा, "अब तुम जा सकते हो !"

उसी वक्त कमरा धुएँ से भर गया और कुछ ही देर में जब धुआँ साफ हुआ तो जादूगर लागूना वहाँ अकेला खड़ा था... गोनामा गायब हो चुका था... लागूना के चारों तरफ नाचने और साज बजाने वाले अन्य प्रेत तो उसी वक्त लुप्त हो गए थे जब प्रेतराज जादूगर लागूना के कदमों में उपस्थित हुआ था ।

लागूना तब भी बहुत अशांत था... उसे अपने जादू पर अभिमान था... दुनिया भर के प्रेतों पर अपनी धाक जमाने वाला गोनामा उसके बगल में था... कितनी ही चुड़ेले उसके इशारों पर नाचती थीं... उसके अधिकार में मायावी शक्ति थी... उसका जादुई डण्डा उसी की इच्छा पर किसी के लिए वरदान अथवा अभिशाप बन सकता था... वह स्वयं को हर रूप में परिवर्तित कर सकता था, अदृश्य हो सकता था और उसकी प्रशिक्षित शैतान की दुल्हनें दुनियाँ भर में फैल कर कामुकता का प्रचार कर रही थीं... ऐसी दशा में अभिमान हो जाए तो अस्वाभाविक भी क्या था...

पर...? परन्तु वह महसूस कर रहा था कि रंजन उसके मुकाबले में बराबर कायम रह रहा है ।

लागूना ने रंजन की मायावी हस्ती प्रभावती को समाप्त किया तो उसने रंजन के जादुई चमत्कार भी खत्म कर देने का प्रयास किया ।

उसने प्रेतराज गोनामा को हुयम दिया कि वह रंजन के ब्रह्मचर्य को समाप्त करवा दे ताकि आसक्तिपूर्ण स्थिति में उसकी एकाग्रता भंग हो सके और उस पर कामयाब वार किया जा सके...

इसी लक्ष्य को समक्ष रख कर साकोशा को मायावी शरीर के रूप में रंजन के पास भेजा गया था किन्तु अब यह दरारें...

स्पष्ट था कि साकोशा का भेद खुल गया है—।

रंजन फिर से बदला चुका गया...बराबर की मात दे गया—। उसने दांत किचकिचा लिए—। उसकी आंखों से आग के शोले निकलने लगे—।

‘साकोशा !—राख हो जाओ !

लागूना का जबान से भारी स्वर गूंजा और साकोशा की प्रतिमा को आग लग गई । कुछ ही देर में वह भस्म हो गई ।

उसने आंखें बन्द कर लीं...वह कुछ देर तक बड़बड़ाता रहा...फिर उसका बाजू हवा में लहराया—।

आग का एक शोला हवा में उड़ने लगा...उसकी आंखें तब भी बन्द थीं...वह बराबर बड़बड़ा रहा था—।

हवा में तेरने वाला शोला कुछ देर तक पूर्वस्थिति में रहा...उसके पश्चात एक जोर से धमका हुआ...और वह शोला एकदम गायब हो गया ।

उसकी आंखें तब भी बंद थीं...किन्तु अब वह बड़बड़ा नहीं रहा था—बुत्त सा बना खड़ा था...

सहसा एक भयावह तूफान ने उसे घेर लिया...जबरदस्त वर्षा होने लगी—बिजली की कड़कड़ाहट से वातावरण गुंजरित हो उठा—हवा की जबरदस्त सांघ २ से वातावरण अत्यंत ही भयानक हो गया—। तभी ओले पड़ने शुरू हो गए—।

दुबला पतला किन्तु खोफनाक शबल का जादूगर लागूना वहीं खड़ा वर्षा में भीगता रहा—उससे हवा के थपेड़े टकराते रहे—कड़कती हुई बिजली में उस पर चमक पड़ती और लुप्त हो जाती—। वह ओलों के वार सहता रहा—। पर उसकी स्थिति में कोई अन्तर नहीं आया—।

तभी तूफान की गति मन्द होने लगी—धीरे २ वातावरण शांत होने लगा और अंत में तूफान लुप्त हो गया ।

वह तब भी आंखें बन्द किए खड़ा रहा—ऐसा लगता था जैसे उसका पार्थिव शरीर तो वहां मौजूद है किन्तु उसके प्राण किसी अन्य लोक में विचर रहे हैं—।

कुछ देर तक स्थिति इसी प्रकार रही, फिर एक जोर का धमाका हुआ...

‘धमाक !’—इस जोरदार आवाज के साथ लागूना का शरीर कपकपाया और उसने आंखें खोल दीं ..।

‘मैं तुम्हें देखना चाहता हूं शुकराज !’ उसकी जबान से भारी एवं गम्भीर आवाज निकली तो इस तरह फड़फड़ाहट की मन्द मन्द आवाज सुनाई देने लगी जैसे कोई पक्षी उसी ओर आ रहा है—आवाज धीरे धीरे ऊंची होती जा रही थी ।

कुछ ही देर में उड़ता हुआ एक तोता नीचे उतरा और उसके सामने बैठ गया—।

‘मैं हाजिर हूं पीर लागूना !’

“शुकराज !,”—उसका पूर्ववत् गम्भीर स्वर गूंजा— आज से तुम मेरे प्राणों के रक्षक होंगे—तुम्हें शाहजादी चम्पात के सातवें कमरे में सोने के पिजरे में रखा जाएगा ।”

तोते ने सिर हिला कर कहा—‘पीर लागूना का हर हुक्म स्वीकार है लेकिन सवाल यह है कि मेरी हिफाजित कौन

करेगा ।'

प्रेतराज गोनामा के दो सौ गुलाम शहजादी चम्पात के महल का पहरा देंगे—कोई भी मानव पुत्र शहजादी चम्पात तक पहुँचने से पहले समाप्त कर दिया जाएगा । तुम किसी भी प्रेत अथवा चुडेल से नहीं मरोगे । तुम्हें कोई मानव पुत्र ही मार सकेगा लेकिन किसी भी मनुष्य का तुम तक पहुँचना असम्भव होगा और जब तक तुम नहीं मरोगे—तब तक मैं नहीं मरूंगा ।

‘अब मैं जाऊँ—?’

‘सुनते जाओ शुकराज !’—लागूना का पूर्ववत् गम्भीर स्वर तड़पा, “दो महीने—सिर्फ दो महीने तक तुम मेरे प्राणों की रक्षा करोगे—।”

‘उसके बाद क्या होगा पीर लागूना !’—तोता मानवीय स्वर में बोला—।

उस मायावी तोते के शरीर में लागूना के प्राण सुरक्षित हो गए थे, उसका स्वर लागूना से बिल्कुल मिलता जुलता था ।

‘तब—? हा : हा : हा :—तब क्या होगा—?’—लागूना का अट्टहास गूँजा—‘तब मैं अमर हो जाऊंगा शुकराज—! मुझे ऐसी विधि मिल जाएगी जो मुझे अमर कर देगी और फिर मैं हिन्दुस्तान का नक्शा ही बदल दूंगा—इस वतन में लागूना का राज्य होगा और उसके बाद मैं सारी दुनिया पर हकूमत करने का प्लान बनाऊंगा—। ‘अब तुम चले जाओ।’

उसी वक्त तोते के पंख फड़फड़ाए और फिर वह नजरों से ओझल हो गया ।

शैतान लागूना कुछ देर तक वहीं खड़ा रहा—फिर उसने जोर से चार बार अपना दायां बाजू घुमाया ।

‘कोलम्पा ! कहां हो तुम—?’

उसने आंखें बन्द कर ली थीं, फिर कोलम्पा को आदेश देने के पश्चात् उसने आंखें खोल दीं—उसके सामने दीवार पर नीलम गढ़ी की मलिका कोलम्पा के कमरे का नजारा दिखाई दे रहा था जिसे देखकर उसका अंग र क्रोध से जल उठा—।

उसने देखा कि कोलम्पा जन्म जात नग्न होकर नीलम गढ़ी के चौधरी शोजा के बाजुओं में जकड़ी हुई है—चौधरी भी नगनावस्था में है ।

‘गोनामा ! प्रेतराज गोनामा ! कहां हो तुम—?’

तभी ऊपर से धुआं उभरा—फिर भड़कते हुए शोले नजर आए और तब काफी खोफनाक शक्ल का गोनामा उसके सामने सिर झुकाए खड़ा था—।

‘पलट कर दीवार की तरफ देखो प्रेतराज!!’—वह कठिनाई से अपने स्वर पर काबू पा रहा था, ‘कोलम्पा को आदेश था कि जब तक मैं नीलम गढ़ी में मौजूद हूं,—तब तक वह अपने रंग महल में किसी भी दूसरे मर्द को नहीं बुला सकती ।’

‘आपकी हुक्मअदूली...?’—गोनामा की डरावनी आवाज तड़पी, ‘क्या कोलम्पा का गला दबा दूं—।’

‘चौधरी शोजा मरेगा...इस वक्त वह भ्रष्ट विचारों में है ...तुम उस तक आसानी से पहुंच जाओगे । उसका टेढ़ा दबा कर उसकी लाश कहीं फेंक दो—, उसके बाद तुम फिर मेरे पास आओगे । मैं तुम्हें आदेश दूंगा ।’

दीवार पर उमरा हुआ नजारा लुप्त हो गया—धुएं और शोलों के क्रम के बाद गोनामा भी गायब था... ।

लागूना का शरीर जल रहा था...वह बड़बड़ाया, ‘मुझे नकबीर के जंगलों में अमर होने के लिए नई विधि खोजने जाना है कोलम्पा ! तभी आज मैं तुम्हें सजा नहीं दे रहा...’

वापस आकर पहले तुम्हें खत्म करूँगा ।'

उधर कोलम्पा के खास कमरे में चौधरी शोजा कामवासना के जाल में जकड़ा हुआ अपनी मौत को निमंत्रण दिए बैठा था...

कोलम्पा शैतान की दुल्हन की पदवी को ग्रहण किए हुए थी और इस पदवी तक पहुँचने से पहले वह न जाने पूरी निलज्जता से कितना ही पुरुषों की वासना तृप्ति का माध्यम बन चुकी थी और उसकी अपनी वासना अतृप्ति की चरम सीमा तक पहुँच चुकी थी...

चौधरी शोजा उसी अतृप्त यौवना को अपने बाजुओं में दबोचे हुए था...वह किंगारा के प्रभाव से कामुकता में अधा हो चुका था ।

कोलम्पा भी कभी कामुक नहीं थी...चार बाजुओं में दो जलते हुए शरीर बुरी तरह जकड़े हुए थे कि तभी शोजा के कण्ठ से एक हल्की सी दर्दनाक चीख उभरी— ।

कोलम्पा हड़बड़ा कर अलग हो गई...वह शोजा के चीखने का कारण नहीं समझ पाई— ।

उसने अलग होकर देखा...शोजा के दोनों हाथ अपनी गर्दन पर थे और उसकी आंखें फटी जा रही थी, उसका मुँह खुला हुआ था ।

स्पष्ट था कि शोजा की गर्दन दबाई जा रही थी— । वह कुछ समझने में समर्थ नहीं थी...उसके देखते ही देखते शोजा की लाश पलंग पर पड़ी थी...वह चीख मारते हुए पलंग से छलांग लगा कर पीछे हट गई— ।

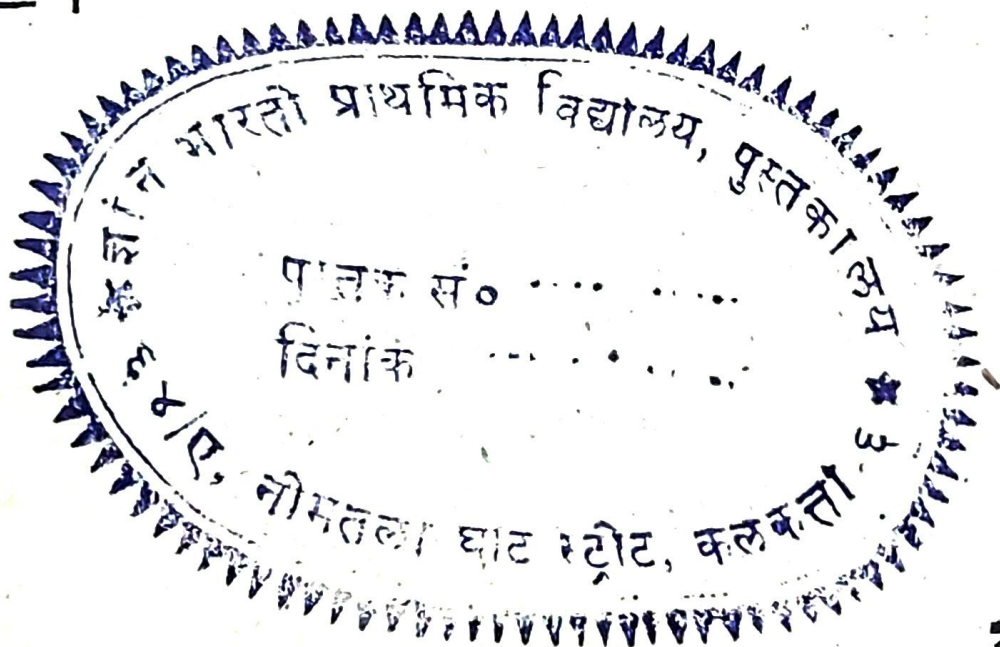
उसके मस्तिष्क में तथ्य आ गया...उसने आंखें बन्द कीं और फिर उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे वह रंगे हाथों पकड़ी

गई है ।

उसकी आंखें बन्द थी पर वह गुप्त नेत्रों से देख रही थी कि प्रोतराज गोनामा चौधरी शोजा की लाश उठाए चला जा रहा है— ।

लगभग पांच मिनट के बाद ही गोनामा फिर वहां पहुँचा ... उसने कोलम्पा को उठाया और लागूना की तरफ चल दिया — ।

उस वक्त कोलम्पा का सारा शरीर पसीने से तर हो चुका था और उसके हृदय की बड़कन चरम सीमा तक पहुँच चुकी थी— ।



दस

राय राघवेन्द्र काफी व्यस्त था—उसके साथ रत्नाकर, स्वामीनाथ और परमेन्द्र भी जुटे हुए थे किन्तु कभी कभी रत्नाकर और परमेन्द्र आपस में साभिप्रायः नजरों से अवश्य देख लेते ।

बात यह थी कि कुछ ही दिन के पश्चात् काम उत्सव मनाया जाना था और वहां जादुई मलिका कोलम्पा ने भी उपस्थित होना था— ।

प्रोग्राम के अनुसार काम उत्सव में शहर भर की वह सभी दम्पतियां तथा अन्य युवक युवतियां एकत्रित होंगी जो मानवीय परम्परा को तोड़ कर कामुकता के प्रवाह में बहने के लिए तैयार किए जा चुकी थीं— ।

रमोला, मूर्धा और ऐसी कितनी ही युवतियों ने बहुत से आवारा युवक युवतियों को खोज निकाला था जिन्होंने आगे ऐसे ही चरित्रहीनो की तलाश की थी— और कामुक प्रति क्रिया में फंस गए थे— फिर उसके विरुद्ध प्रमाण भी एकत्रित कर लिए गए थे ।

राय राघवेन्द्र के पास ऐसी दम्पतियाँ की पूरी सूची थी जो भरी पार्टी में अन्य दोस्तों के साथ अपनी पत्नियों के आदान प्रदान करने के लिए तैयार थीं— उनकी संख्या लगभग चालीस थी और सभी बड़े घराने के जोड़े थे ।

इनके अलावा ऐसी पचास साठ युवक युवतियों की भी सूची थी जो भरी महफल में निर्लज होकर दूसरों को अपना शरीर सौंपने के लिए तैयार थे— और कई बार ऐसा कर भी चुके थे ।

सचसुच ही शत्रुओं का प्लान सफलता की ओर अग्रसर हो रहा था जो चाहते थे कि आने वाले बीस पच्चीस वर्षों में भारतीय नई पीढ़ी को विलासिता के गर्त में धकेल कर देश की संस्कृति को रसातल में फेंक दिया जाए ।

इस काम उत्सव के आयोजन का भार राय राघवेन्द्र पर था ।

उत्सव का आयोजन कौसरा के गुप्त ठिकाने पर होना था ... उसके पति रिचर्डलास्टर के जिम्मे सुरक्षा थी कि कोई भी गैर व्यक्ति भीतर न आने पाए ।

कार्यक्रम के अनुसार इस उत्सव में कोलम्पा के स्वयं आना था और उसे कोसम्बों तथा कोसम्बियों का चुनाव करना था... ।

कौसरा का ठिकाना कहाँ है, यह सभी को लिए रहस्य था...पर प्रोग्राम यह था कि सभी लोगों को बन्द कारों में वहाँ पर पहुँचा दिया जाएगा और फिर रात बीतने पर वापस भी भेज दिया जाएगा ।

इस उत्सव के आयोजन की सारी जिम्मेदारी राय राघवेन्द्र पर थी...वह नीलम गढ़ी नहीं गया था किन्तु उसे वहाँ पर कोलम्पा का खास दूत मिलने आया था और रिचर्ड एव कौसरा के साथ उसकी मुलाकात करवा के प्रोग्राम तय कर गया था ।

राय राघवेन्द्र ईमानदारी से समझ रहा था कि रत्नाकर और परमेन्द्र उसके साथ हैं...प्रकट रूप में वह इसी प्रकार जूट कर काम कर रहे थे किन्तु वास्तविकता कुछ और थी ।

पिछले दिनों इन्स्पेक्टर कृपाल परमेन्द्र से मिला था तो उसकी आँखें खुल गई थीं...फिर उसने रत्नाकर से चर्चा की तो उसे भी अपना भविष्य अंधकारमय नजर आने लगा— ।

उसने सम्भलने का फैसला कर लिया...तब उसने लाली के साथ बातचीत की, उसके पश्चात क्रिस्टा को भी हमराज बना लिया गया... ।

चारों ने मूर्खा को कोई बात नहीं बताई—क्योंकि उन्हें सन्देह था कि मूर्खा और नवलंग जादुई व्यक्तियों के गुलाम हैं...और वे लोग भी इसी प्रकार लागूना के गुलामों में सम्मिलित हो गए तो उसका अजाम भयानक होगा— ।

परमेन्द्र चाहे कितनी ही विलासिता की मंजिलें तय कर चुका था किन्तु वह नहीं चाहता था कि उसकी भावी पत्नी लाली भी जादुई जाल में फँस कर काम वासना के रसातल में

तिल्लीन हो जाए... । इसी प्रकार की भावना रत्नाकर की क्रिस्टा के प्रति थी— ।

उन सभी को पिछले कई दिनों से साकोशा के रहस्यमय व्यक्तित्व से साक्षात्कार नहीं हुआ था— ।

उन्हें क्या मालूम कि साकोशा के प्राण अब पीर लागूना के बस में नहीं रहे बल्कि भारतीय जादूगर रंजन की मायावी कोयल के शरीर में समा गई है । अब वह उन्हें रहस्य में उलझाने के लिए उनके पास कभी नहीं आएगी ।

जो भी था—उन लोगों पर साकोशा का आतंक कम हो गया था ।

कृपाल को सभी बातें मालूम हो रही थीं— । वह प्रतापी के इन्तज़ार में था—किन्तु उसका कहीं पता नहीं चल रहा था—फिर भी वह अपने सामर्थ्य के अनुसार पूरी लग्न के साथ काम कर रहा था— ।

उसके साथ रोज़ी की ड्यूटी लगा दी गई थी— । पहले रोज़ी को नीलम गढ़ी भेजा जाना था किन्तु फिर अज्ञात चीफ ब्लेक क्रॉस को ओर से सुपर महाजन को ट्रांसमीटर-मेसेज मिला था कि रोज़ी को वहीं रोक लिया जाए— । ऐसे ही हुआ था । वह वहीं रुक गई थी— ।

कृपाल को काम-उत्सव के आयोजन की पूरी जानकारी हो रही थी । उसे पता चल गया था कि प्रेतात्मा साकोशा ने किस प्रकार रहस्यमय व्यक्तित्व से कई युवक युवतियों पर जादूगर लागूना की धाक जमा कर उन्हें कामुकता के लिए प्रेरित किया था और उसे यह आशंका भी थी कि सम्भवतः काम-उत्सव में भी कुछ अदृश्य ताकतों की गतिविधियों से टकराना पड़े... ।

जिस तरह भी था—कृपाल अपनी ओर से पूरी तैयारियां

कर रहा था ।

उसके सामने फाईल पड़ी थी—वह मामले पर गहुराई से सोच रहा था—उसके मस्तक की रेखाएं गहरी हो गई थी—।

तभी वह चौंक पड़ा—कमरे में सायरन बज उठा था—। उसकी मुख मुद्रा पर उत्सुकता और आश्चर्य की रेखाएं बिखर गई—।

उस विश्वास था कि चीफ ब्लेक क्रॉस उससे ट्रांसमीटर पर सम्पर्क स्थापित करना चाहता है ।

उत्सुकता तो थी ही पर उसे आश्चर्य भी था—कितने ही दिनों के पश्चात अज्ञात चीफ उससे सीधा सम्पर्क स्थापित कर रहा था ।

वह तेजी से प्राईवेट कैंबिन में भागा और फिर कुछ ही देर में अपने ट्रांसमीटर पर झुका हुआ कह रहा था, 'कृपाल एटेंडिंग सर चीफ ! कृपाल वेटिंग फॉर आर्डर सर !!'

'कृपाल ।'—दूसरी ओर से चीफ के रूप में प्रतापी अपने बदले हुए भरभराए स्वर में कह रहा था, 'तुम ठीक जा रहे हो ।'

'आपका शुक्रिया सर चीफ !'—उसका स्वर त्रिन्न था, 'मैं रिपोर्ट दे चुका हूँ कि काम-उत्सव पर छापा मारने के लिए मुझे क्या तरीके अपनाने होंगे ।'

'उन तरीकों में कुछ त्रुटियां हैं कृपाल ! मेरी बातों को ध्यान से नोट करो पर एक बात तुम याद रखोगे कि मेरे आदेश सुपर महाजन को भी नहीं पता लगना चाहिए—किसी को भी नहीं ! तुम मुझसे डायरेक्ट सम्बन्ध बनाओगे ।'

'ऐसा ही होगा सर !'—कृपाल का दिल बलियों उछलने लगा था, 'आप आदेश दीजिए, मैं नोट कर लूंगा ।'

उसके पश्चात कृपाल आदेश लिखता रहा और जब ट्रांस-

मीटर का कनेक्शन टूटा तो उसकी आँखों की चमक में वृद्धि हो गई थी— ।

ठीक उस वक्त रमोला अपने पलंग पर करवटें बदल रही थी— । उस समय स्वामीनाथ दूसरे कमरे में था ।

कुछ दिन पहले एक बार रमोला ने स्वामीनाथ को कहा था—, 'कहाँ का पति— ? कहाँ का हक स्वामीनाथ— ! अब तो तुम्हारी जबान से ऐसे शब्द भी अजीब लगते हैं ।'

उस रात स्वामीनाथ की आत्मा चीत्कार कर उठी थी, उसने फैसला कर लिया था कि स्वयं भटकी राह से हट कर रमोला को भी सही रास्ते पर ले आएगा ।

परन्तु वह रात रमोला के लिए जिन्दगी की सबसे ज्यादा दुख-दायी रात थी— ।

कामिल के मायावी रूप में प्रंतराज गोनामा रमोला को उसी रात ले गया था और एक सुनसान बंगले में रमोला को उसकी वास्तविकता का पता चला था... । तभी बाहर पुलिस आ गई थी ।

उस रात गोनामा उसे वापस घर छोड़ गया था और दूसरे ही दिन उसे समाचार पत्रों से पता चला था कि उस बंगले के मालिकों ने उसे इस लिए खाली कर दिया था क्योंकि वहाँ रात को अत्यन्त ही विचित्र भयावह आवाजें आया करती थीं... ।

उस बंगले पर एक पहरेदार ड्यूटी पर रहा करता था, उसने एक युवक और युवती को दरवाजा खोल कर भीतर जाते देखा तो पुलिस को सूचना दे दी... ।

रमोला काफी सहम गई थी... । उस रात तो वह प्रंतराज गोनामा से बच गई किन्तु उसकी दूसरी रात ही वह सोते २ बड़बड़ा कर उठ खड़ी हुई थी— ।

उसने अंधरे में ही महसूस किया कि वह पलंग पर अकेली नहीं है ।

उन दिनों स्वामीनाथ दूसरे कमरे में सोया करता था... तब उस के पलंग पर दूसरा कोन हो सकता है ।

उसने विद्युत्-गति से उठकर बेड-स्विच आन कर दिया और वह चौंक पड़ी... कामिल उसके पलंग पर मौजूद था ।

वह इतनी सहस गई थी कि भय से चीख भी नहीं सकी । कामिल ने उसे भागने का अवसर ही नहीं दिया और बाजुओं में दबोच लिया ।

उसके सामने गोनामा की भयानक शक्ल नाच रही थी पर उस वक्त वह एक खूबसूरत मायावी युवक के रूप में मौजूद था, फिर भी उसके हृदय की धड़कने चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी ।

रात बीत गई और वह क्रम बराबर बना रहा... हर रात रहस्यमय तरीके से प्रेत गोनामा अपने मायावी शरीर कामिल के रूप में रमोला के पलंग पर मौजूद होता... वह रात भर उसके शरीर से खिलवाड़ करता रहता... रमोला बेहोश हो जाती और प्रातः उसे जब होश आता तो वह पलंग पर अकेली पड़ी होती ।

उस वक्त रात के लगभग ग्यारह बजे थे... स्वामीनाथ दूसरे कमरे में अपने पलंग पर लेटा विचारों में मग्न था... रमोला अपने पलंग पर करवटें बदल रही थी ।

कामिल के आगमन का समय हो गया था... वह तड़प रही थी... बेचैनी से उसका हृदय धड़क रहा था... आज ही नहीं, हर रात कामिल के आगमन से पूर्व उसकी यही स्थिति होती थी ।

विचित्र बात यह थी वह दिन प्रति दिन ख़ूबसूरत होती जा रही थी... उस में कामुकाकर्षण बढ़ता जा रहा था किन्तु उस रात को मूर्च्छित होने से पूर्व कितनी वेदना सहन करनी पड़ती, इसके विषय में वह स्वयं ही अनुमाने लगा सकती थी।

उसे एक बात का पता चल गया था कि प्रेतराज कामिल जब उसके पास होता है तब उसकी सारी शक्ति वहीं तक सीमित रह जाती है।

वह उसे हमेशा नई २ बातें बताता... पीर लागूना की बातें... कोलम्पा की कहानियां... और नीलम गढ़ी की घटनाएं...

कामिल का उसे कहना था कि वह उस पर बुरी तरह असक्त हो गया है... और वह उसे अपने दिल की मलिका मान कर उसका हर हुक्म मानने के लिए तैयार है।

द्वार बन्द होते... रमोला हर दरवाजों को भीतर से चिटकनी लगा देती पर कामिल वहां पहुँच जाता।

उसके आगमन का समय था और वह करवटे बदल रही थी—।

दूसरे कमरे में स्वामीनाथ विचारों में मग्न था... वह अपनी करतूतों पर पछता रहा था...

क्रिस्टा ने काले जादू की आड़ में उसे भटका दिया था... फिर भटकी राह से वह वापस नहीं आ सका था।

उसके पश्चात विल्जी रोमर और निकोला के सम्पर्क में आ कर तो उसके जीवन का धारा कलुषित प्रवाह की ओर अग्रसर हो गई थी।

फिर वह सम्भलने का प्रयास करने लगा। वह ईमानदारी से चाहता था कि वह और रमोला, दोनों पिछली बातों को भुला कर फिर से एक दूसरे के लिए सुरक्षित हो जाएं।

जिस रात रमोला उसे ठेस पहुँचा कर कामिल के साथ चली गई थी, उसके पश्चात वह बाहर नहीं निकली थी—।

स्वामीनाथ समझ रहा था कि सम्भवतः रमोला पर उसके शब्दों का प्रभाव पड़ा है...। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक था कि भविष्य की सभी आशंकाएं भी समाप्त कर दी जाएं और वह उस वक्त उसी बारे में सोच रहा था...।

वह किसी पुलिस अफसर के साथ मिल कर काम करना चाहता था ताकि उनका भविष्य सुरक्षित रह सके ।

उधर रत्नाकर के बंगले पर क्लॉक ने टन टन करके बारह बजाए...मूर्धा अपने पलंग से उठी...। उसे ज्ञात था कि उसका पति मुगल लाँज के एक कमरे में किसी आवारा युवती के साथ रंगीनियों में डूबा हुआ है और वह रात भर घर नहीं लौटेगा ।

लाली परमेन्द्र के साथ उसी बंगले के एक कमरे में सो रहा था—। कहा जाता था कि दोनों ने सिविल मैरिज कर ली है ।

उन दिनों क्रिस्टा अपने घर लौट गई थी और मूर्धा पक्के तौर पर जानती थी कि वह अपने घर पर अकेली होगी—।

क्लॉक ने बारह बजाए तो मूर्धा अपने पलंग पर से उठ खड़ी हुई...। उसने फोन का रिसीवर उठा कर नम्बर डायल किए—।

दूसरी ओर से आवाज आई, 'हैलो ।'

"मैं मूर्धा हूँ नवलंग !"—उसने धीरे से कहा, "तैयार हो क्या—।"

"तैयार हूँ—।"

"क्रिस्टा के मकान के पिछवाड़े पहुँचो ! मैं भी आ रही हूँ—।"

लगभग बीस मिनट के बाद क्रिस्टा के पिछवाड़े दोनों खड़े थे, वह कह रही थी, “क्रिस्टा बचने नहीं पाए नवलंग ! वह रत्नाकर से शादी करके मुझे रास्ते से हटाना चाहती है, मैं उसका निशान मिटा देना चाहती हूँ ।”

दोनों ने चारदीवारी फलांगी... फिर क्रिस्टा के स्लीपिंग रूम की खिड़की की चिटकनी खोल दी गई—।

क्रिस्टा सिर से पांव तक लिहाफ ताने सो रही थी—। उस पर टार्च की रोशनी पड़ रही थी ।

‘उसका लिहाफ हटा दो नवलंग !’ वह धीरे से बोली, “मैं उसके सीने में चाकू घोंपूंगी ।”

नवलंग ने टार्च दाएं हाथ से बाएं हाथ में पकड़ ली, फिर दाएं हाथ से लिहाफ हटा दिया ।

तभी दोनों चौंक कर पीछे हट गए... वहां दो तफ़िए लम्बाई में पड़े थे...

दोनों ने एक दूसरे को देखा, फिर हड़बड़ा से गए... कमरे का स्विच ऑन कर दिया गया था—।

दोनों ने घबरा कर पीछे देखा तो उनकी आंखों के सामने अन्धेरा छा गया... वहां एक पुलिस अफसर हाथ में रिवाल्वर ताने खड़ा था... वह कृपाल था ।

“हाथ ऊपर करो !—कृपाल ने रोब से कहा, “भागने का भी कोई फायदा नहीं होगा । इस मकान को पुलिस ने घेर रखा है ।”

तभी कृपाल ने सिग्नल दिया और पांच छः पुलिस मैन भीतर आ गए... मूर्या और नवलंग चूहों की तरह पकड़ लिए गए—।

कृपाल की यह पहली क्रियात्मक सफलता थी... उसने

नवलंग के कमरे में वायरलेस ट्रांसमीटर रखवा दिया था ।

आज दिन को मूर्था उसके कमरे में पहुंची थी और वहीं मूर्था और नवलंग के मध्य में क्रिस्टा की हत्या का प्लान बना था जिसके बारे में ट्रांसमीटर से कृपाल को पता चल गया था और परिणाम स्वरूप दोनों मुजरिम पुलिस के चंगुल में थे ।

अभी कृपाल को कई दूसरे काम करने थे...। उसे अज्ञात चीफ क्रॉस का आदेश मिला था कि रमोला पर कड़ी निगरानी रखे और स्वामीनाथ को अपने विश्वास में लेने का प्रयास करे...

उसके लिए वह कार्यक्रम सोच रहा था । पुलिस वैन मूर्था और नवलंग को लेकर पुलिस स्टेशन की ओर भागती चली जा रही थी और वह अपने दूसरे साथियों के साथ उनके पास बैठा हुआ विचार-लोक में तल्लीन था, उसके मस्तिष्क की गति पुलिस वैन की रफ्तार से कहीं ज्यादा तेज थी—।

×

×

×

सड़ाक ! सड़ाक !! सड़ाक !!!...उस पर बराबर हंटर पड़ रहे थे...और वह कराहे जा रहा था...

वह डगलस था...सोमेसंस के अतीत का प्रेमी जिसने सोमेसंस का जीवन अजीर्ण कर दिया था ।

सोमेसंस कभी डगलस की महबूबा थी...फिर वह रंजन के चक्कर में फंस गई ।

डगलस ने अपनी बेवफा महबूबा को एक ऐसी दवाई पिला दी जिसके प्रभाव से उसका जीवन निराशामय हो गया...

उसके रक्त में ऐसे कीटाणु पैदा हो गए जिसके कारण यदि वह किसी पुरुष को अपना शरीर समर्पण करती तो उसके खूबसूरत शरीर पर कोढ़ फूट पड़ता ।

यही कारण था कि वह जबानी की अतृप्त वासना में तड़प रही थी ...।

डगलस को उसने कैद कर रखा था...। उसे ज्ञात था कि वह अपनी दवाई का तोड़ जानता है। वह उस पर हंटरों के कितने ही बार कर चुकी थी किन्तु डगलस ने उसे अपनी दवाई का तोड़ नहीं बताया।

वह हंटर खाता...कराहता और फिर व्यंग्यात्मक अट्टहास कर उठता—।

‘सड़ाक...!’—डगलस पर सोमेसंस ने पुनः एक भरपूर बार किया...।

हा :! हा :!! हा :!!—डगलस का पागल कहकहा गूँजा...फिर बावरो की तरह बोला, ‘हंटर मारो कमीनी चीटी...! जोर से मारो पर मैं तुम्हें न जीने दूंगा...न मरने दूंगा...! तुम तड़प २ कर जिन्दा रहोगी...।’

सड़ाक ! सड़ाक !! सड़ाक !!!...सोमेसंस के हाथ चलते रहे...डगलस की कराहटें और पागल कहकहे उस का मजाक उड़ाते रहे...।

आखिर वह थक गई...। उसकी कोपदृष्टि डगलस को बुरी तरह घूर रही थी...।

आधी रात का वक्त था...बाहर पूरी तरह सन्नाटा था...। उन दिनों वह कोलम्पा के साथ नीलम गढ़ी में आई हुई थी।

वह रंजन से इन्तकाम चाहती थी...। उसने डगलस से बेवफाई की थी और डगलस ने उसे दवा पिला कर उसका भविष्य अन्धकारमय कर दिया था।

वह पूरी तरह प्रशिक्षण प्राप्त कर के शैतान की दुल्हन नहीं बन पाई थी और फिर रंजन भी उसे धत्ता बता कर बेवफाई

कर गया था ।

वह रंजन से इन्तकाम चाहती थी और इसी उद्देश्य से वह हिन्दुस्तान की सरजमीन पर भटक रही थी... उसे पिछले दिनों इस देश से असफल लौटना पड़ा था किन्तु अब उसे विश्वास था कि रंजन उससे टकराएगा और वह अपना प्रति-शोध चुका लेगी ।

हा :! हा :! हा :! ... 'किस सोच में हो, चींटी की बच्ची—।'

'डगलस ! मैं तुम्हारे खून का एकएक कतरा सुखा दूंगी... मैं तुम्हारे हर सांस पर पहरा लगा दूंगी ।'

'कोई फायदा नहीं होगा... मैं तुम्हें घुट २ कर ज़िन्दा रहने से नहीं बचाऊंगा ।'

'मैं तुम्हारी हड्डियाँ...

तभी वह चौंक उठी, उसका वाक्य अधूरा रह गया...। उसे कहीं से किसी कोकिला का मधुर स्वर सुनाई दिया था ।

दूसरी बार फिर से मधुर आवाज़ आई... और फिर एक काली कोयल पंख फड़फड़ाती हुई उसके पास से उड़ कर बाहर निकल गई...

उसने हंटर तेज़ी से फैंका और पूरी ताक़त से उड़ती हुई कोयल की ओर हाथ का भटका दिया पर उसकी उड़ान नहीं रुकी... वह बाहर निकल ही गई ।

हा :! हा :! हा :! ... तभी डगलस का व्यंग्यात्मक कहकहा सुनाई दिया—फिर उसकी आवाज़ गूँजी, 'शैतान की दुल्हन बनने का ख़ाब देखने वाली कमीनी चींटी एक कोयल को भी बस में नहीं कर सकती... हा :! हा :! हा :! ...

'शट अप—।' वह ज़ोर से चीखी ।

हा :! हा :! हा :! ... फिर से एक भरपूर व्यंग्यात्मक

अट्टहास तड़पा—।

वह कुछ कहने लगी कि उसे बाहर से आती हुई पुनः कोयल की आवाज सुनाई दी ।

वह पांव पटकती हुई बाहर की तरफ निकली...

‘खटाक !’—उसने पूरी ताकत से दरवाजा बन्द किया और कोयल के निकट चली गई...वह दीवार के साथ लगे एक चित्र पर बैठी थी ।

सोमेसंस फर्श पर खड़ी अपना सिर ऊंचा किए कुछ देर तक उसे घूरती रही, फिर दांत पीस कर बोली, “कौन हो तुम ?”

‘डगलस को बस में करना चाहती हो तो मेरे साथ आओ ।’

कोयल मानवीय स्वर में बोली और फिर उसके पंख फड़-फड़ा उठे ।

वह उड़ती हुई उस कमरे से भी बाहर चली गई— सोमेसंस ने उसका अनुकरण किया ।

कुछ ही देर में वह कोकिला के अनुकरण में पहाड़ी रास्तों पर अपनी अज्ञात मंजिल की ओर बढ़ी जा रही थी ।

कोयल एक पहाड़ी चट्टान पर जा बैठी...वह उसके निकट जा कर खड़ी हो गई—।

‘तुम हो कौन ?’—उसने कोयल से पूछा, ‘कहां ले जाना चाहती हो मुझे ।’

“बाईं तरफ देखो सोमेसंस !”—कोयल का मानवीय स्वर उभरा ।

उसकी नज़रें बाईं ओर पलट गईं...वहां एक कंकाल दिखाई दिया ।

‘सोमेसंस ! —कोकिला का पुनः मानवीय स्वर उभरा—
‘पीर लागूना यहां से चला गया है... अब प्रेत राज गोनामा
कोलम्पा के अलावा किसी के बस में नहीं रहा...’

‘फिर क्या हुआ ?’

‘सुनती जाओ ! कोलम्पा कभी नहीं चाहेगी कि ढगलस
के साथ तुम्हारा समझौता हो जाए ।’

‘तुम कहना क्या चाहती हो ?’

‘उस कंकाल के कदमों पर गिरकर भोली फैलाओ मामूली
औरत ! आग की लपटों से तुम्हारी जवानी महफूल हो
जाएगी ।’

सोमेसंस अपनी परिस्थितियों से ऊब सी गई थी... वह
अपने अतृप्त यौवन को तृप्त दशा में लाने का हर सम्भव काम
करने के लिए तैयार हो चुकी थी...

उसके पाँव कंकाल की ओर बढ़ गए और कुछ ही देर में
वह सचमुच ही उसके कदमों में गिर कर अपनी भोली फैलाए
बठी थी ।

तभी उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे जबरदस्त तूफान आ गया
है और वहां के जोरदार थपेड़े उससे टकरा उठे हैं...

उसने बुरी तरह चौंक कर सिर ऊपर उठाया और तब उसे
ऐसे लगा जैसे आकाश और धरती में जोरदार टक्कर हो गई
है... उसके निकट ही कंकाल के स्थान पर बाल योगी रंजन
खड़ा था ।

‘तुम...!’—वह विद्युत् गति से उठ खड़ी हुई, ‘‘तुम
यहां—?’’

‘हा : हा : हा : ... रंजन का भारी अट्टहास गूंजा—‘तुम
मुझसे इन्तकाम चाहती थी ना...? मेरे साथ आओ ! गोनामा

ने मुझे यहां बुला लिया है...मैं इन दिनों नीलम गढ़ी में ही हूँ। तुम्हें मेरे साथ दूर नहीं जाना होगा।'

'मैं कहीं नहीं जाऊंगी।'

हा : हा : हा :—रंजन फिर भारी कहकहा लगा उठा—, 'उर्वशी !—'उसने मायावी कोयल को पुकारा, 'सुन रही हो ! सोमेसंस ! मेरे साथ कहीं नहीं जाएगी...इसकी आंखें नोच लो ताकि यह भ्रंघी हो जाए...।'

'नहीं !'—वह दो कदम पीछे हट गई।

कोयल उसके चेहरे पर मण्डलाने लगी...सोमेसंस इतनी सहम गई थी कि उसे पराजय के अतिरिक्त कोई बदल ही नहीं दिखाई दिया।

'मैं तुम्हारे साथ जाऊंगी रंजन !'

'जय भूतनाथ!—रंजन ने हंकार भरी और पलट पड़ा...। सोमेसंस यंत्रवत उसका अनुकरण करने लगी...उसके आलावा वह कर भी कुछ नहीं सकती थी...।

ठीक उस वक्त...

पंच कबीर के पत्थरीले मकान के अपने कमरे में प्रोफेसर नकवी बैठा सलमीना से बातें कर रहा था।

वह कह रहा था, 'मैं कुछ नहीं समझ पा रहा कि क्या किया जाए ?'

सलमीना नीलम गढ़ी की जादूगरनी थी—। अगर जादूगर लागूना के षड़यंत्र से कोलम्पा नीलम गढ़ी की मलिका न बनती तो निश्चित ही पहली मलिका नारिमा के रहस्यमय ढंग से गायब हो जाने के पश्चात सलमीना ही मलिका की पदवी प्राप्त करती—।

'नकवी —! कदीसा का गायब हो जाना मामूली बात नहीं है। उसी रात से पंच कबीर भी कहीं चले गए हैं...। नीलम

गढ़ी में विचित्र घटनायें घट रही हैं... चौधरी शोभा का लाश मिली... फिर बलगा चौधरी मारा गया—कोलम्पा के दोनों साथी मौत के मुंह में चले गए...। साफ है कि नीलम गढ़ी में कोलम्पा की ताकत कम हो गई है पर कदीसा का फिर भी कहीं पता नहीं।”

‘मैं तुम्हें बता चुका हूं कि जब हम उत्सव से भागे तो रास्ते में गोनामा ने उसका अपहरण कर लिया।’

‘सवाल तब भी वही है,—‘सलमीना बोली,’ मैं अपनी मैना बाकवी से पूछ चुकी... उनका कहना है कि कदीसा नीलम गढ़ी में नहीं है... फिर वह गई कहां—?’

‘क्या वह यह नहीं बता सकती कि कदीसा इस वक्त कहां है?’

‘उसकी नजर नीलम गढ़ी की सीमा से बाहर नहीं जा सकती। विशाल पक्षी शरीशा की उड़ान भी इसी सीमा तक है—।’

‘तब उसकी तलाश कहां की जाय?’

‘कुछ नहीं कह सकती,—सलमीना का निराश स्वर गूंजा ‘सुना है कि बाल योगी रंजन भी यहां आ गया है—। मुझे ऐसा लगता है कि नीलम गढ़ी बरबाद होने वाली है। बाहरी जादू-गरों की आपसी टक्कर इस बस्ती का विनाश कर देगी।’

नकवी ने कोई जवाब नहीं दिया... वह इसकी आंखों में उठने वाले तूफान को भांक रहा था...।

जिस रात कदीसा गायब हुई थी, उसी रात पंच कबीर उत्सव से घर नहीं लौटा था। उसे उत्सव में ही ज्ञात हो गया था कि उसकी बेटी का अपहरण कर लिया गया है...?

वह कहां गया—? शायद ही कोई जानता हो किन्तु यह

बात विश्वास के साथ कही जा सकती थी कि प्रोफ़ेसर नकवी को इस विषय में कुछ ज्ञात नहीं था ।

उस रात के बाद नकवी और सलमीना कई बार मिले...। पिछले पांच छः दिनों से हर रात सलमीना नकवी के पास पहुँच जाती और घंटा डेढ़ घंटा बैठने के पश्चात् वापस चली जाती...।

विषय रहता पंच कबीर और क़दीसा का...पर नकवी का अनुमान था कि सलमीना की नज़रों में तूफ़ान उमड़ा रहता है ...वह कुछ कहना चाहती है किन्तु साहस नहीं कर पाती—।

और अब...

नकवी फिर सलमीना की नज़रों में उसी प्रकार के तूफ़ान को भाँक रहा था ।

वही तूफ़ान...? आवाज़ में वैसी ही थरथराहट...?

‘विनाश हो जाएगा नकवी...! मैं ठीक कह रही हूँ,—‘सलमीना का कपकपाता स्वर गूँजा, ‘तब तुम न रहोगे...मैं नहीं रहूँगी—।’

फिर क्या हो जाएगा,—‘वह बोला, ‘सलमीना मौत से डरती है क्या ...?’

उसने अपने सिर को इस तरह झटका दिया जैसे नकवी ने उसका अपमान कर दिया हो...।

उसका चेहरा कुछ क्षणों के लिए उत्तेजित हुआ किन्तु तुरन्त ही उसकी स्थिति पूर्ववत् हो गई ।

वह बोली, ‘मैं मौत से नहीं डरती नकवी ! पर सोचती हूँ कि अगर मैं मर गई...तो मेरे रूह भटकती रहेगी—।’

‘क्या मतलब ?’

‘मैं जादूगरनी हूँ नकवी ! अगर कोई जादूगरनी अपनी

इच्छा की तृप्ति बिना मर जाती है तो उसकी रूह को चैन नहीं मिलता ।'

“तुम्हारी इच्छा क्या है सलमीना !”

उसने अपने सामने बैठे युवक की आंखों में आंखें डाल कर कहा, ‘क्या तुम मेरी खाहश पूरी करोगे ?’

नकवी को ऐसे महसूस हुआ जैसे वह आकाश में उड़ रहा है—। वह उस तूफान को भली प्रकार समझ चुका था...वासना का चरमोत्कर्ष...।

‘नकवी ?’—वह बहक गई—उसने सामने बैठे युवक का हाथ पकड़ अपनी ओर खींचते हुए कहा, ‘मैं मर जाऊंगी प्रोफ़ेसर !’

‘सलमीना ! होश में आओ ! तुम नहीं जानती कि मेरा भी कोई आदर्श है ।’

‘नहीं, नहीं नकवी ! आज रात मैं यहीं रहूंगी...इसी कमरे में !’

‘आगल न बनो सलमीना !’

पर सलमीना को होश कहाँ था...दोनों फर्श पर बिछी दरी पर बैठे थे...वह उसके बिल्कुल ही साथ सट गई और फिर उसने अपनी चेतना खो दी...।

नकवी सहम कर उठा और दो कदम पीछे हट गया—।

सलमीना भी बहकती हुई उठ खड़ी हुई और उसने अपने दोनों हाथ फैला दिए..., वह उसके जवान जिस्म को अपने बाजुओं में दबोच लेना चाहती थी ।

‘तड़ाख—!’...सहसा नकवी ने पूरी ताकत से सलमीना के मुंह पर तमांचा दे मारा...।

वह जैसे स्तब्ध हो गई...दो तीन मिनट तक वह वहीं खड़ी

रही, फिर वह बड़बड़ाई, '...नाश ! महानाश !'

तब वह घूर कर कुछ देर तक उसे देखती रही, तब ऊंची आवाज़ में चिल्लाई, फनमणी !'

वह रुकी नहीं...पागलों की तरह कमरे से बाहर भागी ।

सहसा उने सर्पिणी का ध्यान आ गया जिसे कदीसा कोलम्पा पर डंक चलाने का प्रशिक्षण दे रही थी ।

'सलमीना ! ...वह चिल्लाकर उसके पीछे भागा...'। सलमीना कदीसा के कमरे की ओर भागती जा रही थी...नकवी उसके पीछे था ...।

पर तभी...

दोनों बुरी तरह हड़बड़ा कर रुक गए...पंच कबीर ने सलमीना को रुकने के लिए कहा था...

दोनों ने पलट कर देखा...सच मुच ही पंच कबीर वहाँ खड़ा था । दोनों नहीं जानते थे कि वह कब आया है ।

सहसा नकवी को अपनी नाजुक स्थिति का ध्यान आया । वह सलमीना के पीछे भाग रहा था । पंच कबीर ने उसे इस हालत में देख कर क्या समझा होगा ।

'पंच कबीर !'—वह बड़बड़ाया ।

पंच कबीर आगे बढ़ आया...उसके हाथ में एक लाठी थी जिसके ऊपरी भाग पर सांप बना हुआ था...

'मैं बहुत देर पहले यहाँ आ गया था नकवी ! मैंने तुम दोनों की बातें सुन ली हैं...'।

'सलमीना !'—कुछ देर रुक कर वह पुनः बोला, 'तुम्हें नीलम गढ़ी की मलिका बनाना है...कोलम्पा चरित्र खो बैठी उसका नाश हो जाएगा ।'

'मुझे माँफ कर दो बाबा !'—सलमीना धीरे से बोली ।

पंच कबीर का चेहरा तमतमा रहा था, उसने कोई जवाब नहीं दिया, वह नकवी को बुरी तरह घूर रहा था।

प्रोफ़ेसर हड़बड़ा सा गया, तभी पंच कबीर की गम्भीरतम आवाज़ सुनाई दी... “प्रोफ़ेसर ! कदीसा के अपहरण के बाद मैं एक गुफा में जाकर समाधि लगा बैठा...”

प्रोफ़ेसर नकवी के दिल की धड़कन तेज़ हो गई, “पंच कबीर अपने पूर्ववत् स्वर में बोलता चला गया...”

‘कदीसा के अगवा का कारण जानने गया था और वह जान कर आया हूँ।’

नकवी फिर भी चुप था, पंच के बोलने का क्रम बना रहा, “मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि तुम छद्मवेशी न होते तो मेरी बेटी के अपहरण करने वाला राख की ढेरी बन जाता...”

‘नहीं पंच कबीर ! तुम्हें धोखा हो रहा है।’

‘नागराज !’ पंच कबीर अपने प्रवाह में प्रवाहित होते हुए बोला, “प्रोफ़ेसर नकवी कह रहा है कि मुझे धोखा हुआ है।”

तभी उसकी लाठी के ऊपरी भाग पर बना लकड़ी का सांप सजीव हो उठा... उसने जित्ना बाहर निकाली और फिर उसके मुख से छोटा सा शोला निकल कर हवा में विलीन हो गया... उसकी फुंकार की आवाज़ बराबर सुनाई दे रही थी।

‘प्रोफ़ेसर नकवी !’ पंच कबीर का गम्भीर स्वर फिर गूँजा, “पीर भोखा के कदमों के गुलाम धोखा नहीं खा सकते... अपना छद्मवेश उतार दो वरना मुझे नागराज को आज्ञा देनी पड़ेगी।’

नकवी को विवश हो कर अपने चेहरे से झिल्ली उतार देनी पड़ी—।

सलमीना चौंक कर रह गई... वह युवक पहले से ज्यादा

खूबसूरत दिखाई दे रहा था....।

“क्या नाम है तुम्हारा !”—पंच ने पूछा—।

“प्रतापी...”, “युवक ने जवाब दिया, “मैं पुलिस विभाग के सीक्रेट सर्विस का इन्स्पेक्टर हूँ ।”

“क्यों आए थे यहाँ—?”

“नीलम गढ़ी के प्रेत गोनामा के मालिक लागूना को पराजित करने—, ‘प्रतापी बोला’ ‘दो तीन महीने पहले सोमैसस को पराजित करके यहाँ से मैंने ही उसे भगाया था ।”

“भारत की सुरक्षा के लिए तुम्हें लागूना के पीछे प्रेत-वाटिका में जाना होगा जहाँ की ज़मीन का एक एक कण मौत का सन्देश-वाहक है । लागूना वहाँ अमर होने गया है और अगर उसने समस्त विधियों को पूरा कर लिया तो उसे संसार की कोई ताकत खत्म नहीं कर सकेगी ।”

‘पंच कबीर !’ प्रतापी बड़बड़ाया ।

“वह सारी दुनिया पर शैतानी हकूमत कायम करना चाहता है, उसका सबसे पहले निशाना भारत की सरज़मीन होगा ।’

“यह नहीं हो सकता....।”

“तभी तो कह रहा हूँ कि तुम्हें प्रेत-वाटिका में जाना होगा । लागूना को अमर होने से पहले उसे वही युवक पराजित कर सकता है जिसने काम देव को बस में कर रखा हो.... । लागूना के प्राण शहज़ादी चम्पात के महल के सातवें कमरे में लटके सुनहरे पिंजरे में बंद शुकराज के मायावी शरीर में हैं ।”

“शहज़ादी चम्पात कहां रहती है?”

“मैं तुम्हारे साथ चलूँगा नौजवान । मेरी बेटी को उसी शैतान ने अंगवा करवाया है, मैं उसे कभी भी अमर नहीं होने दूँगा...बाल योगी रंजन भी हमारे साथ रहेगा ।”

फिर वह सलमीना को सम्बोधित हुआ,—‘तुम भी हमारे साथ चलोगी सलमीना ! कदीसा की फनमणी तुम्हारे पास रहेगी ।’

“आपको बाल योगी रंजन मिला था क्या—?”

“हां! और अब मैं तुम्हें उससे मिलवाऊंगा—। आओ मेरे साथ ! सलमीना ! तुम भी चलो !”

कुछ ही देर के पश्चात नीलम गढ़ी के ऊबड़ खाबड़ रास्ते पर पंच कंबीर बाल योगी रंजन के ठिकाने की ओर बढ़ा जा रहा था... प्रतापी और सलमीना उसका अनुकरण कर रहे थे... । तीनों खामोश थे और अपने २ विचार लोक में विचरते हुए आगे बढ़े जा रहे थे—।

— — (२) — —

नकारे पर थाप पड़ी और फिर साज बज उठे...

हाल का सौन्दर्य देख कर ऐसा दिखाई देता था जैसे स्वर्ग का कोई भाग धरती पर उतर आया है ।

नीलम गढ़ी की मलिका कोलम्पा शहर के काम-उत्सव में कार्यक्रम के अनुसार स्वयं सम्मिलित हुई थी—।

बहुत ही ज्यादा खुबसूरत मंच पर अति आकर्षक युवती कोलम्पा विराजमान थी—उसके शरीर पर शादार शृंगार कर रखा था—उसके सारे शरीर को विभिन्न विधियों से सजाया गया था—।

वह नग्न नहीं थी— और न ही उस स्वर्गिक हाल में बैठे बीसियों स्त्री पुरुष नग्न थे पर कार्यक्रम के अनुसार जब दूसरे मंच पर थोड़ी ही देर में होने वाला विलास नृत्य चरमोत्कर्ष तक पहुंचना था तो किंगारा के नशे में धुत्त सभी स्त्री पुरुषों को नग्न हो जाना था... कोलम्पा का भी निरवस्त्र हो जाने की

घोषणा कर दी गई थी—

प्रोग्राम यह था कि एक घंटा तक विलास नृत्य चलना था और फिर मलिका कोलम्पा के सामने पड़े खाली स्थान पर सभी लोगों को एकत्रित होना था... और उन जन्मजात नग्न स्त्री पुरुषों में मलिका द्वारा दस युवतियों और इतनी ही संख्या में दस युवकों को चुना जाना था जिन्हें शेष सभी व्यक्तियों की उपस्थिति में पूरी निर्लजता से रति क्रीड़ा का प्रदर्शन करना था...

फिर उन बीस निर्लज व्यक्तियों में जो युवती अतृप्त रह जाती... उसे अन्य युवक को निमंत्रण देना था और जो युवक अतृप्त रह जाता, उसे शेष बचे लोगों में किसी भी युवती के चुनाव का अधिकार होता... इस प्रकार जो युवती ऐसे घनीने वातावरण में अपनी निर्लजता, संकोचहीनता और चरित्रहीनता का प्रदर्शन करने में सफल हो जाती, उसे कोसम्बी की पदवी मिलनी थी... और ऐसे ही युवक को कोसम्बा कहा जाना था...

यह शैतानी चाल उस दानवी षडयंत्र का एक भाग थी जिसके आधार पर एक शत्रु देश लागूना के शैतानी शिष्यों द्वारा नई पीढ़ी को विलासी और चरित्रहीन बना कर भारतीय संस्कृति को पवित्र गारिमा को रसातल तक पहुंचा देने का स्वप्न देख रहा था...

प्रतापी दृढ़ संकल्प था कि वह उस षडयंत्र को तार २ कर देगा—। वह नीलम गढ़ी से बाल योगी रंजन के साथ शहर में आया था और दोनों ने अपने २ काम सम्भाल लिए थे...। हैड क्वार्टर से आदेश मिलने पर कृपाल ने प्रतापी को केस की जिम्मेदारी सौंप दी थी।

विलास-नृत्य का कार्यक्रम आरम्भ हो गया था...भीतर कामुकता और शराब का नशा बढ़ता जा रहा था...

बाहर एक विशेष स्थान पर प्रतापी और कृपाल सामने दीवार पर लगी स्क्रीन पर भीतर का नग्न दृश्य देख रहे थे...

‘हाँ’ प्रतापी !’—कृपाल बोला, “रत्नाकर, परमेन्द्र और स्वामीनाथ हमारे साथ हैं...क्रिस्टा की भी यही स्थिति है। प्रोग्राम के अनुसार हमारा सिग्नल पाने पर क्रिस्टा भीतर से दरवाजा खोल देगी और फिर तुम अकेले भीतर जाओगे—।”

प्रतापी की नज़रें स्क्रीन की तरफ थीं...कृपाल फिर बोला, ‘लेकिन प्रतापी ! मैंने सुना है कि कोलम्पा पूरी जादूगरनी है...तुम्हारे छापा मारने पर अगर उसने जादुई प्रयोग से तुम्हें नुकसान पहुँचाया तो क्या होगा ।’

‘तब मेरी लाश पड़ी होगी ।’

“नहीं प्रतापी !’

वह कृपाल की ओर मुड़ा, फिर अत्यंत ही गम्भीर स्वर में बोला, ‘रिस्क तो है ही पर फिर भी मेरे प्लान के अनुसार उम्मीद तो यही है कि वह मात खा जाएगी ।’

कृपाल कुछ समझ नहीं पा रहा था, उसे प्रतापी ने बताया, “वह अचानक मुसीबत आने पर एकदम प्रेतराज गोनामा को बुलाएगी क्योंकि ऐसे कामुक उत्सवों की सुरक्षा की जिम्मेदारी उसी पर होती है...”

‘तब तो विनाश हो जाएगा—। वह अदृश्य प्रेत तो वहाँ मौजूद सभी लोगों को समाप्त कर सकता है ।’

‘ऐसा सम्भव हो सकता है पर गोनामा वहाँ मौजूद ही नहीं होगा ।’

‘वह कहाँ जाएगा ?’

प्रतापी ने उसे जवाब नहीं दिया और उसने दूसरी स्क्रीन का बटन ऑन कर दिया...रमोला के स्लीपिंग रूम का दृश्य चमकने लगा ।

रमोला कामिल के बाजुओं में दूबकी हुई थी...उस वक्त वह परेशान दिखाई दे रही थी ।

हर रात की भांति उस रात भी प्रेतराज गोनामा अपने मायावी आकार कामिल के रूप में उसके पास मौजूद था—।

भले ही उससे प्रतापी बातचीत करके सारा प्रोग्राम तय कर चुका था किन्तु फिर भी उस प्लान को साकार रूप देने में वह घबरा रही थी...उसका साहस साथ नहीं दे रहा था । वह सहमी सी दिखाई दे रही थी...

तभी उसे ध्यान आया कि अगर वह प्रतापी के आदेशानुसार काम नहीं करेगी तो यह भ्रष्ट प्रेत उसका कभी साथ नहीं छोड़ेगा—।

उसने साहस बटोरा...फिर बोली—‘कामिल !’

‘क्या बात है—!’—उसने अपने बाजुओं का शिकंजा कसते हुए कहा ।

‘आज मैं तुम्हारा चमत्कार देखना चाहती हूँ...। तुम प्रेतराज हो और मैं मानवी !...क्या तुम मुझे मेरी इच्छा के अनुसार कुछ देर के लिए नीलम नदी की मलिका नहीं समझ सकते—।’

‘क्या मतलब है तुम्हारा—।’

‘मैं तुम्हें कुछ देर के लिए अपनी गुलामी में देखना चाहती हूँ । क्या तुम थोड़ी देर के लिए कोलम्पा की सारी जादुई ताकतें मुझे नहीं सौंप सकते—?’

‘तुम पागल तो नहीं हो गई ।’

‘ऐसा ही समझ लो गोनामा ! अगर तुम मेरी इतनी सी मामूली ख्वाहश भी पूर्ण नहीं कर सकते तो मैं समझूंगी कि तुम मुझसे प्यार का ढोंग रचाते चले आ रहे हो ।’

‘नहीं रमोला ! मैं तुम्हारी हर जिद्द पूर्ण कर सकता हूँ—।

और उसके बाद...

रमोला को ऐसे महसूस हुआ जैसे उसमें अद्वितीय शक्ति आ गई है । उसके सामने गोनामा अपनी वास्तविक शकल में खड़ा था...वह काफी भयावह था पर रमोला उससे भयभीत नहीं हो रही थी—

उधर काम उत्सव में...

सुसज्जित मंच पर बैठी मलिका कोलम्पा नग्न शरीर में थी...उसके सामने मौजूद बीस स्त्री पुरुष भी नग्न हो चुके थे...नग्न नृत्य अपनी चरम सीमा पर था...

तभी एकदम कोलम्पा को ऐसा महसूस हुआ जैसे वह एक साधारण सी औरत से अधिक कोई महत्व नहीं रखती ।

‘क्या हो गया है मुझे...?—वह बड़बड़ाई—।

इधर कमरे में प्रतापी बोला, ‘सिग्नल कर दो...। क्रिस्टा पिछवाड़ा द्वार खोल दो ।’

उसके कुछ ही देर के पश्चात प्रतापी भीतर जा पहुँचा... वह फर्श पर लेट गया और घिसटता हुआ मंच की ओर बढ़ता गया ।

स्टेज पर नग्न जवानियाँ थिरक रही थीं...हाल में बैठे बीसियों स्त्री पुरुष शराब और किंगारा के प्रभाव से जन्मजात नग्न हो चुके थे ...प्रतापी घिसटता हुआ उस मंच के पीछे जा पहुँचा...

उधर रमोला के कमरे में प्रेत गोनामा अपने मायावी रूप में खड़ा कह रहा था, 'मुझे हुक्म दो मलिका !'

'काले कुत्ते का रूप धारण करो प्रेतराज गोनामा—।'

'नहीं !'—वह जानता था कि ऐसा मायावी आकार बनाने के पश्चात उसकी अपनी शक्ति कम हो जाएगी...

'मलिका का हुक्म मानो !' रमोला की आँखें लाल हो चुकी थीं, 'वर्ना हम रुठ जाएंगी—।'

प्रेतराज गोनामा रमोला पर बुरी तरह आसक्त हो चुका था, उसके हुक्म की अवज्ञा गोनामा के बस की बात नहीं थी...

एक जोरदार धमाका हुआ और फिर जहाँ गोनामा खड़ा था...वहाँ धुआँ फैल गया...। कुछ ही देर में धुआँ साफ हुआ तो वहाँ मायावी कुत्ता खड़ा था...

हा ! हा ! हा...तभी द्वार खुला और बाल योगी रंजन भीतर प्रविष्ट हो गया...प्लान के अनुसार वह बाहर खड़ा था और ठीक वक्त पर आ पहुँचा था—।

काले कुत्ते ने रंजन को देखा तो मानवीय स्वर में बोल पड़ा,—मुझे आजाद कर दो मलिका !

वह रमोला की तरफ भागा पर तभी रंजन का हाथ बढ़ा और उसके हाथ से शोले निकल कर काले कुत्ते पर जा पड़े...

गोनामा का मायावी आकार काला कुत्ता लपटों में घिर गया...वह तेजी से रमोला के पास पहुँचा और उस पर सवार हो गया ।

तभी एक जोरदार धमाका हुआ—गोनामा का मायावी आकार जल कर राख हो गया पर रमोला भी नहीं बची...वह

भी जल गई....।

रंजन के लिए रमोला का जल कर मर जाना दुखदायी था पर वह विवश था....अगर रमोला भाग निकलती तो सम्भवतः वह बच जाती ।

उसके सामने दो लाशें पड़ी थीं....।

‘जय भूतनाथ !’—उसने आंखें बन्द कर लीं....और प्रज्ञ चक्षु से काम उत्सव को देखने लगा ।

वह आंखें बन्द किया खड़ा रहा....उसके मांसल नेत्र बन्द थे—प्रज्ञ चक्षु खुले थे और कल्पना में वह इस घरती से ऊपर ही ऊपर उठा जा रहा था ।

उधर काम उत्सव में प्रतापी के प्रयत्न सफल हो गए थे तथा शैतान की दुल्हन तक जा पहुँचा और उसके आकर्षक मंच के पीछे छिप गया....। उसे अपनी योजना के शेष भाग की पूर्ति की प्रतीक्षा थी....।

निःसन्देह कोलम्पा स्वयं को एक साधारण सी स्त्री समझ रही थी....उसकी भीतरी शक्तियों का ह्रास हो चुका था और वह उसका कारण नहीं समझ पा रही थी....।

उसने आंखें उठा कर सामने मंच की ओर देखा....दानवता का निर्लज एवं नग्न दृश्य बराबर दिखाई दे रहा था....।

पर उस समय उस ओर ध्यान नहीं था....वह अपनी अतिशक्ति के हरण हो जाने का कारण समझने में विलीन थी....वह अत्यन्त ही चिन्तित हो गई थी ।

उसने अपनी जादुई शक्ति को बटोरने का प्रयास किया किन्तु वह सफल नहीं हो सकी—।

भी जल गई....।

रंजन के लिए रमोला का जल कर मर जाना दुखदायी था पर वह विवश था....अगर रमोला भाग निकलती तो सम्भवतः वह बच जाती ।

उसके सामने दो लाशें पड़ी थीं....।

‘जय भूतनाथ !’—उसने आंखें बन्द कर लीं....और प्रज्ञ चक्षु से काम उत्सव को देखने लगा ।

वह आंखें बन्द किया खड़ा रहा....उसके मांसल नेत्र बन्द थे—प्रज्ञ चक्षु खुले थे और कल्पना में वह इस धरती से ऊपर ही ऊपर उठा जा रहा था ।

उधर काम उत्सव में प्रतापी के प्रयत्न सफल हो गए थे तथा शैतान की दुल्हन तक जा पहुँचा और उसके आकर्षक मंच के पीछे छिप गया....। उसे अपनी योजना के शेष भाग की पूर्ति की प्रतीक्षा थी....।

निःसन्देह कोलम्पा स्वयं को एक साधारण सी स्त्री समझ रही थी....उसकी भीतरी शक्तियों का ह्रास हो चुका था और वह उसका कारण नहीं समझ पा रही थी....।

उसने आंखें उठा कर सामने मंच की ओर देखा....दानवता का निर्लज एवं नग्न दृश्य बराबर दिखाई दे रहा था....।

पर उस समय उस ओर ध्यान नहीं था....वह अपनी अतिशक्ति के हरण हो जाने का कारण समझने में विलीन थी....वह अत्यन्त ही चिन्तित हो गई थी ।

उसने अपनी जादुई शक्ति को बटोरने का प्रयास किया किन्तु वह सफल नहीं हो सकी—।

उसके जादू का वास्तविक आधार कामुकता का अवलम्ब था और इस वक्त चिन्ता में उसकी कामुक भावनाएं हरण हो चुकी थीं...

उसने इधर-उधर प्रेतराज गोनामा के अदृश्य रूप को अपने भीतरी चक्षु से देखने का प्रयास किया और वह घबरा गई... उसे गोनामा कहीं नजर नहीं आया...

“प्रेतराज गोनामा !”—वह बड़बड़ाई—, “कहां हो तुम...?”

पर उसके हाथ निराशा ही आई। उसे कहीं भी प्रेतराज गोनामा नजर नहीं आया... वह घबरा गई और अशान्ति से उठ खड़ी हुई...

वह क्या जानती थी कि प्रेतराज गोनामा काम के वश में आ कर अपना अस्तित्व ही खो बैठा है और उस वक्त तक वह बालयोगी के आध्यात्मिक जादू के प्रभाव से जल कर राख बन चुका है...

वह खड़ी चारों ओर देख रही थी... नग्न नृत्य बराबर थिरक रहा था... निर्लज दम्पतियां किंगारा के प्रभाव से अति कामुक हो चुकी थीं पर उसे कहीं प्रेतराज गोनामा नजर नहीं आ रहा था—।

“प्रेतराज...!” —वह जोर से चिल्लाई—, “कहां हो तुम...?”

उसी वक्त वातावरण में हड़बड़ाहट सी फैल गई... नग्न नर्तकियों के छनछनाते हुए पायल खामोश हो गए... वहां उपस्थित जवानियों का नशा हिरण होने लगा...

प्रतापी को इसी अवसर की प्रतीक्षा थी...

“कहां हो तुम प्रेतराज गोनामा !”—वह पुनः

चिल्लाई—।

तभी प्रतापी ने उसे पीछे से पूरी ताकत से धक्का दिया... वह मंच से लड़खड़ाती हुई फर्श पर ओंधे मुंह जा गिरी...

हॉल में शोर मच गया...तभी कहीं से आवाज आई, “कोई भी भागने का प्रयास न करे...इस कक्ष को पुलिस ने घेर रखा है।”

प्रतापी का हाल में मौजूद व्यक्तियों की ओर ध्यान नहीं था...उस का सारा ध्यान कोलम्पा की ओर था।

वह जानता था कि अगर एक बार शंतान की दुल्हन उसके हाथ से निकल गई तो उसे बस में करना मुश्किल हो जाएगा।

प्रेतराज गोनामा की सुरक्षा न होने पर भी यदि कोलम्पा चिन्ता मुक्त होकर कामुका सी बनी अपनी जादूई शक्ति को बटोरने में सफल हो जाती तो निश्चित ही वह पराजित नहीं हो सकती थी...प्रतापी उसे ऐसा अवसर नहीं देना चाहता था।

वह जन्मजात नग्न थी...प्रतापी को संकोच अवश्य था पर अब उसने स्वयं पर नियंत्रण कर लिया था और वह उसे नारी जाति का कलंक समझ रहा था...

उसने पूरी ताकत से कोलम्पा की बाईं आंख पर मुक्का दे मारा...फिर दाईं आंख पर भी वैसा ही भर-पूर वार हुआ...दोनों आंखों से खून की धाराएं वह निकलीं और हॉल में तड़पते हुए शोर में उसकी चीखें दब कर रह गईं—।

कोलम्पा की आंखों की ज्योति का ह्रास हो चुका था... प्रतापी तब भी संतुष्ट नहीं था...। उसे जादू की पूरी विधियों का पूरा परिचय तो नहीं था किन्तु वह उसके बाजुओं की शक्ति भी समाप्त कर देना चाहता था...

वह उस वक्त काफी निर्मम हो चुका था—। अपने देश के

शत्रु की प्रमुख शिष्या के प्रति उसका निर्मम हो जाना स्वाभाविक ही था... उसने कोलम्पा के दोनों बाजुओं को बेकार कर दिया... तब तक वह बेहोश हो चुकी थी...

प्रतापी कुछ देर तक उसे घूरता रहा... फिर उसे उन चरित्रहीन जवानियों का ध्यान आ गया जिन्हें पुलिस जकड़ रही थी...

उसने इन्स्पेक्टर कृपाल को बुला कर कहा, "इन सभी लोगों को जमानत पर रात को ही रिहा करवा देना कृपाल ! कल समाचार पत्रों में किसी का नाम नहीं आना चाहिए... सभी शरीफ घराने के लोग हैं और भटक गए हैं । ऐसा न हो कि इनकी इज्जत मिट्टी में मिल जाए—। कोलम्पा को हस्पताल भेज देना ।"

वह जवाब के लिए नहीं रुका और बाहर की ओर चल दिया..., उस समय उसका मस्तिष्क अनगणित तूफानों का बोझ सम्भाले हुए था—। उसकी भावना शक्ति पंख लगाए आकाश की ओर उड़ती चली जा रही थी...

कई दिन के बाद.....

हिमालय की गुफाओं में अपने पत्थरीले अधिवास पर बालयोगी रंजन सीमेंसस पर टकटिकी बांधे खड़ा था... उसका चेहरा तमतमा रहा था... उसकी आंखों में सागर की सी गम्भीरता थी—।

सीमेंसस शैतान की दुल्हन नहीं बनी थी... डगलस ने उसे ऐसी दवाई खिला दी थी जिससे उसका जीवन अजीर्ण हो गया था ।

वह डगलस पर हंटरों के वार कर उसकी दवाई का तोड़ जानने का प्रयास करती रही पर सफल नहीं हो सकी ।

वह बालयोगी रंजन से प्रतिशोध चाहती थी पर उसका दुर्भाग्य...

वह उसी रंजन से पराजित हो गई... और अब वह झुंझ-लाई सी अपने पूर्व प्रेमी को देख रही थी—।

“तुम मेरोगे—, ‘वह पुनः झुंझला कर बोली, ‘तुमने मुझसे बेवफाई की और मेरी जिन्दगी बरबाद कर दी—।”

“सोमेंसस !”—रंजन का गम्भीर स्वर सुनाई दिया, “इस वक्त डगलस मेरी मुट्ठी में है... अगर मैं चाहूँ तो उसकी दवाई का तोड़ तुम्हें बता सकता हूँ पर मैं नहीं बताऊँगा ।”

“तुम्हारे मुंह में खाक !—‘वह जैसे जीवन का मोह छोड़ बैठी,—‘मैंने जितने हंटर डगलस की पीठ पर मारे हैं, उससे पचास गुना ज्यादा हंटर तुम्हें माहूँगी ।”

“बेवकूफ न बनो सोमेंसस ! भारतीय जादू का महत्व पहचानो । अपने आपको नीलम गढ़ी की मलिका कहलाने वाली शैतान की दुल्हन कोलम्पा के अंजाम का ध्यान करो... वह जेल में तड़प २ कर खत्म हो गई...।”

“मैं कोलम्पा नहीं हूँ... वह कायर थी... बेवकूफ थी...।”

“अजीम जादूगर लागूना में इतनी ताकत ही नहीं रही कि वह भारत की धरती पर रह सकता ।”—उसके स्वर में व्यंग्य था ।

‘वह अमर होने गया है... वह एक बार फिर आएगा बालयोगी ! तुम सभी को जला कर राख कर देगा ।’

“दाईं तरफ देखो सोमेंसस !”—बालयोगी ने उधर पड़े एक पुतले की ओर संकेत किया, ‘यह प्रेतराज गोनामा की राख का पुतला है और यही मायावी पुतला शैतान लागूना की साधना को भंग कर देगा ।”

“तुम पागल हो—?”

“उर्वशी !”—उसने मायावी कोकिला को आवाज दी—

“मेरे पास आओ !”

तभी दूसरे कमरे से कोयल के पंखे फड़फड़ाए... फिर वह

मायावी कोयल उड़ती हुई उसके पास आन बैठी....।

“सुन रही हो उर्वशी !” — बालयोगी व्यंग्यात्मक स्वर में बोला, “सोमेंसस को मैं पागल नजर आ रहा हूँ... उसकी आँखों की ज्योति काफी तेज है उर्वशी ।”

“नहीं !” — सोमेंसस दो कदम पीछे हट गई...। वह रंजन के व्यंग्य वाण को समझ चुकी थी...।

पर... उसके पीछे हटने से वह रंजन के व्यंग्य-आदेश से बच तो नहीं पाई—मायावी कोकिला ने उसके चेहरे पर मण्डराना शुरू कर दिया ।

“नहीं बालयोगी ! कोयल को पीछे हट जाने का हुक्म दे दो—, “वह दर्दनाक आवाज में चीखती चली गई, “यह मुझे अन्धा बना देगी ।”

“पीछे हट जाओ उर्वशी !”... रंजन ने आदेश दिया, “सोमेंसस अन्धी नहीं होना चाहती... उसे मौत से डर लगता है ।”

कोकिला वापस चली गई... सोमेंसस के चेहरे का रंग उड़ गया और उसके हृदय की धड़कन तेज हो गई—।

उधर नीलम गढ़ी में...

पंच कबीर ने अपने हाथ की लाठी की ओर देखा... फिर बोल उठा, “नागराज !”

उसके हाथ की लाठी के ऊपरी भाग पर लकड़ी का सांप बना हुआ था... पंच कबीर की आवाज सुन कर लकड़ी के सर्प में प्राण पड़ गए ।

“फनमणी उदास है नागराज !” — “वह व्यथित स्वर में बोला, “मेरी बेटी के लिए फनमणी उदास हो गई है... उसे तसल्ली दो नागराज ! मैं उसे जल्द अपनी बेटी के पास ले जाऊंगा—।”

पंच कबीर स्वयं काफी उदास था... उसे अपनी बेटी की याद सता रही थी ।

नागराज लाठी से नीचे उतरा... उसका रंग एकदम लाल था और उस पर रोपहरी रेखायें चित्रित थीं...

वह रींगता हुआ उस टोकरी के पास पहुँचा जिसमें फनमणी बन्द पड़ी थी...

‘वापस आ जाओ नागराज !’ — पंच कबीर का कण्ठ भर आया था, ‘मैं फनमणी का तड़पता हुआ शरीर नहीं देख सकूँगा... वह मेरी बेटी के वियोग में सचमुच तड़प रही होगी...’

ठीक उस वक्त...

सलमीना अपने कमरे में झूल रही थी... उसके बाल खुले थे..., उसका सिर तेजी से इधर उधर झूल रहा था ।

वह झूलती रही... झूलती ही रही... उसके शरीर का अंग अंग थिरक रहा था... उसके कपड़े अस्त व्यस्त हो चुके थे, उसे अपना होश नहीं था ।

मायावी मैना बाकवी का पिंजरा सामने लटक रहा था... वह उसे बराबर देख रही थी... पिछले एक घंटा से सलमीना उसी प्रकार बावरी सी धनी झूल रही थी...

आखिर बाकवी रुक नहीं सकी... मानवीय स्वर में बोल उठी—‘सलमीना !’

सलमीना ने जैसे उसका स्वर सुना ही नहीं था... वह बराबर झूलती चली गई... उसके बाल कभी दाएं उड़ते और कभी बाएं... वह थकी हुई भी नजर नहीं आ रही थी ।

पिंजरे में बन्द मायावी मैना ने एक बार फिर उसे पुकारा—

‘सलमीना ! क्या हो गया है तुम्हें...?’

तब भी उसके झूलने का क्रम नहीं रुका—उसने बराबर अपने सिर की चेष्टाएं बनाए रखीं—

बाकवी को उस पर दया सी आने लगी—उसे एक योजना सूझी—उसने मानवीय स्वर में एक जोरदार चीख मारी—

वातावरण गुंजरित हो उठा—

‘कौन—?’—सहसा सलमीना चौंक उठी—उसके सीस का क्रम रुक गया, उसने हड़बड़ा कर आंखें खोल दीं—

‘कौन था बाकवी !’—उसका चेहरा क्रोध से लाल हो उठा, ‘‘मैं पूछती हूँ कि यह चीख की आवाज़ किसकी थी...।’

‘‘मेरी आवाज़ थी सलमीना ! मैं तुम्हें इस हालत में नहीं देख सकी और तुम्हें सतर्क करने के लिए चीख पड़ी...।’

‘नीच !’...उसने दांत पीस लिए...‘मैं प्रेतों की बस्ती में कदीसा की तलाश कर रही थी...तुमने मेरी साधना भंग कर दी...! तुम कमीनी हो, मैं तुम्हें आग लगा दूंगी ।’

‘नहीं सलमीना ! नहीं ! मैं तुम्हारी गुलाम हूँ ।’

‘तुम्हीं सारी मुसीबतों का कारण हो कमीनी बाकवी ! अगर तुम कोलम्पा के साथ मेरी प्रतियोगिता के अवसर पर गायब न हो जाती तो मैं पराजित नहीं होती ।’

‘मैं माफी चाहती हूँ सलमीना !’

‘मैं प्रेत बाटिका में जाऊंगी तो तुम्हारी राख अपने साथ ले कर जाऊंगी...तुम जलोगी...तुम्हारी राख...’

‘नहीं ! नहीं !!’ मायावी मैना का मानवीय स्वर कप-कपा गया...।

पर...? पर सलमीना ने उसे माँफ नहीं किया...उसने हाथ को पूरी ताकत से झटका देकर अपना बाजू आगे बढ़ा दिया । उसके हाथ से शोले निकले और फिर मायावी मैना शोलों में घिर गई...।

वातावरण में नारी कण्ठ की चीखें गूँज उठीं...और फिर जोर से एक धमाका हुआ...आग के शोले हवा में उड़ गए...बाकवी मैना की राख फर्श पर बिखर गई और वातावरण में मौत का सा सन्नाटा छा गया...।

— समाप्त —

एस० एन० कँवल कृत ‘शैतान की दुल्हन’ और ‘नीलम गढ़ी के प्रेत’ का तृतीय व अन्तिम भाग ‘प्रेत सुन्दरी’ होगा । मूल्य २.००

शक्ति पाकेट बुक्स

की अनमोल भेंट

१. सुनसान हवेली २. प्रेतात्मा ३. तीसरी आंख ४. माया महल ५. पाप की छाया ६. यौवन का कलंक ७. सागर मठ का रहस्य ८. पाताल के वासी ९. हत्या एक छाया की १०. शैतान की आत्मा ११. वह जुआरी था ? १२. आखिरी कतल १३. अंधेरे की मलिका १४. जादूगरनी १५. मौत की आंखें १६. वेश्या की बेटी १७. वक्त की आवाज १८. अज्ञात अपराधी १९. मौत का भरना २०. एक गुनाह और सही २१. शतरंज का मुहरा २२. मिड नाइट क्लब २३. मौत का महल २४. खून और आजादी २५. विश्वास की हत्या २६. कठपुतली २७. शैतान की साथी २८. चन्द्रहार की रहस्य २९. भटकती आत्मा (विश्व प्रसिद्ध फ्रेंच उपन्यास का हिन्दी स्वान्तर ।)

हत्या एक छाया की, तीसरी आंख, भटकती आत्मा, विश्वास की हत्या का मूल्य ३.०० रु, खून और आजादी का मूल्य ४.०० रु और शेष पाकेट बुक्स का मूल्य २.०० प्रति कापी है।

एस० एन० कंवल

की जादुई लेखनी द्वारा लिखित अनूठी पाकेट बुक्स जो जासूसी, रहस्य, रोमांच तथा रोमांस से परिपूर्ण हैं । बढ़िया कागज, बहुरंगा हाफटोन टाइटल, शानदार साज सज्जा एवं गेटअप, आज ही आर्डर भेजिए ।

नव शक्ति प्रकाशन

ए-११४, सुभद्रा कालोनी,

सराय रोहेल्ला, दिल्ली-७